कक्षा XI - XII

मगही बेआकरन आउ रचना

मगही बेआकरन आउ रचना

(वर्ग 11 आउ 12 ला)



(राज्य शिक्षा शोध आउ प्रशिक्षण परिषद्, बिहार द्वारा विकसित)

बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पटना

शिक्षा विभाग, बिहार सरकार द्वारा स्वीकृत ।

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार, पटना के सौजन्य से सम्पूर्ण बिहार राज्य के निमित्त ।

प्रथम संस्करण : 2012-13

मूल्य : रु० 34.00

बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पाठ्य पुस्तक भवन, बुद्ध मार्ग, पटना-800001 द्वारा प्रकाशित तथा **अग्रवाल इन्टरप्राईजेज**, मीठापुर, पटना-800001 द्वारा एच.पी.सी. के 70 जी.एस.एम. क्रीम वोभ (वाटर मार्क) टेक्स्ट पेपर पर **5,000** प्रतियाँ 24X18 से.मी. साईज में मुद्रित ।

मगही बेआकरन आउ रचना

(वर्ग 11 आउ 12 ला)



(राज्य शिक्षा शोध आउ प्रशिक्षण परिषद्, बिहार द्वारा विकसित)

बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पटना

शिक्षा विभाग, बिहार सरकार द्वारा स्वीकृत ।

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार, पटना के सौजन्य से सम्पूर्ण बिहार राज्य के निमित्त ।

प्रथम संस्करण : **2012-13**

मूल्य : रु० 34.00

बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पाठ्य पुस्तक भवन, बुद्ध मार्ग, पटना-800001 द्वारा प्रकाशित तथा **अग्रवाल इन्टरप्राईजेज**, मीठापुर, पटना-800001 द्वारा एच.पी.सी. के 70 जी.एस.एम. क्रीम वोभ (वाटर मार्क) टेक्स्ट पेपर पर **5,000** प्रतियाँ 24X18 से.मी. साईज में मुद्रित ।

प्राक्कथन

सिच्छा विभाग, बिहार सरकार के निरनय के अनुसार जुलाई 2007 से राज्य के उच्च माध्यमिक कक्षा (कक्षा–XI–XII) लागी नया पाठ्यक्रम के लागू करल गेल हे। भासायी पुस्तक के नया पाठ्यक्रम के आलोक में एस.सी.ई.आर.टी., पटना द्वारा **"मगही बेआकरन आउ रचना"** किताब विकसित आउ बिहार राज्य पाठ्य-पुस्तक प्रकाशन निगम द्वारा आवरण डिजाईनिंग कर मुद्रित करल गेल हे। एकरा बिहार राज्य में पाठ्य-पुस्तक के रूप में स्वीकार करल गेल हे। ई किताब ओही अनुक्रमणिका के एगो कड़ी हे।

बिहार राज्य में विद्यालीय सिच्छा (कक्षा-I-XII) के गुणवत्तापूर्ण ससक्तिकरण के निमित्त कृतसंकल्पित आउ सिच्छा के समर्थ योजनाकार माननीय मुख्य मंत्री, श्री नीतीश कुमार, सिच्छा मंत्री, श्री पी० के० शाही आउ सिच्छा विभाग के प्रधान सचिव, श्री अंजनी कुमार सिंह के मार्ग निर्देसन के प्रति हम कृतज्ञ ही ।

हमरा आसा हे कि ई किताब राज्य के वर्त्तमान आउ भावी पीढ़ी लागी ज्ञानोपयोगी साबित होवत, एस.सी.ई.आर.टी. के निदेसक के हम अभारी ही, जिनकर अगुवाई में ई किताब के विकसित करल गेल हे।

हमरा आसा ही न बलुक पूर्ण विस्वास हे कि ई किताब ज्ञानवर्धक, ज्ञानोपयोगी आउ उपलब्धि स्तर के बढ़ोतरी में सहायक साबित होवत। ई तो बात हइए हे कि संवर्धन आउ परिस्करण के सम्भावना हमेसा भविस्य के गोद में सुरच्छित रहऽ हे तइयो परकासन आउ मुद्रन में लगातार अभिवृद्धि करे के प्रति समर्पित बिहार राज्य पुस्तक परकाशन निगम छात्र, अभिभावक, सिच्छक, सिच्छाविद के टिप्पणी आउ सुझाव के हमेसा स्वागत करत जेकरा से बिहार राज्य के देस के सिच्छा जगत में उच्चतम स्थान दिलावे में हम्मर परयास सहायक सिद्ध हो सके।

जे० के० पी० सिंह, भा०रे०का०से०
प्रबंध निदेशक
बिहार राज्य पाठ्य-पुस्तक प्रकाशन निगम लि०

दिशा बोध

डॉ. हसन वारिस, निदेशक, (प्रभारी) राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार, पटना

श्री रघुवंश कुमार, निदेशक (शैक्षणिक) बिहार विद्यालय परीक्षा समिति (उच्च माध्यमिक) पटना

डॉ० सैयद अब्दुल मुईन, विभागाध्यक्ष, अध्यापक शिक्षा विभाग, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, पटना

श्री कासिम खुर्शीद, विभागाध्यक्ष (प्रभारी) भाषा विभाग, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, पटना

पाठ्य पुस्तक विकास समिति के सदस्य:

अध्यक्ष : **डॉ० सम्पत्ति अर्याणी,** भूतपूर्व रीडर स्नाकोत्तर, हिन्दी विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना

समन्वयक : **प्रो० दिलीप कुमार,** अध्यक्ष, मगही विभाग, पी.एन.के. कॉलेज, अछुआ, पालीगंज, पटना

सदस्य : **प्रो० अवधेश कुमार सिन्हा,** अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, रामलखन सिंह यादव कॉलेज, पालीगंज, पटना

पवन तनय, एम.ए.(मगही) सहसंपादक, अलका मागधी, पाटलि

चन्द्रावती चंदन, एम.ए. (इतिहास, मगही), गौतम बुद्ध नगर, गोढ़ना रोड, पावरगंज, अनाईठ, आरा (भोजपुर)

समीक्षा समिति के सदस्य :

प्रो० तृप्तिनारायण शर्मा, सेवा निवृत्त, प्राचार्य, मालतीधारी कॉलेज, नौबतपुर, पटना
अन्तरा, राजेन्द्र नगर, रोड नं०-1, पटना

प्रो० रामनाथ शर्मा, सेवा निवृत्त, विश्वविद्यालय प्राध्यापक एवं हिन्दी विभागाध्यक्ष, स्नातक व स्नातकोत्तर, जी०जे० कॉलेज, राम बाग, बिहटा, इन्द्रायण, अमहरा, बिहटा, पटना

श्री घमण्डी राम, सेवा निवृत्त, बिहार शिक्षा सेवा, बल्लमीचक, अनिसाबाद, पटना

अकादमिक सहयोग :

डॉ० सुरेन्द्र कुमार, व्याख्याता, भाषा विभाग, एस. सी. ई. आर. टी., बिहार, पटना

श्री इम्तियाज आलम, व्याख्याता, भाषा विभाग, एस. सी. ई. आर. टी., पटना

डॉ० अर्चना, भाषा विभाग, व्याख्याता, एस. सी. ई. आर. टी., महेन्द्रू, पटना

डॉ० स्नेहाशीष दास, व्याख्याता, भाषा विभाग, एस. सी. ई. आर. टी., महेन्द्रू, पटना

श्रीमती वीर कुमारी कुजूर, व्याख्याता, भाषा विभाग, एस. सी. ई. आर. टी., महेन्द्रू, पटना

अकादमिक संयोजक, पाठ्यक्रम आउ पाठ्य पुस्तक विकास समिति

श्री ज्ञानदेवमणि त्रिपाठी, राज्य शैक्षिक प्रबंधन एवं प्रशिक्षण संस्थान (सीमैट)
एस० सी० ई० आर० टी०, महेन्द्रू, पटना

प्रस्तावना

मगही भासा के इतिहास बड़ा पुरान आउ गौरवसाली रहल हे। मगध साम्राज्य के इतिहास भारत के इतिहास से हटा देला पर भारत के इतिहास छूछ लगे लगऽ हे। मगध साम्राज्य के राजभासा, राष्ट्रभासा आउ सम्पर्क भासा एही मगही हल।

चौरासी सिद्ध से लेके नाथ सम्प्रदाय के लोग एही भासा के परयोग कैलन हल। गौतम बुद्ध के ग्यान प्राप्ति बोधगया में भेल। बोधगया के बोली इया भासा मगही हे।

भगवान बुद्ध धर्म प्रचार के माध्यम एही मगही के बनौलन। जहाँ-जहाँ बौद्ध धर्म गेल साथे साथ मगही भी गेल। सम्राट अशोक बौद्ध धर्म के प्रचार ला अप्पन बेटा कुणाल आउ बेटी संघमित्रा के लंका भेजलन। चीन, जापान, श्याम, थाइलैंड, बर्मा, लंका, नेपाल, मौरीसस, सुरीनाम, फिजी, ट्रिनीनाड, लकाद्वीप में आज भी मगही भासा, मगध संस्कीरती के इतिहास आउ छाप मिलऽ हे।

ई ठीक हे कि आज मगही के छेत्र सिमट गेल हे। सोनभद्र के पूरब मुंगेर, राँची आउ गंगा के दच्छिन पटना, गया, नालन्दा, नवादा, औरंगाबाद, जहानाबाद, धनबाद, हजारीबाग, गिरीडीह, बोकारो, सिंहभूम, मानभूम तक ई मगही भासा फैलल हे। हँ, एकर रूप दूरी आउ छेत्र के मोताबिक बदलल हे। भागलपुर में अंगिका, वैशाली छेत्र में बज्जिका आउ झारखण्ड के कुछ इलाका में खोट्टा आउ नागपुरिया के रूप में जानल जा हे। मगही देस के गंगा-जमुनी के संस्कीरती हे जेकरा बारे में महान बेआकरनाचार्य के कहनाम हे :

''सा मागधी मूल भाषा नराया आदि कप्पिका।

ब्रह्मण चस्सुतालापा सम्बुद्ध चापि भासि रे ।।''

चूलवंश में मागधीये के मूल भाषा कहल गेल हे :

''सब्बेसां मूलभाषाय मागधाय निरुत्तिया''

एही तरी प्राचीन रूप से आज तक मगही के नाम कइसे बदलइत आयल हे नीचे ओकरा देल जाइत हे। मूलमागधी–पालि–मागधी प्राकृत–मागधी अपभ्रंश–मागधी–मगही।

मा से म ग से ग धी से ही = मगही

पहिले के मगही आउ आज के मगही लिखे आउ उच्चारन में अन्तर देखल जाइत हे। पहिले मगही के लिपि कैथी हल जेकर बरनन इहाँ देल जाइत हे।

पहिले 'मगही' सिरिफ देवनागरी लिपि में न कैथी लिपि में भी लिखल जा हल। कैथी कायस्थ शब्द से बिकसित होल हे। पहिले हर-हिसाब आउ खाता-खतियान के जिम्मा कायथे लोग सम्हारऽ हलन। बुद्धि आउ ग्यान से भरल अनेक लोग कैथी जानऽ हलन।

अ आ इ ई उ ऊ ए ऐ ओ औ

क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ

ट ठ ड ढ ण त थ द ध न

प फ ब भ म य र ल व

श ष स ह

आज मगही के लिपि हिन्दी लेखा देवनागरी लिपि हो गेल हे। **'चार कोस पर पानी बदले आठ कोस पर बानी'**। ओही हाल मगही के साथ भी हे। पढ़ल लिखल बिदमान लोग तत्सम सबद के परयोग जादे करऽ हथ जबकि गाँव-देहात के निपढ़ भाई-बहिन लोग जे बोलऽ हथ ओही लिखऽ हथ। मगही बेआकरन लिखे के पहिले एगो बड़हन समस्या सामने आ के ठार हो गेल :

''हिन्दी के हू बहू सबद लेवल जाव इया उच्चारन के अनुसार सबद लिखल जाव?''

इहाँ कोरसिस कैल गेल हे कि जउन सबद के उच्चारन जइसे होवऽ हे ओइसहीं ओकरा लिखल जाव। फिर भी हिन्दी के कुछ सबद के ज्यों के त्यों लेवे पड़ल हे जे पाठ्य पुस्तक विकास सिमिति के लचारी हे।

मगही के उच्चारन आउ लिखावट में एकरूपता न पावल जाय। जइसे :

जर्मनी, जरमनी

धर्म, धरम

संज्ञा, संग्या, संगेया, संगेआ

कर्म, करम

उच्चारण, उच्चारन

अर्थ, अरथ

वन, बन

शब्द, सब्द, सबद

ज्ञान, ग्यान, गेयान, गेआन

कोशिश, कोसिस, कोरसिस

प्रमुख, परमुख, प्रकार, परकार

युद्ध, जुद्ध, जुध

यज्ञ, यग्य, जग्य, जग्ग

प्रगट, परगट, परघट

दोष, दोस	प्रणाम, परनाम, प्रनाम
वृक्ष, बिरिछ,	छः, छह, छव, छौ
कैल, कयल, कएल	खइली, खैलियो, खा लेलियो

इहाँ बेआकरन लिखे में बर्तनी के उच्चारन दोस से मुक्त करे के कोरसिस कैल गेल हे। फिर भी मानकीकरन के समस्या मौजूद रहत।

श्री भुवनेश्वर शर्मा के सबदकोस में कुछ बरन के हटा देवल गेल हे **जइसे** : ण, श, ष,ऋ, लृ, त्र, ज्ञ, क्ष .

मगही में व के उच्चारन अधिकतर ब के रूप में होवऽ हे ओही तरह य 'ज' के रूप में । तत्सम सबद के परयोग कुछ लोग धड़ल्ले से करऽ हथ–अग्नि–अग्गिन, संस्कृत, संस्कृति, साहित्यकार, सत्य, व्यंग्य, चन्द्रमुखी आदि।

ई बेआकरन में तत्सम सबद के परयोग बहुत कम कैल गेल हे। मगही भासा के एगो बिसेसता हे कि ई कठिन तत्सम सबद के भी मगहीकरन 'मगहीनाइज', कर देवऽ हे।

जइसे : विश्लेषण–बिस्लेसन, संस्कृति-संस्कीरती ।

इहाँ सबद के मानकीकरन करे के जादे से जादे कोरसिस कैल गेल हे।

कुछ मगही बिदमान के सिकाइत हो सकऽ हे। ई लेल एगो निहोरा हे कि मगही के मानकीकरन करे में सहजोग करथ आउ मगही भासा के बेआकरन में बाँध के मगही साहित्य के एगो महत्वपूर्न गौरवसाली स्वरूप स्थापित कैल जाय।

अब तक जेतना बेआकरन लिखायल हे उहे अधार के रूप में सविकार कैल गेल हे आउ ई 'बेआकरन आउ रचना' के लिखे में ओकरा से मदद लेल गेल हे।

हिन्दी के लेखा मगही बेआकरन के पाँच भाग में बाँट के लिखल गेल हे : (1) बरन बिचार (2) सबद बिचार (3) वाक्य बिचार (4) चिह्न बिचार (5) छन्द बिचार।

आगे भी बेआकरन लिखायत जे आउ सर्बमान्य, परिबर्द्धित मानल जायत।

अभी 'मगही बेआकरन आउ रचना' के पाठ्य पुस्तक विकास समिति आउ बिसेसग्य समिति के सर्बमान्य सुझाव मान के ई तइयार कैल गेल हे। सबके कठिन परिस्रम, अध्ययन, चिन्तन आउ समरपन ला धन्यवाद देइत ही आउ निदेसक, बिभागाध्यच्छ बिभागीय प्रोफेसर आउ अकादमिक सहजोजक के प्रति आभारी ही जे मगही जइसन कठिन बिसय के पाठ्यक्रम में सामिल करके सिलेबस आउ पाठ्यक्रम के मोताबिक 'मगही बेआकरन आउ रचना' 'किताब के तइयार करे में बहुमूल्य समय देके करोड़ो मगही भासी के दिल-दिमाग में स्थान बना लेलन हे। फिन एक बार हम सबके प्रति धन्यवाद के अरघ अरपित करइत ही।

दिलीप कुमार

समन्वयक

आभार

मगही एगो मीठगर आउ रूचगर भासा हे। एकर मीठास आउ संस्कार दिल-दिमाग पर जादू लेखा छा जाहे।

ई भासा के इतिहास बड़ा पुरान हे आउ गौरवसाली भी। एक समय अइसन हल कि मगही मगध साम्राज्य के राजभासा आउ राष्ट्रभासा भी हल। साहित्य के पन्ना उलिट के देखला पर बुझा हे कि एक समय में सउँसे भारत देस आउ बिदेस में भी मगही अप्पन गौरव-गरिमा के डंका बजावऽ हल।

चौरासी सिद्ध आउ नाथ सम्प्रदाय के ई भासा बड़ी दुलारी हल। सरहपाद, से लेके नाथ सम्प्रदाय के बिचार के अदान-प्रदान के ई राजभासा हल। महात्मा गौतम बुद्ध अप्पन बौद्ध धर्म के प्रचार इहे भासा में कैलन। सम्राट अशोक तो बौद्ध धर्म के प्रचार ला अप्पन बेटा कुणाल आउ बेटी संघमित्रा के श्रीलंका तक भेजलन हल।

जहाँ-जहाँ बौद्ध धरम गेल, साथे-साथे मगही भासा भी उहाँ गेल। चीन, जापान, श्रीलंका, बर्मा, श्याम, थाइलैंड, नेपाल, मौरीसस, ट्रिनीनाड, फिजी, सूरीनाम, लकाद्वीप आदि बिदेस में आज भी ई भासा के संस्कार आउ इतिहास के छाप देखल जा सकऽ हे।

चौरासियो सिद्धन के 'सिद्ध साहित्य' नाथ सम्प्रदाय के 'नाथ साहित्य' संत कवियन के संत साहित्य, धरमदास, बदरीदास, चन्दनदास, अमरित दास, कवि हरिनाथ आदि के अलावे कबीरदास, मीरा, तुलसीदास, अमीर खुसरो के मुकरियाँ, पहेलियाँ, लोक साहित्य में लोककथा, लोकगाथा, लोकनाट्य, लोक नृत्य-गीत, जनश्रुतियाँ, पहेलियाँ, दसकूटक, परतूक, कहावत, मुहावरा आदि में मगही के प्राचीन रूप से लेके आधुनिक रूप देखज जा सकऽ हे।

समय परिवर्तनसील हे। समय परिवर्तन के साथे-साथ बहुत कुछ परिवर्तन के सिकार हो जाहे। मगही भासा भी एकरा से अछूता न रहल। सउँस आर्यावर्त

मगध साम्राज्य आउ बिदेस में अप्पन जादू के छड़ी चलावे वाली भासा आज सिमट गेल हे, सिकुड़ गेल हे।

सोन नदी से पूरूब जमुई, मुंगेर, राँची आउ गंगा नदी के दक्खिन पटना, नालन्दा, नवादा, गया, औरंगाबाद, जहानाबाद बिहार के जिला के अलावे झारखण्ड राज्य के हजारीबाग, धनबाद, गिरीडीह, बोकारो, पलामू, सिंहभूम आउ मानभूम तक एकर पाँव फैलल हे।

ई बात सविकार कैल जा हे कि **'चार कोस पर पानी बदले, आठ कोस पर बानी।'** भागलपुर छेत्र में अंगिका, वैशाली छेत्र में बज्जिका, झारखण्ड में खोट्टा, कुरमाली आउ नागपुरिया के भी स्थान मानल जा हे।

मगही एगो गंगा-जमुनी के संस्कीरती हे। ई मैथिली आउ भोजपुरी भासा अप्पन बहिन से मिल के हिन्दी के गरिमा बढ़ा रहल हे। बहुत सबद अइसन हे जे मगही, मैथिली, भोजपुरी भासा से आके हिन्दी के आँचर फैला देवऽ हे।

मगध के भूमि बिस्व-सान्ति आउ प्रेम-अहिंसा के पाठ दुनिया के पढ़ौलक हे। राजगीर के बौद्धसान्ति स्तूप आज भी बिस्व में मगध भूमि के गौरव-गान करवा रहल हे।

सरकार के ई निरनय सराहनीय हे कि बिहार के जनपदीय भासा के भी पढ़ाई करावल जांय। एही से बिहार के अधिकांस विश्वविद्यालय में बी. ए. तक मगही पढ़ावल जा रहल हे। नालन्दा खुला विश्वविद्यालय आउ बोधगया विश्वविद्यालय मगध आउ कॉलेज में मगही के पढ़ाई बी.ए., एम. ए. स्तर तक हो रहल हे।

एही क्रम में 11-12 क्लास ला एन. सी. ई आर. टी. पैटर्न पर बिहार में एस.सी.ई.आर. टी. मगही के सिलेबस आउ पाठ्यक्रम तइयार करके मगही पढ़ावे ला मगही जानकार बिदमान लोग से किताब लिखवा रहल हे।

पाटलि भाग-I (इगाहरवाँ क्लास ला) आउ पाटलि भाग-II (बारहवाँ क्लास ला) तइयार करके छात्र लोग के पढ़ावेला किताब छपवावल गेल हे।

ओही सन्दर्य में 'मगही बेआकरन आउ रचना' बेआकरन के किताब

तइयार करावल गेल। पाठ्य पुस्तक विकास समिति के सम्मानित सदस्य लोग ई किताब तइयार करके प्रस्तुत कैलन हे। बड़ी गहन अध्ययन, खोज-बीन, छानबीन आउ परिस्रम करके ई किताब तइयार कैल गेल हे।

एकरा ला पाठ्य पुस्तक विकास समिति के अध्यच्छ, समन्वयक, सदस्य आउ समीच्छा सिमति के बिदमान लोग के प्रति हम अप्पन कृतग्यता ब्यक्त कर रहली हे। ***पुस्तक निरमान में सहजोग देवे बाला*** **डॉ० सैयद अब्दुल मुईन,** विभागाध्यक्ष, अध्यापक शिक्षा विभाग, **श्री रघुवंश कुमार,** निदेशक, बिहार विद्यालय परीक्षा समिति (उच्च माध्यमिक), **श्री कासिम खुर्शीद,** विभागाध्यक्ष (प्रभारी) भाषा विभाग, ***अकादमिक सहयोग देवेबाला :*** **डॉ० सुरेन्द्र कुमार पाल,** व्याख्याता, **श्री इम्तियाज आलम,** व्याख्याता, **डॉ० अर्चना,** व्याख्याता, **डॉ० स्नेहाशिष दास,** व्याख्याता, **श्रीमती वीर कुमारी कुजुर,** व्याख्याता, ***अकादमिक संयोजक*** **श्री ज्ञानदेवमणि त्रिपाठी,** राज्य शैक्षिक प्रबंधन एवं प्रशिक्षण संस्थान (सीमैट) एस०सी०ई०आर०टी०, महेन्द्रू, पटना।

सब लोग के ध्यवाद दे रहल ही जे अप्पन निर्देसन आउ मार्गदर्सन में बड़ी मिहनत करके 'मगही बेआकरन आउ रचना' तइयार करवा के अप्पन महान करतब आउ समरपन के सराहनीय उदाहरन प्रस्तुत कैलन हे।

हसन वारिस
निदेशक
राज्य शिक्षा शोध प्रशिक्षण परिषद्
महेन्द्रू, पटना

●

मगही बेआकरन आउ रचना

बिसय-सूची

1. बरन बिचार :

2. सबद बिचार:

●

भासा लिपि आउ बेआकरन

भासा–जउन माध्यम से मनुस्य अप्पन हिरदा में उठल भाव इया बिचार के बोल इया लिख के दोसरा तक पहुँचावऽ हे, भासा कहल जा हे। संसार में लगभग अढ़ाई हजार भासा के लिखल-बोलल जा हे। एकरा में मगहियो एगो महत्वपूर्न भासा हे जे बिसाल छेत्र के लोकाभिब्यक्ति के माध्यम हे।

लिपि–भासा बोले में ध्वनि के परयोग होवऽ हे आउ लिखे में लिपि चिन्ह माने अच्छर के। ई लेल सब्भे लिखित भासा के एगो लिपि होवऽ हे।

मगही के अप्पन लिपि कैथी हे। पहिले के पोथी–पतरा आउ बही–खाता में एकरे बेवहार होवऽ हल बाकि अब हिन्दी जइसन देवनागरी लिपि के बेवहार होइत हे।

बेआकरन–ऊ सास्त्र जेकरा से भासा के सुद्ध-सुद्ध बोले, पढ़े आउ लिखे के जानकारी मिलऽ हे, बेआकरन कहल जा हे।

बे+आ+करन–बेआकरन। बेआकरन सबद के अर्थ हे–बिस्लेसन अर्थात् खंड–खंड करना। बेआकरन भासा के खंड–खंड करके ओकर सब अंग के सामने परगट करऽ हे।

स्पष्टत बेआकरन के संबंध भासा से हे। भासा वाक्य से बनऽ हे। वाक्य सबद से आउ सबद बरन इया अच्छर के मेल से बनऽ हे। एही क्रम में वाक्य में कहाँ कउन चिह्न के परयोग होवऽ हे साथ ही भासा में कउन छन्द आउ अलंकार के परयोग कैल गेल हे भासा के एही अंग के बिवेचन ला बेआकरन के मुख्य रूप से पाँच भाग में बाँट के अध्ययन कैल जा हे :

(1) बरन इया ध्वनि बिचार : बरन बिचार में भासा के बरन इया ध्वनि के उच्चारन, बर्गीकरन, लिखे के रीति आउ ओकर मेल से सबद बनावे के नियम आदि के बतावल जा हे।

(2) **सबद बिचार :** सबद बिचार में सबद के भेद, सबद रचना आउ मूल रूप के अधार पर नया रूप के निरमान के रीति बतावल जा हे।

(3) **वाक्य बिचार :** वाक्य बिचार में सबद के परस्पर संबंध आउ सबद के अधार पर वाक्यांस बनावे के नियम आदि बतावल जा हे।

(4) **चिह्न बिचार :** भासा के अर्थ बोध में सुगमता ला वाक्य में स्थान-स्थान पर कम इया अधिक समय तक ठहरे पड़ऽ हे। एही ठहराव के सूचना ला भिन्न-भिन्न चिह्न के परयोग कैल जा हे, जेकरा बिराम चिह्न कहल जा हे।

चिह्न बिचार में तरह-तरह के चिह्न के परयोग के जानकारी देल जा हे।

(5) **छन्द विचार :** छन्द केकरा कहल जा हे, भासा में छन्द से सम्बन्धित ओकर अंग आउ भेद-उपभेद, उदाहरन आदि के बतलावल जा हे।

एही तरह अलंकार केकरा कहल जा हे, अलंकार के भेद, ओकर लच्छन आउ उदाहरन देके समझावल जा हे।

ई तरह से छन्द आउ अलंकार से सम्बन्धित जानकारी छन्द बिचार में देल जा हे।

अभ्यास के प्रस्न

1. भासा के परिभासा दऽ।
2. लिपि का हे ? मगही के पुरनकी आउ नइकी लिपि के नाम बतावऽ।
3. बेआकरन केकरा कहल जा हे ? बेआकरन के केतना भाग होवऽ हे ? स्पस्ट करऽ।

●

बरन बिचार

बरनमाला : भासा के सबसे छोटहन इकाई ध्वनि होवऽ हे। मूल ध्वनि, जेकर खंड न हो सके, बरन इया अच्छर कहला हे। **जइसे :** क, ख, ग, च, छ, प आदि। बरन इया अच्छर समूह के बरनमाला कहल जा हे। बरन इया अच्छर दू प्रकार के होवऽ हे : 1. स्वर बरन 2. ब्यंजन बरन।

1. स्वर बरन : स्वर स्वतंत्र बरन हे जेकर उच्चारन बिना कउनो दोसर बरन के सहायता के कैल जा हे। एकर उच्चारन साँस द्वारा स्वतंत्रता से होवऽ हे। **जइसे :** अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ, ई सब्भे सामान्य स्वर ध्वनि हे जेकर संख्या इगारह हे। मगही में कुछ बिसेस स्वर ध्वनि के बेवहार भी होवऽ हे। जइसे–अ, अऽ, ऑ।

2. ब्यंजन बरन : ब्यंजन बरन के उच्चारन स्वर बरन के सहायता से होवऽ हे। एकर उच्चारन साँस के स्वतंत्रता से न हो हे। **जइसे :**

कवर्ग – क्+अ=क, ख्+अ=ख, ग्+अ=ग, घ्+अ=घ, ङ्+अ=ङ

चवर्ग – च, छ, ज, झ, ञ

टवर्ग – ट, ठ, ड, ढ, ण

तवर्ग – त, थ, द ध न

पवर्ग – प, फ, ब, भ, म

अन्तस्थ – य, र, ल, व

उस्म – श, ष, स, ह

ई तेंतीसो अच्छर ब्यंजन कहला हे। एकर अलावे मगही में कुछ दोसर ब्यंजन ध्वनि के बेवहार भी होवऽ हे। **जइसे :** ड़, ढ़

अनुस्वार (ं) आउ बिसर्ग (:) दू गो दोसर ब्यंजन भी मगही में हे **जइसे :**

अ + ं = अं

अ + : = अ:

अनुस्वार आउ बिसर्ग मात्र ब्यंजन हे ई लेल ओकरा साथे हल् चिन्ह (्) न लगे।

बरनमाला में तीन गो संजुक्ताच्छर के भी बेवहार होवऽ हे क्ष, त्र, ज्ञ, ई सब्भे नीचे लिखल ढंग से बनल हे – क्+ ष= क्ष मगही में उच्चारन छ होवऽ हे :

त् + र = त्र (मगही में उच्चारन तर भी हो हे, त्र भी)

ज् + ञ = ज्ञ (मगही में उच्चारन ग्य होवऽ हे).

मगही लेखन में चन्द्र बिन्दु भी परयोग होवऽ हे। **जइसे :** गाँव, चाँद, साँस, बाँध आदि ।

उच्चारन के हिसाब से ब्यंजन बरन के तीन भाग में बाँटल जा सकऽ हे :

1. स्पर्स 2. अन्तस्थ 3. उस्म

एकरा नीचे लिखल तालिका से समझल जा सकऽ हे :

क्र.सं.	स्थान	नाम	स्वर	व्यंजन	अन्तस्थ	उस्म
1.	कंठ से	(कंठ्य)	अ, आ	क ख ग घ ङ	–	ह
2.	तालू से	(तालव्य)	इ ई	च छ ज झ ञ	य	श
3.	मूरधा	(मूरधन्य)	ऋ	ट ठ ड ढ ण	र	ष
4.	दाँत से	(दन्त्य)		त थ द ध न	ल	स
5.	ओठ से	(ओस्ठ्य)	उ, ऊ	प फ ब भ म	–	–
6.	नाक से	(नासिक्य)		ङ ञ ण न म (ं)	–	–
7.	कंठ + तालू से	(कंठ तालव्य)	ए, ऐ	– – –		
8.	दांत + ओठ से	दंतोस्ठ्य	– –	– – –	व	–
9.	कंठ + ओठ से	कंठोस्ठ्य	ओ, औ	– – –		

ड़ ढ़ के उच्चारन मूरधा से होवऽ हे ई लेल ई दून्नो मूरधन्य कहलावऽ हे।

स्पर्स ध्वनि : स्पर्स ध्वनि के उच्चारन में मुँह के अन्दर इया बाहर के दूगो उच्चारन अवयव एक दूसरा के एतना जोर से स्पर्स करके सहसा खुलऽ हे कि नि:स्वास थोड़ा देर ला बिल्कुल रूक के फिर बेग से एकदमे बाहर निकलऽ हे।

अन्तस्थ ध्वनि : अन्तस्थ ध्वनि के उच्चारन में मुख बिवर सँकरा तो कर देवल जा हे बाकि न तो एतना अधिक कि स्पर्स इया संघर्सी ध्वनि निकले आउ न एतना कम कि ध्वनि स्वर के रूप धारन कर लेवे अर्थात स्वर आउ ब्यंजन के बीच के ध्वनि अन्तस्थ कहलावऽ हे। य, र, ल, व अन्तस्थ ध्वनि हे ।

उस्म ध्वनि : उस्म ध्वनि के उच्चारन में मुख बिवर के खुला रहे पर भी नि: स्वास एतना जोर से फेंकल जा हे जेकरा से हवा के संघर्सन होवे।

उच्चारन में हवा प्रच्छेपन के बिचार से ब्यंजन बरन के दूगो भेद होवऽ हे :

1. अल्पप्रान 2. महाप्रान ।

1. अल्पप्रान : जउन ब्यंजन बरन के उच्चारन में कम भार पड़ऽ हे आउ जेकरा में हकार जइसन ध्वनि न होवे, अल्पप्रान कहला हे। स्पर्स बरन के सब्भे वर्ग के पहिला, तीसरा आउ पाचवाँ बरन, चारो अन्तस्थ बरन, ङ आउ अनुस्वार (ं) अल्पप्रान ब्यंजन हे।

जइसे :

कवर्ग में	–	क ग ङ
चवर्ग में	–	च ज ञ
टवर्ग में	–	ट ड ण
तवर्ग में	–	त द न
पवर्ग में	–	प ब म
अन्तस्थ में	–	य र ल व ह ङ (ं)

2. महाप्रान : जउन ब्यंजन बरन के उच्चारन में जादे भार पड़ऽ हे आउ हकार के ध्वनि के मिस्रन रहऽ हे, महाप्रान कहला हे। स्पर्स बरन के हरेक वर्ग के दूसरा, चउथा आउ सब्भे उस्म बरन महाप्रान ब्यंजन हे।

जइसे :

कवर्ग में	–	ख, घ
चवर्ग में	–	छ, झ

टवर्ग में	–	ठ, ढ
तवर्ग में	–	थ, ध
पवर्ग में	–	फ, भ
उस्म में	–	श, ष, स, ह

नाद के दृस्टि से ब्यंजन बरन के दू भेद होवऽ हे :

1. घोस बरन 2. अघोस बरन ।

घोस बरन : घोस बरन के उच्चान में स्वर तंत्री झंकरित होवऽ हे। हर वर्ग के पिछला तीनो ब्यंजन, सब्भे अन्तस्थ, सब्भे स्वर बरन आउ उस्म बरन के ह, घोस बरन हे :

कवर्ग	–	ग घ ङ
चवर्ग	–	ज झ ञ
टवर्ग	–	ड ढ ण
तवर्ग	–	द ध न
पवर्ग	–	ब भ म
अन्तस्थ	–	य र ल व
उस्म	–	ह
स्वर	–	सब्भे स्वर बरन

2. अघोस बरन : अघोस बरन के उच्चारन में स्वर तंत्री झंकरित न होवऽ हे, खाली साँस के उपयोग होवऽ हे। सब्भे वर्ग के पहिला दू अच्छर, उस्म बरन के श, ष, स अघोस बरन हे। **जइसे :**

कवर्ग	–	क ख
चवर्ग	–	च छ
टवर्ग	–	ट ठ
तवर्ग	–	त थ

पवर्ग	–	प फ
उस्म	–	श ष स

हरेक वर्ग के पाँचवाँ अच्छर अर्थात् ङ, ञ, ण, न, म् के अनुनासिक ब्यंजन कहल जा हे, काहे कि एकर उच्चारन नासिका से होवऽ हे। एकर बदले अनुस्वार भी लिखल जा हे—गङ्गा-गंगा, पञ्च-पंच, दण्ड-दंड, सन्त-संत, दम्भ-दंभ।

अभ्यास के प्रस्न

1. स्वर आउ ब्यंजन बरन का हे ? उदाहरन दे के समझावऽ।
2. उच्चारन के हिसाब से ब्यंजन बरन के कै भेद होवऽ हे? बरनन करऽ।
3. उच्चारन में वायु प्रच्छेपन के बिचार से ब्यंजन बरन के केतना भेद होवऽ हे? बरनन करऽ।
4. नाद के बिचार से ब्यंजन बरन के कै भेद होवऽ हे? बरनन करऽ ।
5. नीचे लिखल ध्वनियन के उच्चारन स्थान बतावऽ ।

   अ, ई, ऋ, ऊ, ए, ग, ठ, ध, भ, र, स।

●

संधि

जब दू सबद इया पद एक दूसरका के बहुत पास आवऽ हे तब उच्चारन के सुबिधा ला पहिला सबद के अंतिम आउ दूसरका सबद के पहिलका अच्छर एक दूसरा में मिल जा हथ। दुन्नो के मेल से एगो भिन्न अच्छर के निरमान हो जा हे। दू अच्छर के ई तरह के मेल संधि कहला हे। अर्थात् दू बरन के मेल से होवे वाला बिकार संधि कहलावऽ हे।

जइसे : परम + अरथ = परमारथ।

एकरा में परम के अंतिम अच्छर 'म' के 'अ' आउ अरथ के पहिलका अच्छर अ के मेल से आ बनल हे जेकरा से परमारथ बन गेल।

संधि के ***तीन प्रकार*** होवऽ हे :

1. स्वर संधि
2. ब्यंजन संधि
3. बिसर्ग संधि

1. **स्वर संधि** : दू गो स्वर के मेल से उत्पन्न बिकार के स्वर संधि कहल जा हे। **जइसे** :

महा + इन्दर = महीन्दर

ई + (इ) = (ई)

स्वर संधि के दीर्घ, गुण, बृद्धि, यण्, आउ अयादि पाँच भेद होवऽ हे।

(i) **दीर्घ स्वर संधि :**

नियम : दू गो सबरन स्वर मिल के दीर्घ हो जा हे। **जइसे** :

संधि	उदाहरन
अ + अ = आ	परम + अरथ = परमारथ
अ + आ = आ	दिव्य + आसन = दिव्यासन

आ + अ = आ	बिद्या + अर्थी = बिद्यार्थी
आ + आ = आ	बिद्या + आलय = बिद्यालय
इ + इ = ई	कवि + इन्दर = कवीन्दर
इ + ई = ई	गिरि + ईस = गिरीस
ई + इ = ई	मही + इन्दर = महीन्दर
ई + ई = ई	जोगी + इस्वर = जोगीस्वर
उ + उ = ऊ	बिधु + उदय = बिधूदय
उ + ऊ = ऊ	सिंधु + ऊर्मि = सिन्धूर्मि
ऊ + उ = ऊ	बधू + उत्सव = बधूत्सव
ऊ + ऊ = ऊ	भू + ऊर्ध्व = भूर्ध्व
ऋ + ऋ = ऋ	मातृ + ऋण = मातृण

(ii) **गुण स्वर संधि :**

नियम : जदि 'अ' इया 'आ' के बाद 'इ' या 'ई' 'उ' या 'ऊ' आउ ऋ आवे तऽ दुन्नो मिल के क्रमस: ए, ओ आउ 'अर्' हो जा हे। **जइसे :**

संधि	उदाहरन
अ + इ = ए	देव + इन्दर = देवेन्दर
अ + ई = ए	दिन + ईस = दिनेस
आ + इ = ए	महा + इन्दर = महेन्दर
आ + ई = ए	महा + ईस = महेस
अ + उ = ओ	पर + उपदेस = परोपदेस
अ + ऊ = ओ	समुद्र + ऊर्मि = समुद्रोर्मि
आ + उ = ओ	महा + उदय = महोदय
आ + ऊ = ओ	गंगा + ऊर्मि = गंगोर्मि
अ + ऋ = अर्	देव + ऋषि = देवर्षि
आ + ऋ = अर्	महा + ऋषि = महर्षि

(iii) वृद्धि स्वर संधि :

नियम : जदि 'अ' इया 'आ' के बाद 'ए' इया 'ऐ' आवे तऽ दुन्नो के जगह 'ऐ' आऊ 'ओ' इया 'औ' आवे तब दुन्नो जगह 'औ' हो जा हे।

संधि	उदाहरन
अ + ए = ऐ	एक + एक = एकैक
आ + ऐ = ऐ	देव + ऐस्वर्य = देवैस्वर्य
आ + ए = ऐ	तथा + एव = तथैव
आ + ऐ = ऐ	महा + ऐस्वर्य = महैस्वर्य
अ + ओ = औ	जल + ओघ = जलौघ
आ + ओ = औ	महा + ओज = महौज
अ + औ = औ	भव + औसध = भवौसध
आ + औ = औ	महा + औसध = महौसध

(iv) यण् स्वर संधि :

नियम : जदि 'इ', 'ई', 'उ', 'ऊ' आउ 'ऋ' के बाद कोई भिन्न स्वर आवे तऽ 'इ'-'ई' के 'य्', 'उ' 'ऊ' के 'व्' आऊ 'ऋ' के 'र्' हो जा हे :

संधि	उदाहरन
इ + अ = य्	अति + अंत = अत्यंत
इ + आ = या	इति + आदि = इत्यादि
इ + उ = यु	प्रति + उपकार = प्रत्युपकार
इ + ऊ = यू	नि + ऊन = न्यून
इ + ए = ये	प्रति + एक = प्रत्येक
इ + ऐ = यै	जाति + ऐक्य = जात्यैक्य
इ + ओ = यो	दधि + ओदन = दध्योदन
उ + अ = व्	सु + अल्प = स्वल्प
उ + आ = वा	सु + आगत = स्वागत

उ + इ = वि	अनु + इति = अन्विति
उ + ए = वे	अनु + एषण = अन्वेषण
उ + ओ = वो	गुरु + ओदन = गुर्वोदन
ऋ + अ = र	मातृ + अर्थ = मात्रर्थ
ऋ + आ = रा	मातृ + आदेश = मात्रादेश

(iv) अयादि स्वर संधि :

नियम : जदि 'ए', 'ऐ', 'ओ', 'औ' के बाद कोई भिन्न स्वर आवे तऽ 'ए' के अय्, ऐ के आय् 'ओ'के अव् आउ 'औ' के आव् हो जा हे।

जइसे :

संधि	उदाहरण
ए + अ = अय्	ने + अन = नयन
ऐ + अ = आय्	नै + अक = नायक
ओ + अ = अव्	पो + अन = पवन
औ + अ = आव्	पौ + अक = पावक

2. ब्यंजन संधि : ब्यंजन से स्वर इया ब्यंजन के मेल से उत्पन्न बिकार ब्यंजन संधि कहला हे।

नियम 1 : क्, च्, ट्, त्, प्, के बाद यदि सानुनासिक बरन रहे तऽ क के जगह ङ्, च के जगह ञ्, ट के जगह ण, त के जगह न् आउ प के जगह म् हो जा हें। **जइसे :**

वाक्	+	मय	=	वाङ्मय
षट्	+	मार्ग	=	षण्मार्ग
उत्	+	नति	=	उन्नति
सत्	+	मार्ग	=	सन्मार्ग
अप्	+	मय	=	अम्मय
जगत्	+	नाथ	=	जगन्नाथ

नियम 2 : जदि 'म्' के बाद कोई अन्तस्थ बरन (य, र, ल, व) इया उस्म बरन (श, ष, स, ह) रहे तो म् के स्थान पर अनुस्वार (ं) हो जा हे। **जइसे :**

सम्	+	यम	=	संयम
सम्	+	रक्षण	=	संरक्षण
सम्	+	लग्न	=	संलग्न
सम्	+	वाद	=	संवाद
सम्	+	सार	=	संसार
सम्	+	हार	=	संहार

नियम 3 : जदि क्, च्, ट्, त्, प् के बाद कोई स्वर इया य, र, ल, व, ह, इया वर्ग के तीसरा इया चौथा ब्यंजन में से कोई एक आवे तऽ क् च्, ट्, त्, प् के जगह अपनहीं वर्ग के तीसरा बरन क्रमसः ग्, ज्, ड्, द्, ब् हो जा हे। **जइसे :**

दिक्	+	गज	=	दिग्गज
अच्	+	अंत	=	अजंत
जगत्	+	ईस	=	जगदीस
अप	+	ज	=	अब्ज

नियम 4 : त् इया द् के बाद च इया छ रहे पर, त् इया द् के बदले च्, ज इया झ रहे पर ज्, ट इया ठ रहे पर ट् आउ ड इया द रहे पर ड् हो जा हे। **जइसे :**

उत्	+	चारण	=	उच्चारण
तत्	+	टीका	=	तट्टीका
उत्	+	छिन्न	=	उच्छिन्न
बिपद्	+	जाल	=	बिपज्जाल
उत्	+	ज्वल	=	उज्ज्वल
सत्	+	जन	=	सज्जन

नियम 5 : जदि अनुस्वार के बाद स्वर बरन होवे तऽ अनुस्वार के बदले म् हो जा हे आउ आगे के स्वर से मिल जा हे। **जइसे :**

सं + आचार = समाचार

सं + उदाय = समुदाय

नियम 6 : जदि अनुस्वार के बाद स्पर्स बरन आवे तऽ अनुस्वार बिकल्प से अप्पन आगे के व्यंजन के पाचवाँ बरन हो जा हे। **जइसे :**

सं + गीत = सङ्गीत (संगीत)

सं + चय = सञ्चय (संचय)

अहं + कार = अहङ्कार (अहंकार)

सं + धि = सन्धि (संधि)

नियम 7 : जदि त् इया द् के बाद श रहे तब त् इया द् के जगह च् आउ श के जगह छ् हो जा हे। **जइसे :**

उत् + शिस्ट = उच्छिस्ट

उत् + श्वास = उच्छ्वास

नियम 8 : जदि कोई सबद के अंत में त् इया द् रहे आउ ओकर बाद ह बरन आवे तब त् के जगह द् आउ ह् के जगह ध् हो जा हे। **जइसे :**

उत् + हरण = उद्धरण

उत् + हार = उद्धार

तत् + हित = उद्धित

उत् + हत = उद्धत

नियम 9 : जदि कोई सबद के अंत में त् इया द् रहे आउ ओकर बाद च इया छ आवे तब त् इया द् के जगह पर च् हो जा हे। **जइसे :**

शरद् + चन्द्र = शरच्चन्द्र

सत् + चित् = सच्चित

तत् + छवि = तच्छवि

नियम 10 : जदि त्, द् इया न् के आगे 'ल्' रहे तब त्, द्, न् के बदले 'ल्' हो जा हे बाकि न् के पहिले के अच्छर पर चन्द्रबिन्दु (ँ) भी लगऽ हे। **जइसे :**

उत् + लास = उल्लास

उत् + लेख = उल्लेख

महान् + लाभ = महाँल्लाभ (महालाभ)

तत् + लीन = तल्लीन

उत् + लंघन = उल्लंघन

नियम 11 : जदि त् के आगे ग, घ, द, ध, ब, भ, य, र, व इया कोई स्वर बरन रहे तब त् कें द् हो जा हे। **जइसे :**

सत् + आचार = सदाचार

नियम 12 : जदि 'ज्' के बाद ञ होवे तब दुन्नो के बदले ज्ञ हो जा हे। **जइसे :**

यज् + ञ = यज्ञ

नियम 13 : जदि ह्रस्व स्वर के बाद छ बरन होए तऽ छ के बदले च्छ् हो जा हे। **जइसे :**

परि + छेद = परिच्छेद

अव + छेद = अवच्छेद

नियम 14 : जदि कोई सबद के अन्त में ष बरन के बाद तत् इया थ बरन आवे तब 'त' के जगह 'ट' आउ थ के जगह पर ठ हो जा हे।। **जइसे :**

पृष् + थ = पृष्ठ

षष् + थ = षष्ठ

आकृष् + त = आकृष्ट

तुष् + त = तुष्ट

3. बिसर्ग संधि : बिसर्ग के साथ स्वर इया ब्यंजन के मेल से जे बिकार हो हे, बिसर्ग संधि कहलावऽ हे।

नियम 1 : जदि बिसर्ग के पहिले अ, आ के छोड़ के कोई दूसर स्वर रहे आउ एकर बाद में वर्ग के पहला, दूसरा बरन आउ श, ष, स के छोड़ के कोई घोस ब्यंजन आउ स्वर बरन रहे तऽ बिसर्ग के स्थान पर 'र' हो जा हे। बाकि बिसर्ग के बाद 'र' रहला पर 'र' के लोप हो जा हे आउ बिसर्ग के पहिले के स्वर दीर्घ हो जा हे। **जइसे :**

नि:	+	आधार	=	निराधार
नि:	+	गुन	=	निर्गुन
दु:	+	गम	=	दुर्गम
आसी:	+	बाद	=	आसीर्बाद
नि:	+	रव	=	नीरव
नि:	+	रस	=	नीरस

नियम 2 : जदि बिसर्ग के पहिले इ या उ रहे आउ बिसर्ग के बाद च इया छ रहे तऽ बिसर्ग के जगह पर 'श्' हो जा हे, ट इया ठ रहे तऽ 'ष्' हो जा हे आउ त इया थ रहे तऽ स् हो जा हे। **जइसे :**

नि:	+	चल	=	निश्चल
दु:	+	चरित	=	दुश्चरित
नि:	+	ठुर	=	निष्ठुर
धनु:	+	टंकार	=	धनुष्टंकार
नि:	+	तार	=	निस्तार
दु:	+	तर	=	दुस्तर

नियम 3 : बिसर्ग के बाद श, ष, स रहे तऽ बिसर्ग बनल रह जा हे इया ओकर अगिला अच्छर बिसर्ग के बदला में संजुक्त रूप से लिखल जा हे। **जइसे :**

दु:	+	शासन	=	दु:शासन	इया	दुश्शासन
नि:	+	सहाय	=	नि:सहाय	इया	निस्सहाय
बहि:	+	षट	=	बहि:षट	इया	बहिष्षट

नियम 4 : बिसर्ग के पहिले 'अ' रहे आउ बाद में क, ख आउ प, फ रहे, तऽ बिसर्ग में बिकार न होवे। **जइसे :**

रज:	+	कण	=	रज:कण
प्रात:	+	काल	=	प्रात:काल
अन्त:	+	करण	=	अन्त:करण

नियम 5. जदि बिसर्ग के पहिले ई इया उ रहे आउ ओकर बाद क, ख इया प, फ रहे तऽ बिसर्ग के जगह पर 'ष' हो जा हे। **जइसे :**

निः	+	कपट	=	निष्कपट
दुः	+	कर्म	=	दुष्कर्म
दुः	+	प्रकृति	=	दुष्प्रकृति
निः	+	प्राण	=	निष्प्राण
निः	+	फल	=	निष्फल

नियम 6 : बिसर्ग के पहिले 'अ' रहे आउ एकर बाद कोई घोस ब्यंजन रहे तऽ बिसर्ग के जगह पर 'ओ' हो जा हे। **जइसे :**

अधः	+	गति	=	अधोगति
तमः	+	गुण	=	तमोगुण
यशः	+	दा	=	यशोदा
मनः	+	योग	=	मनोयोग
मनः	+	रथ	=	मनोरथ
तपः	+	वन	=	तपोवन

नियम 7 : अन्त्य 'र्' के बाद अघोस ब्यंजन रहला पर 'र्' के जगह बिसर्ग के परयोग कैल जा हे। **जइसे :**

अंतर	+	करण	=	अंतःकरण
अंतर	+	पुर	=	अंतःपुर

नियम 8 : जदि बिसर्ग के पहिले 'अ' रहे आउ बादो में 'अ' रहे तऽ बिसर्ग के जगह ओकार हो जा हे आउ बाद वाला 'अ' के जगह लुप्ताकर (ऽ) चिन्ह लग जा हे। **जइसे :**

प्रथमः	+	अध्याय	=	प्रथमोऽध्याय
यशः	+	अभिलाषी	=	यशोऽभिलाषी

बाकि, बिसर्ग के बाद अ के अलावे दूसर स्वर अयला पर बिसर्ग के लोप हो जा हे। **जइसे :**

अत: + एव = अतएव

देव: + ऋषि = देवऋषि

नियम 9 : जदि बिसर्ग के पहिले 'अ' इया आ स्वर रहे आउ ओकर बाद कर, कार इया काम के परयोग होए, तऽ बिसर्ग के जगह पर स् हो जा हे। **जइसे :**

नम: + कार = **नमस्कार**

भा: + कर = **भास्कर**

श्रेय: + कर = **श्रेयस्कर**

अभ्यास के प्रस्न

1. संधि के परिभासा आउ भेद उदाहरन के साथ लिखऽ।

2. स्वर संधि आउ ब्यंजन संधि के अंतर उदाहरन सहित स्पस्ट करऽ।

3. नीचे लिखल सब्दन के संधि-बिच्छेद करऽ :

(क) नीरस (ख) निश्चल (ग) नि:सहाय (घ) अन्त:करन (ङ) दुस्कर्म (च) मनोरथ (छ) अंत:पुर (ज) प्रथमोऽध्याय (झ) नमस्कार (ञ) अतएव।

4. संधि बिच्छेद करऽ :

(क) पवन (ख) इत्यादि (ग) एकैक (घ) देवर्षि (ङ) परमादर (च) महीन्दर (छ) महेन्दर।

5. संधि बिच्छेद करऽ :

(क) उन्नति (ख) संयम (ग) जगदीस (घ) सज्जन (ङ) समुदाय (च) संगीत (छ) उच्छ्वास (ज) उद्धार (झ) शरच्चन्द्र (ञ) उल्लास (ट) सदाचार (ठ) यज्ञ (ड) परिच्छेद (ढ़) पृष्ठ।

●

संधि-कोस

अत्यंत	=	अति	+	अंत
अतएव	=	अत:	+	एव
आविस्कार	=	आवि:	+	कार
अत्यधिक	=	अति	+	अधिक
आसीर्बाद	=	आसी:	+	बाद
अत्याचार	=	अति	+	आचार
अधोगति	=	अध:	+	गति
अनुदार	=	अन्	+	उदार
अन्यान्य	=	अनि	+	अन्य
अभिसेक	=	अभि	+	सेक
अभीस्ट	=	अभि	+	इस्ट
अहंकार	=	अहम्	+	कार
इत्यादि	=	इति	+	आदि
उमेश	=	उमा	+	ईश
उल्लास	=	उत्	+	लास
उपेक्षा	=	उप	+	इक्षा
उल्लेख	=	उत्	+	लेख
उन्माद	=	उत्	+	माद
उल्लंघन	=	उत्	+	लंघन
उद्घाटन	=	उत्	+	घाटन
उज्ज्वल	=	उत्	+	ज्वल
उत्कृष्ट	=	उत्	+	कृष्ट
उद्धार	=	उत्	+	हार
उद्गार	=	उत्	+	गार
उद्गम	=	उत्	+	गम
उद्भव	=	उत्	+	भव
उन्नति	=	उत्	+	नति
उन्नयन	=	उत्	+	नयन
उरोज	=	उर:	+	ज
एकैक	=	एक	+	एक
एकांकी	=	एक	+	अंकी
एकानन	=	एक	+	आनन
एकेश्वर	=	एक	+	ईश्वर
कृष्णानंद	=	कृष्ण	+	आनंद
कवीन्द्र	=	कवि	+	इन्द्र
कवीश	=	कवि	+	ईश
कुशासन	=	कु	+	शासन
खगेन्द्र	=	खग	+	इन्द्र
गायक	=	गै	+	अक
अत्यधिक	=	अति	+	अधिक
गिरीश	=	गिरि	+	ईश
गजानन	=	गज	+	आनन
गणेश	=	गण	+	ईश
गंगेश	=	गंगा	+	ईश
गीतांजलि	=	गीत	+	अंजलि
धनानंद	=	घन	+	आनंद
चन्द्रोदय	=	चन्द्र	+	उदय
चयन	=	चे	+	अन
छात्रालय	=	छात्र	+	आलय

जगन्नाथ	=	जगत्	+	नाथ
झण्डोत्तोलन	=	झण्डा	+	उत्तोलन
तथागत	=	तथः	+	आगत
तथापि	=	तथा	+	अपि
तथैव	=	तथा	+	एव
जगन्नाथ	=	जगत्	+	नाथ
तपोवन	=	तप:	+	वन
तपोभूमि	=	तप:	+	भूमि
तद्धित	=	तत्	+	हित
तल्लीन	=	तत्	+	लीन
तपेश्वर	=	तप	+	ईश्वर
तद्वत	=	तत्	+	वत
तिरस्कार	=	तिर:	+	कार
तेजोराशि	=	तेज:	+	राशि
तेजोमय	=	तेज:	+	मय
दर्शनार्थ	=	दर्शन	+	अर्थ
दावानल	=	दाव	+	अनल
दुस्शासन	=	दुः	+	शासन
दुस्कर्म	=	दुः	+	कर्म
दुस्कर	=	दुः	+	कर
दुर्नीति	=	दुः	+	नीति
देशाटन	=	देश	+	आटन
द्रोणाचार्य	=	द्रोण	+	आचार्य
दसानन	=	दस	+	आनन
दयानंद	=	दया	+	आनंद
दीक्षांत	=	दीक्षा	+	अंत
दूरागत	=	दूर	+	आगत

देवालय	=	देव	+	आलय
दिग्दर्शन	=	दिक्	+	दर्शन
दुर्जन	=	दुः	+	जन
दुर्गति	=	दुः	+	गति
दुर्दिन	=	दुः	+	दिन
दुरात्मा	=	दुः	+	आत्मा
दिनेश	=	दिन	+	ईश
देवीच्छा	=	देवी	+	इच्छा
धर्मात्मा	=	धर्म	+	आत्मा
धनादेस	=	धन	+	आदेस
धनेस	=	धन	+	ईस
धावक	=	धौ	+	अक
नगेन्द्र	=	नग	+	इन्द्र
नमस्कार	=	नम:	+	कार
नयन	=	ने	+	अन
नरेन्द्र	=	नर	+	इन्द्र
नरेश	=	नर	+	ईश
नवोदय	=	नव	+	उदय
नायक	=	नै	+	अक
नागेन्द्र	=	नाग	+	इन्द्र
निराश	=	नि:	+	आश
निर्जल	=	नि:	+	जल
निर्मल	=	नि:	+	मल
निषेध	=	नि:	+	षेध
नीरोग	=	नि:	+	रोग
नाविक	=	नौ	+	इक

पंचानन	=	पंच	+	आनन	भावुक	=	भौ	+	उक
पंचामृत	=	पंच	+	अमृत	भुवनेश्वर	=	भुवन	+	ईश्वर
पत्राचार	=	पत्र	+	आचार	भुतेश्वर	=	भूत	+	ईश्वर
परमार्थ	=	परम	+	अर्थ	मनोनुकूल	=	मन:	+	अनुकूल
परीक्षा	=	परि	+	इक्षा	मनोरंजन	=	मन:	+	रंजन
परोपकार	=	पर	+	उपकार	मनोरथ	=	मन:	+	रथ
परीक्षार्थी	=	परीक्षा	+	अर्थी	मनोहर	=	मन:	+	हर
पवन	=	पो	+	अन	मनोविकार	=	मन:	+	विकार
पवित्र	=	पो	+	इत्र	मनोविज्ञान	=	मन:	+	विज्ञान
पराधीन	=	पर	+	अधीन	मनोभाव	=	मन:	+	भाव
परमानंद	=	परम	+	आनंद	मनोरम	=	मन:	+	रम
परमेश्वर	=	परम	+	ईश्वर	महोत्सव	=	महा	+	उत्सव
पीताम्बर	=	पीत	+	अम्बर	मनोज	=	मन:	+	ज
पावक	=	पौ	+	अक	मनोबल	=	मन:	+	बल
पावन	=	पौ	+	अन	महात्मा	=	महा	+	आत्मा
प्रत्येक	=	प्रति	+	एक	महीश्वर	=	मही	+	ईश्वर
प्रात: काल	=	प्रात:	+	काल	महेन्द्र	=	महा	+	इन्द्र
पुरस्कार	=	पुर:	+	कार	मुनीश	=	मुनि	+	ईश
प्राध्यापिका	=	प्र	+	अध्यापिका	महोदय	=	महा	+	उदय
प्रधानाचार्य	=	प्रधान	+	आचार्य	यथोचित	=	यथा	+	उचित
ब्रजेश	=	ब्रज	+	ईश	यद्यपि	=	यदि	+	अपि
ब्रह्मर्षि	=	ब्रंह्म	+	ऋसि	यशोदा	=	यश:	+	दा
भवन	=	भो	+	अन	यशोधरा	=	यश:	+	धरा
भोजनालय	=	भोजन	+	आलय	योगेन्द्र	=	योग	+	इन्द्र
भवति	=	भो	+	अति	रसाभास	=	रस	+	आभास
भवेस	=	भव	+	ईस	रामायण	=	राम	+	अयन

राजेन्द्र = राज + इंद्र
रामाधार = राम + आधार
रामेश्वर = राम + ईश्वर
रत्नावली = रत्न + आवली
रेखांकित = रेखा + अंकित
लंबोदर = लंब + उदर
व्यर्थ = वि + अर्थ
वहिष्कार = वहिः + कार
वागीश = वाक् + ईश
वामेश्वर = वाम + ईश्वर
विसर्ग = वि + सर्ग
विद्यालय = विद्या + आलय
विद्यार्थी = विद्या + अर्थी
विद्योपार्जन = विद्या + उपार्जन
विच्छेद = वि + छेद
व्रजेश = व्रज + ईश
वस्त्रालय = वस्त्र + आलय
शांति = शाम् + ति
शिष्टाचार = शिष्ट + आचार
संकल्प = सम् + कल्प
संगम = सम् + गम
संधि = सम् + धि
संसार = सम् + सार
संवाद = सम् + वाद
संगठन = सम् + गठन

सच्चिदानंद = सत् + चित् + आनंद
सज्जन = सत् + जन
सत्याग्रह = सत्य + आग्रह
सद्भाव = सत् + भाव
सद्गुरु = सत् + गुरु
सदैव = सदा + एव
सरोज = सरः + ज
सरोवर = सरः + वर
सदाचार = सत् + आचार
सर्वोदय = सर्व + उदय
सर्वोत्तम = सर्व + उत्तम
संगीत = सम् + गीत
संस्कृति = सम् + कृति
संस्कार = सम् + कार
संघटन = सम् + घटन
संजय = सम् + जय
संदीप = सम् + दीप
संताप = सम् + ताप
सुरेन्द्र = सुर + इन्द्र
सुरेश = सुर + ईश
स्वाभिमान = स्व + अभिमान
हरीश = हरि + ईश
हिमालय = हिम + आलय
ज्ञानेश्वर = ज्ञान + ईश्वर
ज्ञानांजन = ज्ञान + अंजन

सबद बिचार

सबद : सबद एगो इया एगो से अधिक ध्वनि इया बरन के मेल से बनल स्वतंत्र आउ सार्थक ध्वनि हे। **जइसे** :

हम, तूँ, ऊ, अदमी, माय आदि

सबद भेद : सबद के बर्गीकरन नीचे अधार पर करल जा सकऽ हे :

1. उद्‌गम के अधार पर
2. अर्थ के अधार पर
3. ब्युत्पत्ति के अधार पर
4. रूपान्तर के अधार पर

1. उद्‌गम के अधार पर : ई अधार पर पता चलऽ हे कि कउनो सबद अपन मूल रूप में कउन स्रोत से आयल हे। ई अधार पर सबद-समूह के पाँच भेद कैल गेल हे :

(क) तत्सम (ख) अर्द्धतत्सम (ग) तद्‌भव

(घ) देसज (ङ) बिदेसज

(क) **तत्सम** : तत्सम ऊ सबद हे जेकर रूप हू-बहू संस्कृत भासा के सबद जइसन होवऽ हे। **जइसे** :

अग्नि, रात्रि, मृत्यु, पुष्प आदि

(ख) **अर्द्ध तत्सम** : अर्द्ध तत्सम सबद संस्कृत से तनी बिगड़ के बाकि सीधे मगही में आयल हे। **जइसे** :

कृष्ण – किसुन

कार्य – काज

(ग) **तद्‌भव** : तद्‌भव सबद संस्कृत, प्राकृत आउ अपभ्रंस से होइत रूप बदल के मगही में आयल हे। **जइसे** :

पुस्तिका – पोत्थिआ – पोथिआ – पोथी

गोबिष्ठा – गोबिट्‌ठा – गोईट्‌ठा – गोइठा

(घ) **देसज** : देसज ऊ सबद हे, जे अपने भासा छेत्र में उत्पन्न होयल हे। **जइसे** : थारी, लोटा, नेठो, मुरेठा, धोकड़ी, अरार, लाठा, करहा, बरहा आदि।

(ङ) **बिदेसज** : बिदेसी भासा से आयल सबद बिदेसज सबद कहलावऽ हे। **जइसे** : अमीर, अदमी, दिमाग, इज्जत, कसम, तनख्वाह, तारीख, कोट, रेल, नोट, टिकट, स्कूल, कॉलेज, कॉपी, रजिस्टर, रिपोर्ट आदि।

2. **अर्थ के अधार पर** : अर्थ के अधार पर सबद के ***तीन भेद*** होवऽ हे :

(क) बाचक (ख) लच्छक (ग) ब्यंजक

(क) **बाचक** : बाचक सबद से कउनो सबद के सीधा अर्थ परगट होवऽ हे। जइसे: (i) **गदहा** चरइत हे। (ii) **बैल** जाइत हे।

ई दुन्नो वाक्य में गदहा आउ बैल बाचक सबद के उदाहरन हे जे गदहे आउ बैल के अर्थ ब्यक्त करइत हे।

(ख) **लच्छक** : लच्छक सबद अप्पन सामान्य अर्थ छोड़ के बिसेस अर्थ परगट करऽ हे। **जइसे** : (i) मोहन गदहा हे। (ii) सोहन बैल हे।

ई दुन्नो वाक्य में गदहा आउ बैल जानवर बिसेस के बोध न करइत बिना दिमाग के खटे वाला इया बुड़बक के बोध करइत हे। ई लेल ई दुन्नो लच्छक हे।

(ग) **ब्यंजक** : ब्यंजक सबद से बाच्यार्थ आउ लच्छ्यार्थ छोड़ के ब्यंग्यार्थ के बोध होवऽ हे। **जइसे** : (i) कउआ बोले लगल। (ii) मुर्गा बाँग देवे लगल।

ई दुन्नो के ब्यंग्यार्थ हे कि 'भोर हो गेल'।इहाँ कउआ आउ मुर्गा ब्यंजक सबद हे।

3. **ब्युत्पत्ति के अधार पर** : ब्युत्पत्ति अर्थात् बनावट इया रचना के अधार पर सबद के ***तीन भेद*** होवऽ हे :

(क) रूढ़ (ख) जौगिक (ग) जोगरूढ़ि (जोगरूढ़)

(क) **रूढ़** : रूढ़ ऊ सबद हे जेकर खंड इया टुकड़ा करे पर अर्थ न निकले। **जइसे** : घड़ा।

'घड़ा' सबद के खंड करे पर 'घ' आउ 'ड़ा' अलगे–अलगे होवे पर अर्थहीन हो जाहे। दुन्नो सबद मिलिए के सार्थक सबद घड़ा बन सकऽ हे। ई लेल घड़ा रूढ़ सबद हे।

(ख) **जौगिक** : जौगिक सबद एगो से जादे सबद के मेल से बनऽ हे। ई लेल एकर खंड कयला पर सब्भे खंड सार्थक रहऽ हे। **जइसे** : बिद्यालय।

बिद्यालय के दुन्नो खंड (बिद्या+आलय) के अप्पन–अप्पन अर्थ हे। ई लेल बिद्यालय जौगिक सबद हे।

(ग) **जोगरूढ़ि** : जोगरूढ़ि सार्थक सबद के मेल से बनल ऊ सबद हे जे अप्पन सामान्य अर्थ छोड़ के बिसेस अर्थ के बोध करावऽ हे। **जइसे** : पंकज।

एकरा में दू सबद खंड हे– पंक + ज। पंक माने कादो आउ ज माने जनमल। पंकज के सामान्य अर्थ होयल कादो से जनमल। कादो से तो ढेर चीज जनमऽ हे बाकि सब्भे के पंकज न कहल जाय। पंकज के बिसेस अर्थ हे–'कमल'। ई लेल 'पंकज' सबद जोगरूढ़ि हे।

4. **रूपान्तर के अधार पर** : रूपान्तर के अधार पर सबद के दू भेद हे : (1) बिकारी (2) अबिकारी

(1) **बिकारी सबद** : जउन सबद के रूप अर्थ के कारन इया दूसर सबद के संबंध से बदल जा हे ऊ बिकारी सबद कहला हे। संग्या, सर्बनाम, बिसेसन आउ क्रिया बिकारी सबद हे।

(2) **अबिकारी सबद** : जउन सबद के रूप अर्थ के कारन इया दूसर संबंध से न बदले ऊ अबिकारी सबद कहलावऽ हे। अबिकारी सबद के दूसरा नाम अब्यय हे।

क्रिया बिसेसन, समुच्चयबोधक, सम्बन्धबोधक आउ बिस्मयादिबोधक सबद अबिकारी इया अब्यय कहला हे।

ई तरी रूपान्तर के अधार पर सबद के ***पाँच भेद*** हो जा हे :

संग्या, सर्बनाम, बिसेसन, क्रिया आउ अब्यय।

अभ्यास के प्रस्न

1. सबद केकरा कहल जा हे? एकर बर्गीकरन करऽ ।
2. उद्‌गम के अधार पर सबद-समूह के कै भेद होवऽ हे? बरनन करऽ।
3. अर्थ के अधार पर सबद के भेद के बरनन करऽ।
4. ब्युत्पत्ति के अधार पर सबद के कै गो भेद होवऽ हे? बतावऽ।
5. रूपान्तर के अधार पर सबद के भेद बतावऽ आउ एकर बरनन करऽ।

●

संग्या

संग्या : जउन सबद से कउनो ब्यक्ति, बस्तु, स्थान, जाति, गुन इया भाव के नाम प्रकट हो हे, संग्या कहलावऽ हे। जइसे :

राम, खटिया, पटना, गाय, लइकाई, आदि।

संग्या के पाँच भेद होवऽ हे :

1. **ब्यक्तिवाचक संग्या :** ब्यक्तिवाचक संग्या से अदमी, चीज इया जगह बिसेस के नाम के समझ होवऽ हे। **जइसे :** मोहन, गया, पुनपुन, आदि।

2. **जातिवाचक संग्या :** जातिवाचक संग्या से अदमी इया चीज के समूचे जाति के बोध होवऽ हे। **जइसे :** अदमी, नदी, पहाड़, घर, सहर, घोड़ा आदि।

3. **भाववाचक संग्या :** भाववाचक संग्या से कउनो ब्यक्ति इया चीज के धरम, गुन, अवस्था इया ब्यापार के समझ होवऽ हे। **जइसे :** करिअई (कालापन), लइकाई (बचपना) नरमई (नम्रता) आदि।

4. **द्रब्यवाचक संग्या :** द्रब्यवाचक संग्या से कोई द्रब्य, पदार्थ इया धातु के समझ होवऽ हे जेकरा नापल इया तउलल जा हे। एकर गिनती न होवे आउ बहुबचन न होवे। **जइसे :**तेल, घीउ, पानी, सोना, चाँदी आदि।

5. **समूहवाचक संग्या :** समूहवाचक संग्या से अदमी इया चीज के समूह के समझ होवऽ हे। **जइसे :** सेना, सभा, भीड़, घउद आदि।

संग्या के रूप :

रूप-रचना के अधार पर संग्ज्ञा के ***चार रूप*** होवऽ हे :

(क) ह्रस्व-निर्बल

(ख) ह्रस्व-सबल

(ग) दीर्घ

(घ) अतिरिक्त

(क) **ह्रस्व-निर्बल रूप** : ई अक्सर ह्रस्व स्वरांत इया ब्यंजनांत होवऽ हे।

जइसे : ह्रस्व स्वरान्त–लोह, मीठ, तोड़, जोड़ आदि।

ब्यंजनान्त–लोह्, मीठ्, तोड्, जोड् आदि।

(ख) **ह्रस्व-सबल रूप** : एकरा में संग्या के अन्तिम स्वर के दीर्घ करके बनावल जा हे। **जइसे** : लोहा, घोड़ा, मीठा, तोड़ा, जोड़ा आदि ।

(ग) **दीर्घ रूप** : संग्या के ह्रस्व-निर्बल रूप में 'या' इया 'वा' प्रत्यय जोड के दीर्घ रूप बनावल जा हे। **जइसे** :

ह्रस्व–घर	ह्रस्व–नट	ह्रस्व–फर
दीर्घ–घरवा	दीर्घ–नटवा	दीर्घ–फरवा

जदि संग्या के ह्रस्व सबल रूप होवे तऽ पहिले ओकरा ह्रस्व निर्बल रूप बना के फिर 'या' इया 'वा' प्रत्यय जोड़ के दीर्घ रूप बनावल जा हे।

जइसे : घोड़ा – घोड़वा

पोथी – पोथिया

(घ) **अतिक्ति रूप** : एकर रचना संग्या के दीर्घ रूप के अन्तिम प्रत्यय के पुनरावृति करके होवऽ हे :

दीर्घ – मलिया

अतिरिक्त – मलियवा

दीर्घ – पोथिया

अतिरिक्त – पोथियवा

अभ्यास के प्रस्न

1. संग्या के पाँच भेद कउन-कउन हे ? दू-दू गो उदाहरन के साथ बतावऽ।
2. रूप रचना के अधार पर संज्ञा के भेद एक-एक गो उदाहरन के साथ बतावऽ।

●

लिंग

लिंग : संग्या के ओइसन रूप जेकरा से कोई ब्यक्ति इया बस्तु के जाति (स्त्री-पुरुष) के बोध होवे, लिंग कहला हे।

लिंग **दू *प्रकार*** के होवऽ हे :

पुल्लिंग : पुल्लिंग संग्या के ऊ रूप हे जेकरा से संग्या के पुरुस जाति के बोध होवऽ हे। जइसे : राजा, लइका, सूरज, बाघ, आदि।

स्त्रीलिंग : स्त्रीलिंग संग्या के ऊ रूप हे जेकरा से संग्या के स्त्री जाति के बोध होवऽ हे। जइसे : रानी, लइकी, बाघिन, गाय, नदी आदि।

लिंग निर्नय के ***तीन गो*** अधार हे :बेवहार, अर्थ आउ रूप

1. अर्थ आउ रूप के दृस्टि से पुल्लिंग आउ स्त्रीलिंग में बँटल संग्या:

पुल्लिंग	**स्त्रीलिंग**	**पुल्लिंग**	**स्त्रीलिंग**
खंढ़	बोरसी	भन्सा	बड़ेरी
लूगा	मउनी	लेदा	चिंरई
चूल्हा	बथानी	बाबू	मड़ई
लेरू	ओलती	बरद	गाय

2. कुछ पुल्लिंग संग्या में 'आइन' प्रत्यय लगा के स्त्रीलिंग बनावल जा हे। अइसन करइत समय जदि मूल सबद में दीर्घ स्वर रहे तो ओकरा ह्रस्व कर देवल जा हे। जइसे :

पुल्लिंग	**स्त्रीलिंग**
गुरु	गुरुआइन
बाबू	बबुआइन

3. कुछ पुल्लिंग संग्या में 'इन' प्रत्यय लगा के स्त्रीलिंग बनावल जा हे। अइसन संग्या अकारान्त होवे तऽ स्वर अ मिला के 'इन' प्रत्यय लगावल जा हे। आकारान्त रहला पर सीधे 'इन' प्रत्यय लगा देल जा हे।

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
मलाह	मलाहिन
जाट	जाटिन
बनिया	बनियाइन
मछुआ	मछुआइन

4. प्रानीवाचक आकारान्त पुल्लिंग संग्या में 'ई' प्रत्यय लगा के स्त्रीलिंग बनावल जा हे। प्रत्यय लगावे के पहिले स्वर 'आ' हटा देवल जा हे:

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
साला	साली
महरा	महरी
मउगा	मउगी

5. आकारान्त संग्या में 'इया' प्रत्यय जोड़ के स्त्रीलिंग रूप बनावल जा हे :

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
घोड़ा	घोड़िया
बूढ़	बुढ़िया

6. कुछ पुल्लिंग संग्या में 'नी' प्रत्यय लगा के स्त्रीलिंग बनावल जा हे :

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
मुसहर	मुसहरनी
मेहतर	मेहतरनी

7. कुछ पुल्लिंग संग्या के अंत में में आवे वाला स्वर के लुप्त कर के 'ऐनी' प्रत्यय जोड़ के स्त्रीलिंग रूप बनावल जा हे। **जइसे :**

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
खत्री	खत्रैनी
कुंजड़ा	कुंजड़ैनी

8. कई गो स्त्री प्रत्यान्त सबद के खाली स्त्रींलिंग में परयोग होवऽ हे। जइसे : सती, गाभिन, सौतिन, सोहागिन, अहिवात, डाइन, डैनी, चुड़ैल आदि।

लिंग के संबंध में कुछ महत्वपूर्न बात नीचे लिखल जाइत हे :

(क) संग्या के लिंग ग्यान क्रिया द्वारा न हो हे, काहे कि क्रिया लिंग–भेद से अप्रभावित रहऽ हे। **जइसे :** मोहन जा हई। गौरी जा हई।

(ख) एकरा में लिंग के कारन सम्बन्ध कारक के चिन्ह में भी कोई परिवर्तन न हो हे। **जइसे :** राम के भाई, राम के बहिन।

(ग) बिसेसन में भी लिंग के कारन कोई परिवर्तन न हो हे। **जइसे :** भुक्खल गइया; भुक्खल बैला।

अभ्यास के प्रस्न

1. मगही भासा में लिंग कै गो होवऽ हे ? दू-दू गो उदाहरन के साथ लिखऽ।

●

बचन

बचन : सबद के रूप के ऊ बिधान, जेकरा से ओकर अर्थ में संख्या के बोध हो हे, बचन कहलावऽ हे।

बचन दू *प्रकार* के होवऽ हे : एकबचन आउ बहुबचन।

एकबचन : सबद के जउन रूप से एगो संख्या के बोध होवे, ओकरा एकबचन कहल जा हे। **जइसे** : पेंड़, राजा, रानी, किताब आदि।

बहुबचन : सबद के जउन रूप से एगो से अधिक संख्या के समभ होवे, ओकरा बहुबचन कहल जा हे। **जइसे** : लइकन, घोड़वन, पेंड़वन।

एकबचन से बहुबचन बनावे के नियम :

1. एकबचन संग्या के अन्तिम दीर्घ स्वर के ह्रस्व करके 'न' जोड़े से बहुबचन के रूप बनऽ हे। **जइसे :**

एकबचन	**बहुबचन**
घोड़ा	घोड़न
घोड़वा	घोड़वन
बेटा	बेटन
बेटवा	बेटवन

2. एकबचन संग्या के मूल रूप में 'न' जोड़ के बहुबचन बनावल जा हे। **जइसे :**

एकबचन	**बहुबचन**
बैल	बैलन
घर	घरन

3. एकबचन संग्या के ह्रस्व स्वरान्त इया ब्यंजनान्त रूप के दीर्घ रूप में बदल के आउ ऊ दीर्घ रूप के अन्त दीर्घ स्वर के ह्रस्व कर के 'न' जोड़ के एकबचन से बहुबचन रूप बनावल जा हे। **जइसे :**

एकबचन	बहुबचन
औरत	औरतियन
बैल	बैलवन
आम	अमवन
माला	मलवन

4. एकबचन में समूह निर्देसक संग्या 'सब' इया प्रानीधारी ला 'लोग' संजुक्त करके जौगिक बहुबचन के रूप बनावल जा हे। **जइसे :** घरसब, मालीलोग आदि।

अभ्यास के प्रस्न

1. मगही भासा में बचन केकरा कहल जा हे। एक-एक गो उदाहरन के साथ समझावऽ।
2. नीचे लिखल एकबचन के बहुबचन बनावऽ।

   बैल, औरत, आम, घर, माला, ताला।



कारक

संग्या इया सर्बनाम के जउन रूप से वाक्य में अन्य सबद खासकर क्रिया के साथ ओकर संबंध परगट होवऽ हे, कारक कहला हे।

संग्या इया सर्बनाम के कारक रूप के परगट करे ला जउन प्रत्यय लगावल जा हे ओकर बिभक्ति, परसर्ग, अनुसर्ग इया कारक चिह्न कहला हे।

कारक ***आठ प्रकार*** के होवऽ हे।

कारक के चिन्ह :

कर्त्ता : एकरा में कोई परसर्ग के बेवहार न होवे ।

कर्म : कें (बिना परसर्ग के भी कर्म कारक के बेवहार होवऽ हे)

करन : से, सें, सेती, सतीं

सम्प्रदान : के, ला, ले, लेल, लगी, लागी, खातिर बदे, वास्ते, ए

अपादान : से, सें, सेती, सतीं

सम्बन्ध : क, के, केर, केरा, केरी

अधिकरन : में, मे, मों, ने

सम्बोधन : अहो, एहो, अगे, एगे, गे, अजी, जी, अरे, ये, एबे, ए, बे, अबे, रे, हो

कारक के भेद :

1. **कर्त्ताकारक** : काम करे वाला के कर्त्ता कहल जा हे। सबद के जउन रूप से काम करे वाला के बोध होवऽ हे ऊ कर्त्ताकारक कहला हे। **जइसे : लइका** पढ़ रहल हे। इहाँ 'लइका' कर्त्ता कारक हे।

2. **कर्मकारक** : जउन सबद पर कर्त्ता के काम करे के फल पड़े ऊ कर्मकारक कहला हे। **जइसे** : लइका **किताब** पढ़ रहल हे।

इहाँ पढ़ रहल हे क्रिया के फल 'किताब' पर पड़इत हे, ई लेलं किताब कर्मकारक में हे।

3. **करनकारक :** जउन साधन से कर्त्ता कउनो काम करे ऊ कर्म कारक कहला हे। **जइसे : कलम** से लिखली।

इहाँ 'कलम से' करनकारक हे।

4. **सम्प्रदानकारक :** जेकरा ला क्रिया के काम कैल जाय ऊ सम्प्रदान कारक कहला हे। **जइसे : सफलता लागी** मेहनत करऽ।

इहाँ 'सफलता लागी' सम्प्रदानकारक में हे।

5. **अपादानकारक :** जउन सबद से संबंध टूटे इया अलग होवे के बोध होवे, अपादानकारक कहला हे।

जइसे : पेड़ से फर गिरल।

इहाँ 'पेड़ से' अपादानकारक हे।

6. **सम्बन्धकारक :** संग्या इया सर्बनाम के जउन रूप से दूसर वस्तु के साथ ओकर संबंध के बोध होवे, ऊ सम्बन्धकारक कहला हे। **जइसे :**

सीता के गहना ले आवऽ। इहाँ 'सीता के' संबंधकारक में हे।

7. **अधिकरनकारक :** संग्या इया सर्बनाम के जउन रूप से क्रिया के अधार के बोध होवे ऊ अधिकरनकारक कहला हे। **जइसे :**

स्कूल में लइकन पढ़ऽ हथ। इहाँ 'स्कूल में' अधिकरनकारक में हे।

8. **सम्बोधनकारक :** संग्या के जउन रूप से केकरो पुकारल इया धिरावल जाय ऊ सम्बोधन कारक कहला हे। **जइसे :**

हे बेटा ! आव। इहाँ 'हे बेटा' सम्बोधनकारक हे।

अभ्यास के प्रस्न

1. कारक केकरा कहल जा हे? एकर प्रकार चिन्ह् सहित उल्लेख करऽ।

●

सर्बनाम

सर्बनाम : सर्बनाम ऊ बिकारी सबद हे जे संग्या के बदले बेवहार में आवऽ हे। **जइसे** :

राम आवित हल तऽ **ओहू** खा लेइत।

इहाँ 'ओहू' सबद रामे ला परयोग कैल गेल हे। ई लेल ओहू सर्बनाम हे।

सर्बनाम के भेद :

सर्बनाम के ***छव*** भेद होवऽ हे :

1. पुरुसवाचक
2. निजवाचक
3. निस्चयवाचक
4. सम्बन्धवाचक
5. अनिस्चयवाचक
6. प्रस्नवाचक

1. **पुरुसवाचक सर्बनाम** : जउन सर्बनाम से पुरुष इया स्त्री (मर्द इया औरत) के बोध होवे ऊ पुरुसवाचक सर्बनाम कहलावऽ हे।

जइसे : हम, तूँ, ऊ आदि।

पुरुसवाचक सर्बनाम के ***तीन भेद*** होवऽ हे :

(क) **उत्तमपुरुस** : जेकरा से बोले वाला के बोध होवऽ हे, उत्तमपुरुष कहलावऽ हे। **जइसे** : हम, हमनी इत्यादि।

(ख) **मध्यमपुरुस** : जेकरा से सुने वाला के समझल जाय ऊ मध्यमपुरुस कहलावऽ हे। **जइसे** : तूँ, तों, तोहनी आदि।

(ग) **अन्यपुरुस** : जेकरा बारे में कुछ कहल जाए ओकरा **अन्यपुरुस** कहल जा हे। **जइसे** : ई, ऊ आदि।

2. **निजवाचक सर्बनाम** : जउन सर्बनाम से खुद अप्पन के समझ होवऽ हे ओकरा निजवाचक कहल जा हे। **जइसे** :

हम **अपनही** आ गेली। हम अपने खायम।

इहाँ 'अपने' आउ 'अपनहीं' निजवाचक सर्बनाम हे।

3. **निस्चयवाचक सर्बनाम :** जेकरा से कउनो भिरी इया दूर के कोई चीज के समभ होवे ऊ निस्चयवाचक सर्बनाम कहला हे। **जइसे :** ई, ऊ

4. **अनिस्चयवाचक सर्बनाम :** जेकरा से कउनो अनिस्चित चीज के समभ होवे ऊ अनिस्चयवाचक सर्बनाम कहला हे। **जइसे :** कउनो, कुछो

5. **सम्बन्धवाचक सर्बनाम :** जेकरा से कउनो वाक्य में दू पद के बीच संबंध बतावल जा हे ऊ संबंधवाचक सर्बनाम कहला हे। **जइसे :** जे, जउन, से, तउन।

6. **प्रस्नवाचक सर्बनाम :** जेकरा से प्रस्न के बोध होवऽ हे ऊ प्रस्नवाचक सर्बनाम कहला हे। **जइसे :** का, के, कउन, कहाँ, केकरा आदि।

सर्बनाम रूपावली :

(अ) ***पुरुसवाचक :*** (i) उत्तमपुरुस – हम

	एकबचन		**बहुबचन**	
	ह्रस्व	**दीर्घ**	**ह्रस्व**	**दीर्घ**
कर्त्ता	मोरा	हम	हमनी	हमनिन
कर्म	मोरा, के	हमरा, के	हमनी, के	हमनिन के
करन	मोरा से	हमरा से	हमनी से	हमनिन से
सम्प्रदान	मोरा ला	हमरा ला	हमनी ला	हमनिन ला
अपादान	मोरा से	हमरा से	हमनी से	हमनिन से
सम्बन्ध	मोर, मोरा	हम्मर, हमार, हमरे, हमरा	हमनी के, केरा	हमनिन के, केर
अधिकरन	मोरा में	हमरा में	हमनी में	हमनिन में

(ii) ***मध्यमपुरुस*** (अनादरवाचक) तूँ इया तों

	एकबचन		**बहुबचन**	
	ह्रस्व	**दीर्घ**	**ह्रस्व**	**दीर्घ**
कर्त्ता	तूँ, तों	तूँ, तों	तोहनी	तोहनिन
कर्म	तोरा, के	तोहरा, के	तोहनी, के	तोहनिन, के

	एकबचन		बहुबचन	
	ह्रस्व	दीर्घ	ह्रस्व	दीर्घ
करन	तोरा से	तोहरा से	तोहनी से	तोहनिन से
सम्प्रदान	तोरा ला	तोहरा ला	तोहनी ला	तोहनिन ला
अपादान	तोरा से	तोहरा से	तोहनी से	तोहनिन से
सम्बन्ध	तोरा, तोर, तोरी	तोहर, तोहार, तोहरे, तोहरी	तोहनी के, केर	तोहनिन के, केर
अधिकरन	तोरा में	तोहरा में	तोहनी में	तोहनिन में
सम्बोधन	हे तूँ, हे तों	हे तूँ, हे तों	हे तू सब लोग	हे तूँ सब, लोग

नोट : हमनिन आउ तोहनिन के जगह हमनिन्ह आउ तोहनिन्ह के भी परयोग होवऽ हे।

मध्यमपुरुष (आदरवाचक)– अपने

	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	अपने	अपने सब
कर्म	अपने के	अपने सब के
करन	अपने से	अपने सब से
सम्प्रदान	अपने ला	अपने सब ला
अपादान	अपने से	अपने सब से
सम्बन्ध	अपने के, अप्पन, आपन	अपने सब के
अधिकरन	अपने में	अपने सब में
सम्बोधन	हे अपने	हे अपने सब

नोट : अपने सब के जगह अपने सबन इया अपने सभन के परयोग भी कोई–कोई छेत्र में होवऽ हे।

(ii) *निस्चयवाचक सर्बनाम*-ई (निकटवर्ती)

	एकबचन		बहुबचन	
	ह्रस्व	दीर्घ	ह्रस्व	दीर्घ
कर्त्ता	ई	ई	ई	एकनी, इनकनी
कर्म	ऍह, ऍह के	एकरा के	इन्ह के	एकनी के, इनकनी के
करन	ऍह से	एकरा से	इनका से	एकनी से, इनकनी से
सम्प्रदान	ऍह ला	एकरा ला	इनका ला	एकनी ला, इनकनी ला
अपादान	ऍह से	एकरा से	इनका से	एकनी से, इनकनी से
सम्बन्ध	ऍह के, केर	एकर, एकरा एकरी	इनकर इनकरा	एकनी के, इनकनी के –केर
अधिकरन	ऍह में	एकरा में	इनकर में, एमें	एकनीं में इनकनी में

निस्चयवाचक सर्बनाम—'ऊ' (दूरवर्ती)

	एकबचन		बहुबचन	
	ह्रस्व	दीर्घ	ह्रस्व	दीर्घ
कर्त्ता	ऊ	ऊ	ऊ, ओकनी	उनकनी
कर्म	ओह के	ओकरा,–के	उन्ह के	उनकनी, के
करन	ओह से	ओकरा से	उनका से	उनकनी से
सम्प्रदान	ओह ला	ओकरा ला	उनका ला	उनकनी ला
अपादान	ओह से	ओकरा से	उनका से	उनकनी से
सम्बन्ध	ओह के केर आदि	ओकरा, रा,री	उनकर, रा	उनकनी के, केर
अधिकरन	ओह में	ओकरा में	उनका में	उनकनी में

(iv) ***संबंधबाचक सर्बनाम***—'जे'

	एकबचन		बहुबचन	
	ह्रस्व	दीर्घ	ह्रस्व	दीर्घ
कर्त्ता	जौन, जउन	जे	जे	जिनकनी, जिन्हकनी
सम्बन्ध	जेह के	जेकर, जेकरा, जेकरी	जिन्ह के	जिन्हकर जिन्हकरा जिन्हकरी
बिकारी	जेह	जेकरा	जिन्ह	जिन्हकरा

सम्बन्धवाचक सर्बनाम 'से'

	एकबचन		बहुबचन	
	ह्रस्व	दीर्घ	ह्रस्व	दीर्घ
कर्त्ता	तऊन, तौन	से	से	तिनकनी,
संबंध	तेह के आदि	तेकर, तेकरा, तेकरी	तिन्ह के, आदि	तिन्हकनी, तिन्हकर तिन्हकरा तिन्हकरी
बिकारी	तेह	तेकरा	तिन्ह	तिन्हकरा

(v) प्रस्नवाचक सर्बनाम—'के'

	एकबचन		बहुबचन	
	ह्रस्व	दीर्घ	ह्रस्व	दीर्घ
कर्त्ता	के, कौन कउन	के, को	के	किनकनी, किन्हकनी
सम्बन्ध	केह के, आदि	केकर, केकरा, केकरी	किन्हके	किन्हकर, किन्हकरा, किन्हकरी, किनकर
बिकारी	केह	केकरा	किन्ह	किन्हका

प्रस्नवाचक सर्बनाम—'का' इया 'की'

	एकबचन	
	पहिल रूप	दूसर रूप
कर्त्ता	का, की	कौची, कउची
कर्म	काहे के	कउची, कउची के
करन	काहे से	कौची से, कउची से
सम्प्रदान	काहे ला	कौची ला, कउची ला

	एकबचन	
	पहिल रूप	दूसर रूप
अपादान	काहे से	कौची से, कउची से
सम्बन्ध	काहे के, काहे केर	कौची के कउची केर
	केकरा,	कौची केर, कउची के, कउची केर
अधिकरन	काहे में	कौची में कउची में

(vi) ***अनिस्चयवाचक सर्बनाम***—'केऊ', कोई

	एकबचन	
	पहिला रूप	दूसरा रूप
कर्त्ता	केऊ, कोई	केहू
कर्म	केकरो के	कौनो के
करन	केकरो से	कौनो से
सम्प्रदान	केकरो ला	कौनो ला
अपादान	केकरो से	कौनो से
सम्बन्ध	केकरो	कौनो के
अधिकरन	केकरो में	कौनो में

अभ्यास के प्रस्न

1. सर्बनाम के परिभासा आउ एकर भेद के बरनन करऽ।
2. पुरुषवाचक के उत्तमपुरुस सर्बनाम में 'हम' के सब्भे रूप लिखऽ।

●

बिसेसन

जउन बिकारी सबद संग्या इया सर्बनाम के बिसेसता बतलावऽ हे, ओकरा बिसेसन कहल जा हे। **जइसे** : सुत्थर लइका, सुत्थर लइकी, आदि।

बिसेसन जउन संग्या इया सर्बनाम पद के बिसेसता बतलावऽ हे, ओकरा बिसेस्य कहल जा हे। **जइसे** : करिया कुत्ता, लमहर साँप, हरियर पेंड़, नयकी कनिआँ, ललकी साग आदि।

इहाँ करिया, लमहर, हरिअर, नयकी आउ ललकी बिसेसन हे जबकि कुत्ता, साँप, पेंड़ कनिआँ आउ साग बिसेस्य हे।

बिसेसन ***तीन प्रकार*** के होवऽ हे :

1. सार्बनामिक बिसेसन
2. गुनवाचक बिसेसन
3. संख्यावाचक बिसेसन

1. **सार्बनामिक बिसेसन** : पुरुसवाचक आउ निजवाचक सर्बनाम के छोड़ के बाकी सब्भे सर्बनाम के बेवहार बिसेसन रूप में हो हे। एही से एकरा सार्बनामिक बिसेसन कहल जा हे। नीचे कुछ प्रमुख सार्बनामिक बिसेसन के उदाहरन देवल जाइत हे :

ई, ऊ, कोई, केउ, कुच्छो, कउन, का, की, जे, अप्पन, अनकर सब्भे सार्बनामिक बिसेसन हे।

2. **गुनवाचक बिसेसन** : जउन सबद से संग्या के गुन, दसा, सोभाव आदि लच्छित होवऽ हे, ओकरा गुनवाचक बिसेसन कहल जा हे। ई बड़ीमनी होवऽ हे। एकरा में मुख्य ई प्रकार से हे :

काल : नया, पुरान, टटका, बासी, अगिला, पिछला, जड़ीहन आदि।

स्थान : उजाड़, चौरस, पुरवइया, पछिया, बिहारी, बंगाली आदि।

आकार : गोल, तिनकोन, नोखदार, चरखूँट, छवपहल, सोफ, टेढ़, बकनरल आदि

रंग : लाल, पीयर, हरियर, उज्जर, धुँधुर, चमकउआ आदि

दसा : दुबर, पातर, मोट, गीला, सुक्खल, रोगी, फरहर, छरहर आदि

गुन : निमन, खराब, जबून, पापी, दानी, पढ़ाकू, आदि

गुनवाचक बिसेसन के ह्रस्व रूप से सामान्य संग्या के बिसेसता परगट होवऽ हे। **जइसे** : ऊ नया साड़ी पेन्हले हइ।

दीर्घ रूप से संग्या बिसेस के बिसेसता परगट होवऽ हई। **जइसे** : ऊ नयका साड़ी पेन्हले हइ।

3. **संख्यावाचक बिसेसन** : जउन सबद से संग्या इया सर्बनाम के संख्या लच्छित होवे, ओकरा संख्यावाचक बिससेन कहल जा हे। **जइसे** : चार घोड़ा, डेढ़ रुपइया, दोगुना दाम आदि।

संख्यावाचक बिसेसन के मुख्य रूप से ***तीन भेद*** हे :

(क) निस्वित संख्या वाचक

(ख) अनिस्वित संख्या वाचक

(ग) परिमान वाचक

(क) **निस्चितसंख्या वाचक बिसेसन** : निस्चितसंख्या वाचक से बस्तु के निस्वित संख्या के समझ होवऽ हे। एकर ***पाँच भेद*** हे :

(i) गननावाचक : एक, दू, तीन आदि

(ii) क्रमवाचक : पहिला, दूसरा, तीसरा आदि

(iii) आबृत्तिवाचक : दोगुना, तेगुना, चौगुना आदि

(iv) समुदायवाचक : दुन्नो, तीनो, चारो आदि

(v) **प्रत्येकबोधक** : हर, एक-एक, दू-दू आदि

गननावाचक बिसेसन भी दू तरह के होवऽ हे : पूर्नांक बोधक आउ अपूर्नांक बोधक। एक, दू, तीन आदि पूर्नांक बोधक के उदाहरन हे तो पाव, अधिया, सवाई आदि अपूर्नांक बोधक के।

आवृत्तिवाचक बिसेसन ला हर, हरा, हारा, बार, बेर, बेरी जोड़ल जा हे। **जइसे** : एकहर, एकहरा, एकहारा, एकबार, एकबेर, एकबेरी आदि

(ख) **अनिस्चितसंख्यावाचक बिसेसन** : जउन संख्या वाचक बिसेसन से निस्वित संख्या के बोध न होवे ओकरा अनिस्चितसंख्यावाचक बिसेसन कहल जा हे। **जइसे** : दूसर, सब, बहुत, लाखों, लाखन, हजारन, कइएक आदि।

(ग) **परिमानवाचक बिसेसन** :जउन बिसेसन से कउनो चीज के नाप इया तउल के बोध होवऽ हे ओकरा परिमानवाचक बिसेसन कहल जा हे। **जइसे** : आउ, सब्भे, समूचे, थोड़ा, जादे, पूरा आदि।

अभ्यास के प्रस्न

1. बिसेसन के परिभासा देइत एकर भेद के बरनन करऽ।

2. नीचे लिखल के चार-चार उदाहरन दऽ :

(क) कालवाचक बिसेसन	(ख) स्थानवाचक बिसेसन
(ग) आकारवाचक बिसेसन	(घ) रंगवाचक बिसेसन
(ङ) दसावाचक बिसेसन	(च) गुनवाचक बिसेसन
(छ) क्रमवाचक बिसेसन	(झ) आवृत्तिवाचक बिसेसन

●

क्रिया

जउन बिकारी सबद से कोई काम करे इया होवे के भाव प्रकासित हो हे, क्रिया कहला हे। **जइसे** : हमनी सब हँसऽ ही।

इहाँ 'हँसऽ ही' सबद क्रिया हे काहे कि एकरा से 'हँसे' (हँसना) क्रिया के बोध हो हे।

क्रिया के भेद : रचना के दृस्टि से क्रिया के दू भेद हो हे:

(i) सकर्मक क्रिया (ii) अकर्मक क्रिया

(i) **सकर्मक क्रिया** : जउन क्रिया के फल कर्त्ता से निकल के कर्म पर पड़े अर्थात जेकरा में कर्म लगे ऊ सकर्मक क्रिया कहला हे। **जइसे** : सोहन गेंद 'फेंकऽ' हे।

इहाँ 'फेंकऽ हे' सकर्मक क्रिया हे काहे कि 'फेंके' (फेंकना) क्रिया के फल सोहन पर न पड़ के गेंद पर पड़ऽ हे।

(ii) **अकर्मक क्रिया** : जउन क्रिया करल इया होयल आउ ओकर फल दुन्नो कर्त्ते (कर्त्ता पर ही) पड़े अर्थात् जेकरा में कर्म न लगे, ऊ अकर्मक क्रिया कहला हे। **जइसे** : लइकन दउड़ऽ हथ।

इहाँ, 'दउड़े' क्रिया के फल लइकन पर पड़ऽ हे।

(ख) ब्युत्पत्ति के दृस्टि से क्रिया के दू भेद हो हे :

(i) मूल क्रिया (ii) जौगिक क्रिया

(i) **मूल क्रिया** : मूल क्रिया ऊ हे जे मूल धातु से बनऽ हे। **जइसे** : जा से जाए (जाना) आ से आवे (आना) खा से खाए (खाना) आदि।

(ii) **जौगिक क्रिया** : जउन क्रिया मूल धातु से न बन के जौगिक धातु (दूसर धातु) से बनऽ हे, ऊ जौगिक क्रिया कहला हे। **जइसे** : देवे से दिआवे, खाए से खिआवे आदि।

जौगिक क्रिया के ***तीन भेद*** हे :

(i) प्रेरनार्थक क्रिया

(ii) नामधातु क्रिया

(iii) संजुक्त क्रिया ।

(i) **प्रेरनार्थक क्रिया :** जउन क्रिया के सम्पादन में कर्त्ता पर दूसर अदमी के प्रेरना समझल जाए, ऊ प्रेरनार्थक क्रिया कहला हे। अइसन क्रिया के कर्त्ता खुद कर्म न करके दूसरा के करे ला प्रेरित करऽ हे। **जइसे :** राम पेड़ कटवावऽ हे।

(ii) **नामधातु क्रिया :** जउन धातु (क्रिया) 'संग्या–बिसेसन पद' बनऽ हे, ऊ नाम धातु कहला हे। **जइसे :** 'बात' संग्या-पद से बतिआना, 'ठंढा' बिसेसन-पद से ठंढाना आदि।

(iii) **संजुक्त क्रिया :** दू इया दूगो से अधिक धातु के मेल से बने वाला क्रिया संजुक्त क्रिया कहला हे। **जइसे :** ऊ खा चुकल। ऊ जा चुकल।

क्रिया के वाच्य

वाच्य क्रिया के ऊ रूप के कहल जा हे जेकरा से जानल जा हे कि क्रिया द्वारा कर्त्ता के बिसय में कुछ कहल गेल इया कर्म के बिसय में इया खाली भाव के बिसय में।

वाच्य के ***तीन प्रकार*** होवऽ हे :

(i) करतरी वाच्य (ii) कर्मवाच्य (iii) भाववाच्य

(i) **करतरीवाच्य :** करतरीवाच्य क्रिया के ऊ रूप के कहल जा हे जेकरा से जानल जा हे कि क्रिया के उद्देस्य ओकर कर्त्ता हे।

जइसे : पंडित पोथी 'बाँचऽ हथी'। लइकन दउड़ऽ हथ।

इहाँ 'बाँचऽ हथी' क्रिया पंडित के आउ 'दउड़ऽ हथ' क्रिया लइकन कर्त्ता के लिंग, बचन आउ पुरुस के अनुसार हे। करतरी वाच्य के क्रिया अकर्मक आउ सकर्मक दुन्नो हो हे।

(ii) **कर्मवाच्य :** क्रिया के ऊ रूप कर्मवाच्य कहला हे, जेकरा से जानल जा हे कि क्रिया के उद्देस्य ओकर कर्म हे।

जइसे : कपड़ा सियल जा हे। सनेस आजे भेजल गेलइ।

हमरा से ई भार न उठावल जायत।

इहाँ क्रिया के लिंग आउ बचन कर्म के लिंग आउ बचन के अनुसार हे। कर्मवाच्य के क्रिया सब्भे स्थिति में सकर्मक रहऽ हे।

(iii) **भाववाच्य :** क्रिया के ऊ रूप भाववाच्य कहला हे जेकरा से जानल जा हे कि क्रिया के उद्देस्य ओकर कर्त्ता इया कर्म न हे, बलुक खाली ओकर भाव हे। जइसे :

हमरा से बइठल न जतइ! धूप में चलल न जा हइ।

इहाँ कर्त्ता आउ कर्म के प्रधानता न हो के क्रिया के ही प्रधानता हे।

क्रिया के काल

क्रिया के काल : क्रिया के जउन रूप से समय के बोध हो हे, ऊ काल कहला हे।

काल के ***तीन भेद*** हो हे :

(i) बर्तमान काल (ii) भूतकाल (iii) भविस्यत काल

(i) **बर्तमान काल :** बर्तमान काल के क्रिया से चलइत समय के बोध होवऽ हे। **जइसे :**

हम फोटो देखऽ ही। तूँ दीदी के बोलावऽ हऽ।

किसान के खाय भेजल जा हइ।

(ii) **भूतकाल :** जउन क्रिया से बीतल समय के बोध होवऽ हे, ऊ भूतकाल के क्रिया कहला हे। **जइसे :**

हम तस्वीर देखली। तूँ दीदी के बोलैलऽ।

किसान के खाय भेजल गेलइ।

(iii) **भविस्यत काल :** जउन क्रिया से आवेवाला समय के सूचना मिलऽ हे, भविस्यत काल के क्रिया कहला हे। **जइसे :**

हम तस्वीर देखम। तू दीदी के बोलैबऽ। किसान के खाय भेजल जतइ।

क्रिया के पुरुस, लिंग आउ बचन

क्रिया के ***तीन पुरुस*** होवऽ हे :

(i) उत्तमपुरुस (ii) मध्यमपुरुस (iii) अन्यपुरुस

मगही भासा लिंग भेद के जटिलता से मुक्त होवऽ हे। एकरा में लिंग भेद के कारन कोई रूपान्तर न हो हे।

जइसे : मोहन पोथी पढ़ऽ हइ। राधा पोथी पढ़ऽ हइ।

इहाँ मोहन पुल्लिंग आउ राधा स्त्रीलिंग दुन्नो ला एके क्रिया 'पढ़ऽ हइ' आयल हे।

मगही में क्रिया में बचन भेद से भी रूपान्तर न होवऽ हे। **जइसे** :
राजा राज करऽ हथी। राजा सब राज करऽ हथी।

इहाँ पहिला वाक्य में 'राजा' एकबचन आउ दुसरका में 'राजा सब' बहुबचन में हे बाकि दुन्नो में एके क्रिया 'करऽ हथी' आयल हे।

कर्त्ता आउ कर्म के प्रति आदर भाव के अधार पर मगही भासा में क्रिया के रूपान्तर हो हे। ई लेल क्रिया के दू भेद हो जा हे: आदरवाचक आउ अनादर वाचक।

(कुछ लोग अनादरवाचक क्रिया के एकबचन आउ आदरवाचक क्रिया के बहुबचन के अन्तर्गत रखऽ हथ।) **जइसे** :

माली राजा के देखलकइन। माली नौकर के देखलकइ।

अभ्यास के प्रस्न

1. क्रिया के परिभासा दऽ आउ रचना के दृस्टि से क्रिया के भेद बतावऽ।
2. ब्युत्पत्ति के दृस्टि से क्रिया के भेद के बरनन करऽ।
3. वाच्य का हे? वाच्य के तीनो प्रकार पर प्रकास डालऽ।
4. क्रिया के काल कै गो होवऽ हे ? उदाहरण देके समझावऽ।

●

धातु-कोस

धातु	मगही क्रिया	हिन्दी क्रिया
आ	अनई	आना
खा	खनई	खाना
गा	गनई	गाना
चू	चुनई	चूना
छा	छनई	छाना
जा	जनई	जाना
जी	जनई	जीना
ढा	ढोनई	ढोना
द	देनई	देना
धो	धोनई	धोना
पा	पनई	पाना
पी	पिनई	पीना
बा	बोनई	बोना
रो	रोनई	रोना
ल, ले	लेनई	लेना
ला	लनई	लाना
सी	सिनई	सीना
से	सेनई	सेना
हो	होनई	होना
अँचा	अँचनई	अँचाना
अँट	अँटनई	अँटना
अँइठ	अँइठनई	ऐंठना

धातु	मगही क्रिया	हिन्दी क्रिया
अँउट	अँउटनई	औंटना
अड़	अड़नई	अड़ना
अलग	अलगनई	अलगना
अलगा	अलगनई	अलगाना
आँक	अँकनई	आँकना
आँच	अँचनई	आँचना
उग	उगनई	उगना
उठ	उठनई	उठना
उड़	उड़नई	उड़ना
उब	उबनई	ऊबना
औंघ	औंघनई	ऊँघना
ओट	ओटनई	ओटना
ओढ़	ओढ़नई	ओढ़ना
कह	कहनई	कहना
कर	करनई	करना
कस	कसनई	कसना
काछ	कछनई	काछना
काट	कटनई	काटना
कात	कतनई	कातना
काढ़	कढ़नई	काढ़ना
कूट	कुटनई	कूटना
कूत	कुतनई	कूतना

धातु	मगही क्रिया	हिन्दी क्रिया	धातु	मगही क्रिया	हिन्दी क्रिया
कूद	कुदनई	कूदना	चूम	चूमनई	चूमाना
कौंध	कौंधनई	कौंधना	टूट	टूटनई	टूटना
कील	किलनई	कीलना	ढाह	ढहनई	ढाहना
खप	खपनई	खपना	ढोला	ढोलनई	ढुलना
खिल	खिलनई	खिलना	तन	तननई	तनना
खिया	खियनई	खियाना	ताप	तपनई	तापना
खींच	खिंचनई	खींचना	तैर	तैरनई	तैरना
खीझ	खिझनई	खीझना	तोड़	तोड़नई	तोड़ना
खुल	खुलनई	खुलना	थूक	थुकनई	थूकना
उग	उगनई	उगना	दब	दबनई	दबना
उब	उबनई	उबना	देख	देखनई	देखना
ओट	ओटनई	ओटना	धर	धरनई	धरना
खेल	खेलनई	खेलना	नचा	नचनई	नचाना
खोंस	खोंसनई	खोंसना	नट	नटनई	नटना
गढ़	गढ़नई	गढ़ना	नपा	नपनई	नपना
गल	गलनई	गलना	नाथ	नथनई	नाथना
गिर	गिरनई	गिरना	नट	नटनई	नटना
खेव	खेनई	खेना	निरा	निरनई	निराना
चल	चलनई	चलना	पका	पकनई	पकाना
चाह	चहनई	चाहना	पच	पचनई	पचना
चिप	चिपनई	चिपना	पढ़	पढ़नई	पढ़ना
चाभ	चभनई	चिभना	पला	पलनई	पलना
चिब	चिबनई	चबाना	पटा	पटनई	पटाना
चूक	चुकनई	चूकना	पाल	पलनई	पालना
चूम	चुमनई	चूमना	पिसा	पिसनई	पीसना

धातु	मगही क्रिया	हिन्दी क्रिया	धातु	मगही क्रिया	हिन्दी क्रिया
पोंछ	पोंछनई	पोंछना	जुड़	जुड़नई	जुड़ना
पोत	पोतनई	पोतना	जेम	जेमनई	जीमना
फब	फबनई	फबना	जोड़	जोड़नई	जोड़ना
फर	फरनई	फलना	जोत	जोतनई	जोतना
फंस	फंसनई	फंसना	जोह	जोहनई	जोहना
दुह	दुहनई	दुहना	झड़	झड़नई	झड़ना
फांक	फंकनई	फांकना	झल	झलनई	झलना
फाड़	फाड़नई	फाड़ना	झाँक	झँकनई	झाँकना
फिर	फिरनई	फिरना	झुक	झुकनई	झूकना
फींच	फिंचनई	फींचना	झूम	झुमनई	झूमना
फुका	फुकनई	फुकना	झूल	झूलनई	झूलना
फुला	फुलनई	फूलाना	झोंक	झोंकनई	झोंकना
बांच	बँचनई	बाँचना	टिक	टिकनई	टिकना
छेक	छेकनई	छेंकना	टिप	टिपनई	निसाना
छेड़	छेड़नई	छेड़ना	टेक	टेकनई	टेकना
छेद	छेदनई	छेदना	टेर	टेरनई	टेरना
छोड़	छोड़नई	छोड़ना	टोक	टोकनई	टोकना
जग	जगनई	जागना	ठूँस	ठूँसनई	ठूँसना
जड़	जड़नई	जड़ना	ठग	ठगनई	ठगना
जप	जपनई	जपना	ठेक	ठेकनई	स्पर्श होना
जम	जमनई	जमना	डर	डरनई	डरना
जर	जरनई	जलना	डाँट	डँटनई	डाँटना
जीत	जितनई	जीतना	डाल	डलनई	डालना
जुट	जुटनई	जुटना	डूब	डूबनई	डूबना

अव्यय

अव्यय ऊ सबद हे, जेकर रूप में लिंग, बचन, पुरुस आउ कारक के कारन कोई परिवर्तन न होय। **जइसे :** कल, बिहान, कम, जादे आदि।

अव्यय के ***चार भेद*** होवऽ हे :

(1) क्रियाबिसेसन

(2) सम्बन्धसूचक

(3) समुच्चयबोधक

(4) बिस्मयादिबोधक

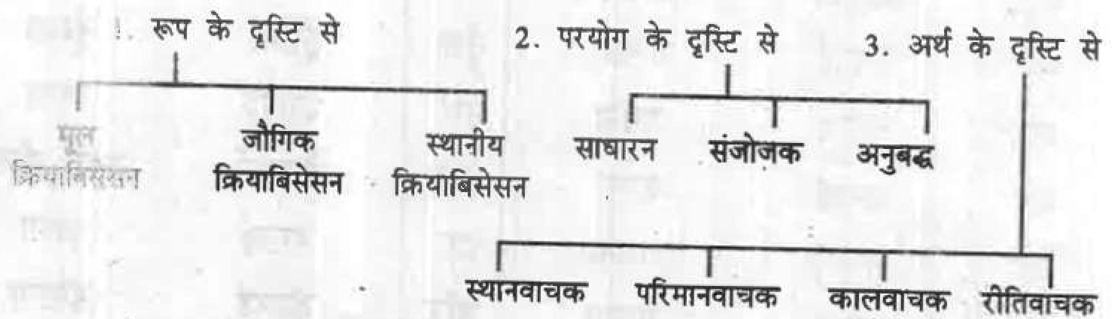
(1) **क्रियाबिसेसन** : क्रियाबिसेसन ऊ अव्यय हे, जेकरा से क्रिया, बिसेसन इया क्रियाबिसेसन के बिसेसता के बोध होवे। **जइसे :**

(क) राम **गते–गते** चलऽ हे।

(ख) ऊ **बड़ी** निमन अभिनय करऽ हे।

इहाँ 'गते–गते' आउ 'बड़ी' क्रियाबिसेसन हे।

क्रियाबिसेसन के बर्गीकरन



(1) **रूप के दृस्टि से क्रियाबिसेसन :**

(अ) अइसन क्रियाबिसेसन जउन दूसर सबद इया प्रत्यय के मेल से न बने, मूल क्रियाबिसेसन कहल जा हे।

जइसे : ठीक, दूर, भी, तऽ, फिन अदि।

(आ) अइसन क्रियाबिसेसन जउन कउनो दूसर सबद में प्रत्यय इया सबद जोड़े से बने; जौगिक क्रियाबिसेसन कहला हे। **जइसे :** मन से, चाल से, हाथे–हाथ आदि।

जौगिक क्रियाबिसेसन नीचे लिखल सबदन के मेल से बनऽ हे :

(क) दू अलग संग्या के जोग से : भीतर–बाहर, दिने–राते।

(ख) दू अलग क्रियाबिसेसन के जोग से : हिआँ–हुआँ, जखनी–तखनी, जने–तने।

(ग) संग्या के पुनरुक्ति से : हाथे–हाथ, घंटे–घंटे, घरे–घरे।

(घ) बिसेसन के पुनरुक्ति से : नीक–नीक, तनी–तनी, भूठ-भूठ, बेस–बेस, उरेहल–उरेहल।

(ङ) क्रियाबिसेसन के पुनरुक्ति से : आस्ते–आस्ते, जखनी–जखनी, जोर–जोर।

(च) दू क्रियाबिसेसन के बीच 'न' लगाके : कखनी-न-कखनी, कुछो-न-कुछो।

(छ) अनुकरनवाचक सबद के पुनरुक्ति से : पटापट, चटाचट, फटाफट, धड़ाधड़।

(ज) संग्या आउ बिसेसन के मेल से : हरघड़ी, एकेजोरे, दूतुरी।

(झ) अव्यय आउ दूसर सबद के जोग से : अनठेकान, अनजानल, अनसुनल।

(ञ) पूर्वकालिक कृदन्त आउ बिसेसन के जोग से:-थोड़ा करे, बिसेस करे।

(इ) अइसन क्रियाबिसेसन जे बिना रूप बदलले कोई खास जगह बेवहार में आवे, स्थानीय क्रियाबिसेसन कहला हे। **जइसे :**

तूँ **कपार** मत खा। हमनी बेकारे **माथा** कूटइत ही।

इहाँ 'कपार' आउ 'माथा' स्थानीय क्रियाबिसेसन हे।

(2) परयोग के दृस्टि से क्रियाबिसेसन :

(अ) जउन क्रियाबिसेसन वाक्य में स्वतंत्र रूप से बेवहार में आवऽ हे, सामान्य क्रियाबिसेसन कहला हे।

जइसे : तूँ **बहुत** बकऽ हऽ। ऊ **कन्ने** जाएत?

इहाँ 'बहुत' आउ 'कन्नें' सामान्य क्रियाबिसेसन हे।

(आ) जउन क्रियाबिसेसन कउनो उपवाक्य से जुड़ल रहऽ हे, संजोजक क्रियाबिसेसन कहला हे। **जइसे :**

जेन्ने जाय ला हवऽ, **ओन्ने** जा।

जेतना बघारलऽ, **ओतना** देखैलऽ नऽ।

इहाँ 'जन्ने' 'आउ' 'ओन्नें' 'जेतना' आउ 'ओतना' संजोजक क्रियाबिसेसन हे।

(इ) जउन क्रियाबिसेसन के परयोग निस्चय के अर्थ में कउनो सबद भेद के साथ होवऽ हे, ओकरा अनुबद्ध क्रियाबिसेसन कहल जा हे। **जइसे :**

हम **ही** अइली हे।

हम **हूँ** बोल के रहम।

इहाँ 'ही' आउ 'हूँ' अनुबद्ध क्रियाबिसेसन हे।

(3) अर्थ के दृस्टिं से क्रियाबिसेसन :

(अ) जउन क्रियाबिसेसन से स्थान के बोध होवे, ओकरा स्थानवाचक क्रियाबिसेसन कहल जा हे। **जइसे :** हिआँ, हुँआ, जहाँ, कहाँ, आगु, अगाड़ी, पाछे, पछाड़ी, नगीचे, भीरे, भीरू, कन्ने, केन्ने, जन्ने, तन्ने आदि।

(आ) जउन क्रियाबिसेसन से परिमान के बोध होवऽ हे, परिमानवाचक क्रियाबिसेसन कहल जा हे। **जइसे :** बेसी, कम, बड़ा, भारी, खूब, तन्नी, खाली, चाहे, एतना, ओतना, केतना, जेतना, तेतना, सेतना आदि।

(इ) जउन क्रियाबिसेसन से समय के बोध होवे, ओकरा कालवाचक क्रियाबिसेसन कहल जा हे। **जइसे :** काल, काल्ह, बिहान, परसूँ, फिन, फिनु, फिरू, तुरते, भोरे, तड़के, अनमुनाहे, अबेर, कुबेर, सबेर, पहिले, पाछे, रोज, सब्भेदिन, घरी-घरी, बेर-बेर, संजोग आदि।

(ई) जउन क्रियाबिसेसन से प्रकार, निस्चय, अनिस्चय, स्वीकार, कारन, निसेध, अवधारना आदि के बोध होवे, रीतिवाचक क्रियाबिसेसन कहल जा हे।

जइसे : अइसे, कइसे, जइसे, तइसे, आस्ते-आस्ते, सच्चे, ठीक, नीमन, बेस, एकरा से, काहे कि, भर, तलक, तो, ही, मति, मतू, मत, न, नहीं, नईं, ने आदि।

2. **सम्बन्धसूचक** : जउन अब्यय कोई संग्या जइसन बेवहरित सबद के बाद आ के ओकर सम्बन्ध वाक्य के दूसर सबद के साथ स्थापित करे, ओकरा सम्बम्धसूचक कहल जा हे। **जइसे** :

रात **तलक**, दिन **भर**, परिवार **समेत** आदि।

सम्बन्धसूचक अब्यय के बर्गीकरन तीन दृस्टि से कैल जा हे :

(क) प्रयोग (ख) अर्थ (ग) ब्युत्पत्ति

(क) प्रयोग के दृस्टि से एकर दू *भेद* होवऽ हे :

(i) **सम्बद्ध सम्बन्धसूचक अब्यय** : अइसन अब्यय जेकर परयोग संग्या के बिभक्ति के बाद कैल जा हे, सम्बद्ध सम्बन्धसूचक अब्यय कहला हे।

जइसे :

जानवर के **जइसन**, सन्तान के **बिना**, पियास के **मारे**।

(ii) इहाँ 'जइसन', 'बिना', 'मारे' सम्बद्ध सम्बन्धसूचक अब्यय हे।

(ii) **अनुबद्ध सम्बन्धसूचक अब्यय** : अइसन अब्यय के परयोग संग्या के बिकृत रूप के बाद हो हे। **जइसे** : थरिया भर भात, बेटिया लागी दामाद इहाँ 'भर' आउ 'लागी' अनुबद्ध सम्बन्धसूचक हे।

(ख) अर्थ के दृस्टि से सम्बन्धसूचक अब्यय के नीचे लिखल भेद होवऽ हे :

कालसूचक : पहिले, पीछू, बाद।

दिसासूचक : तरफ, पार, ओर।

स्थानसूचक : नीच, ऊपर, भीतर, बाहर।

साधनसूचक : सहारे, जरिए।

हेतुसूचक : ला, लेल, कारन।

बिसयसूचक : लेखे, मद्धे।

भिन्नतासूचक : बिनु, अलावा।

बिनिमयसूचक : जगह, बदले।

सादृस्यसूचक : नियर, जकत, ऐसन, सन, नाईं।

बिरोधसूचक : उलटे, खिलाफ

सहजोगसूचक : संग, साथ, समेत

संग्रहसूचक : तलक, भर, लौं

तुलनासूचक : आगे, सामने, बनिस्पत

(ग) ब्युत्पत्ति के दृस्टि से सम्बन्धसूचक अब्यय के नीचे लिखल भेद होवऽ हे :

(i) मूल सम्बन्धसूचक : तलक, तक, बिनू, समेत

(ii) जौगिक सम्बन्धसूचक :

संग्या से : लेखे, ओर, लेल, ले, बदे

बिसेसन से : सन, नियर, नियन, समान, ऐसन

क्रियाबिसेसन से : नीचे, ऊपर, पास, पाछे, तरे

क्रिया से : मारे, जाने, करके आदि।

3. **समुच्चयबोधक** : जउन अब्यय दू इया अधिक वाक्य के जोड़े इया अलगे करे, ओकरा समुच्चयबोधक कहल जा हे। **जइसे :**

सचिन **आउ** राहुल खेलइत हथ।

हम जइती **बाकि** बीमार पड़ गेली।

इहाँ 'आउ', 'बाकि' दुन्नो समुच्चयबोधक अब्यय हे।

समुच्चयबोधक अब्यय के दू भेद होवऽ हे :

(क) समानाधिकरन (ख) ब्यधिकरन

(क) **समानाधिकरन** : मुख्य वाक्य आउ उपवाक्य के जोड़े वाला अब्यय के समानाधिकरन अब्यय कहल जा हे। एकर चार भेद हे :

(i) **संजोजक** : एकरा से दू सबद, उपवाक्य इया वाक्य के सामान्य जोग के पता चलऽ हे। **जइसे :** सोहन के रोटी पसंद हे **आउ** मोहन के भात।

संजोजक अब्यय के उदाहरन : आउ, एवं, व, भी, आ, ओ, औ, आउ आदि।

(ii) **बियोजक :** एकरा से दू इया दू से अधिक सबद, उपवाक्य इया वाक्य में से कोई एक के ग्रहन इया त्याग के बोध होवऽ हे।

जइसे : राधा **इया** मोहन नाचत।

बियोजक अब्यय के उदाहरन : चाहे, इया, या, वा, अथवा, न कि।

(iii) **बिरोधदर्सक :** ई अब्यय दू उपवाक्य इया वाक्य में बिरोध इया असमानता देखावइत कोई एक उपवाक्य इया वाक्य के ग्रहन इया बोध करावऽ हे। **जइसे :**

हम अइली **बाकि** तूँ न अयलऽ।

बिरोधदर्सक अब्यय के उदाहरन : बाकि, पर, तइयो।

(iv) **फलदर्सक :** एकरा से पता चलऽ हे कि अगिला वाक्य के अर्थ पिछिला वाक्य के अर्थ के फल हे। **जइसे :**

हम न गेली, **एकरा चलते** ऊ ऐलन।

फल दर्सक अब्यय के उदाहरन : से, ई लेल, इहे गुने आदि।

(ख) **ब्यधिकरन :** जउन समुच्चयबोधक अब्यय एक इया एक से अधिक उपवाक्य के मुख्य वाक्य से जोड़ऽ हे, ब्यधिकरन कहला हे।

एकर ***चार भेद*** हे :

(i) **उद्देस्यदर्सक :** अइसन समुच्चयबोधक के बाद आवे वाला वाक्य पहिले के उद्देस्य बतावऽ हे। **जइसे :** तूँ ओकर पच्छ में गवाही दे दऽ, **जेकरा से** ऊ छूट जाए।

प्रमुख उद्देस्य दर्सक हे : जेकरा से, जेकि, ताकि

(ii) **संकेतदर्सक :** ई **समुच्चयबोधक** से जे दूगो वाक्य जोड़ल जा हे, ओकरा में एक के संकेत दूसर में पावल जा हे। **जइसे :**

जे मेहनत करबऽ, तऽ सफलता मिलबे करत।

संकेतदर्सक के उदाहरन : जे, जदि, अगर, चाहे, तो आदि

(iii) **स्वरूपदर्सक :** अइसन अब्यय से दू जुड़ल वाक्य इया सबद में पहिला वाक्य इया सबद के स्वरूप बादवाला से स्पस्ट हो जा हे। **जइसे :** डर हे **'कि'** कहीं ऊ चल नऽ जाए।

स्वरूपदर्सक के उदाहरन : कि, यानि, जइसे, मानो, अर्थात् ।

(iv) **कारनवाचक अब्यय** : एकरा से कारन के पता चलऽ हे। **जइसे** : ऊ सूत गेल **काहे कि** ओकर मन खराब हल। **कारनवाचक अब्यय के उदाहरन** : काहे कि, जेकि, इसलिए कि।

4. **बिस्मयादिबोधक** : अइसन अब्यय जेकरा से, सोक, आस्चरज आदि मन के भाव परगट होवे ओकरा **बिस्मयादिबोधक** अब्यय कहल जा हे। **जइसे** : ओह, ठीक, बेस, छि: आदि।

बिस्मयादि बोधक के प्रमुख भेद नीचे लिखल हे :

(i) **हर्सबोधक** : अहा!, वाह!, आहा!, खूब!

(ii) **अचरजबोधक** : बाप रे!, अरे! हैं! ऐं! का!

(iii) **सोकबोधक** : आह!, उह!, बाप रे!, मइया गे!, हाय राम!

(iv) **तिरस्कारसूचक** : हट!, दूर!, छिह!, चुप!

(v) **स्वीकारबोधक** : हाँ!, बेस!, जी!, ठीक!

(vi) **अनुमोदनबोधक** : ठीक!, वाह!, सबास!, अच्छा!

(vii) **पुरुस के संबोधनसूचक** : अरे!, अहो!, अजी!, रे!

(viii) **स्त्री के संबोधनसूचक** : गे!, अगे!, अहे!, अहो!, अजी!

अभ्यास के प्रस्न

1. अब्यय केकरा कहल जा हे? एकर भेद बतावऽ।
2. क्रियाबिसेसन केकरा कहल जा हे? एकर बर्गीकरन करऽ।
3. संबंधसूचक केकरा कहल जा हे? संबंधसूचक अब्यय के बर्गीकरन करऽ।
4. समुच्चयबोधक केकरा कहल जा हे? एकर भेद के बरनन करऽ।
5. बिस्मयादिबोधक केकरा कहल जा हे? एकर प्रमुख भेद के उदाहरन दऽ।

●

सबद रचना

सबद रचना के नीचे लिखल ***पाँच बिधि*** मानल जा हे :

1. उपसर्ग
2. प्रत्यय
3. सन्धि
4. समास
5. पुनरुक्ति

ई अध्याय में उपसर्ग, प्रत्यय, संधि, समास आउ पुनरुक्ति के परिचय देवल जायत।

उपसर्ग : उपसर्ग ऊ सबदांस हे जे कोई सबद के पहिले लग के ओकर स्वरूप आउ अर्थ में परिवर्तन ला देवऽ हे। **जइसे :** मूल सबद 'जोग' में सं, बि, सु आउ कु उपसर्ग लगाके क्रमसः संजोग, बियोग, सुजोग आउ कुजोग सबद बनावल जा हे।

उपसर्ग के कइएक बिसेसता होवऽ हे। **जइसे :**

1. स्वतंत्र रूप से एकर परयोग न होवे।

2. सबद के पहिले लग के ही ई अर्थवान हो हे।

3. उपसर्ग के जोग से कभी तो सबद के अर्थ में एगो नया बिसेसता आ जा हे आउ कभी न भी आवे। जइसे भ्रमन के अर्थ में परि उपसर्ग लगैला पर भी कोई परिवर्तन न होवे।

मगही के जादेतर उपसर्ग संस्कृत उपसर्ग के अपभ्रंस हे जे तद्भव सबद के पहिले लगल हे। संस्कृत के उपसर्ग के परयोग संस्कृत के तत्सम सबद के जोरे आउ उर्दू के उपसर्ग के परयोग उर्दू सबद के जोरे करके मगही में परयोग कैल जा हे।

कुछ प्रमुख उपसर्ग आउ ओकरा से बनल सबद के सूची नीचे देल जाइत हे :

उपसर्ग	अर्थ	बनल सबद
अ	निसेध	अकाल, अचक्का, अचेत, अथाह, अनजान, अनपढ़, अबोध,अभाव, अलग आदि।
अध	आधा	अधकचरा, अधकपारी, अधसिझु, अधमरल आदि।
अन	निसेध	अनगढ़, अनगिनती, अनजान, अनदेखल, अनचाहल, अनपढ़, अनबल, अनठेकान आदि।
उन	एक कम	उनइस, उनसठ, उनचालीस आदि।
औ	हीन, निसेध	औगुन, औघट, औसर आदि।
क	बुरा	कपूत, करसी आदि।
कु	बुरा	कुकर्म, कुढंग, कुदिन आदि।
दु	बुरा	दुबर, दुशासन, आदि।
दुर्	बुरा	दुर्दिन, दुर्नाम, दुर्भाग्य आदि।
नि	कभी, निसेध, रहित	निकम्मा, निगोरा, निडर, निहत्था आदि।
बिन	बिना	बिनकरनी, बिनदेखा, बिनकैल, बिनबिआहा आदि।
भर	पूरा	भरदिन, भरपेट, भरपूर, भरसक आदि।
स	अच्छा, साथ	सपूत, सहित, समेत आदि।
सु	अच्छा	सुघड़, सुजस, सुदिन, सुमंगली आदि।
सौ	अच्छा	सौभाग्य आदि।

संस्कृत के तत्सम सबद में संस्कृत उपसर्ग जोड़ के बनावल सबद के उदाहरन :

अति	अधिक	अतिकाल, अत्याचार, अतिशय, अत्यन्त आदि।
अधि	उपर, समीपता	अधिक, अधिकार, अधिपति, अध्यक्ष आदि।
अनु	क्रम, बाद	अनुकूल, अनुचर, अनुज, अनुपात, अनुसासन, अनुवाद आदि।
अप	हीनता, अभाव	अपकार, अपयस, अपमान, अपवाद, अपराध आदि।

उपसर्ग	अर्थ	बनल सबद
अभि	निकटता, ओर इच्छा, अधिकता	अभिमान, अभ्युदय, अभिप्राय, अभ्यास, अभियोग, अधिकता, अभिलाषा आदि।
अव	हीनता, दशा	अवगत, अवतार, अवनति अवलोकन, आजन्म, आमरन, आरंभ, आशक्त आदि।
आ	विपरीत, समेत, ओर	आक्रमण, आगमन, आचरण, आजीवन, आजन्म, आमरण, आरंभ, आरक्त आदि।
उत्, उंद्	ऊपर, प्रगति	उत्कर्ष, उद्यम, उद्धत, उत्तम, उत्पन्न, उत्साह, उद्गार आदि।
उप	समीप, समान, हीन	उपकार, उपदेश, उपनाम, उपभेद, उपवन, उपमंत्री, उपस्थित, उपासना आदि।
दुर, दुस्	बुरा, कठिन	दुष्कर्म, दुर्गम, दुराचार, दुर्जन, दुर्दशा, दुर्लभ, दुस्साहस आदि।
नि	नीचे, बाहर	निमन, निम्न, निवारन, निवास, निषेध आदि।
निर्, निस्	निषेध, रहित	निर्जीव, निर्भय, निर्दोर्ष, नीरोग, निर्मल, निरपराध, निर्वाह आदि।
परा	अनादर, नाश	पराक्रम, पराजय, पराभव, परास्त, आदि।
परि	चारो तरफ, त्याग, पूर्ण	परिक्रमा, परिचय, परिजन, परिदोष, परिवर्तन, परिणाम, परिमाण आदि।
प्र	ऊपर, आगे, गति, अधिक, यश	प्रचार, प्रमाण, प्रपंच, प्रभाव, प्रबल, प्रलय, प्रसिद्ध, प्रयोग, प्रसार, अधिक, प्रलाप आदि।
प्रति	हरेक, बराबरी, विरोध	प्रतिकूल, प्रतिदान, प्रतिनिधि, प्रत्येक, प्रत्यक्ष प्रतिक्षण आदि।
सम्	संयोग, पूर्णता	संस्कार, संस्कृत, संकल्प, संगम, संग्राम, सम्मुख, सम्मेलन, संतोष, संन्यास, संयोग आदि।
सु	अच्छा, सुखी	सुकर्म, सुगम, सुजन, सुवास, सुलभ आदि।

उर्दू उपसर्ग

अल	निश्चित	अलगरज, अलबत्ता
ऐन	ठीक	ऐनमौका, ऐनवक्त
कम	थोड़ा	कमउम्र, कमखर्च, कमजोर, कमसिन, कमबखत आदि।।
खुश	अच्छा	खुशकिस्मत, खुशखबरी, खुशदिल, खुशनसीब, खुशमिजाज, खुशगवार आदि।
गैर	भिन्न, निषेध	गैरकानूनी, गैरवाजिब, गैरहाजिर, गैरसरकारी आदि।
दर	वास्तव में	दरकार, दरअसल, दरमियान, दरहकीकत आदि।
ना	अभाव, तुच्छ	नाचीज, नाराज, नादान, नालायक, नासमझ आदि।
बा	साथ	बाअदब, बाकलम, बाकायदा आदि।
ब	अनुसार	बतौर, बदौलत, बनाम आदि।
बद	बुरा,	बदकिस्मत, बदबू, बदनाम, बदमाश, बदनीयत, बदहवास आदि।
बे	बिना, बहुत	बेइमान, बेहतर, बेशुमार, बेलगाम, बेहद आदि।
ला	बिना	लाचार, लाजवाब, लापता, लापरवाह आदि।
सर	प्रधान	सरताज, सरपंच, सरदार, सरहद आदि।
हम	समान	हमजोली, हमदर्द, हमदम, हमसफर, हमसाया आदि।
हर	हरेक	हरघड़ी, हरदम, हररोज, हरतरफ, हरसाल आदि।

उर्दू के कुछ उपसर्ग जे मगही सबद जउरे लगावल जा हे :

बे	निषेध	बेकल, बेजोड़, बेचैन आदि।
सर	मुख्य	सरकार, सरफिरा आदि।
हर	प्रत्येक	हरएक, हरदिन, हरकोई आदि।

प्रत्यय

प्रत्यय के परिभासा : प्रत्यय ऊ सबदांस हे, जे कोई सबद के अन्त में लग के ओकर स्वरूप आउ अर्थ में परिवर्तन ला दे हे।

जइसे :

सबद	प्रत्यय	बनल सबद
चल	अन	चलन
बात	अक्कड़	बतक्कड़
देख	आवट	देखावट
मिल	आवट	मिलावट

मुख्य रूप से प्रत्यय ***दू प्रकार*** के होवऽ हे :

1. कृत् प्रत्यय 2 तद्धित प्रत्यय।

1. कृत् प्रत्यय : क्रिया इया धातु के अन्त में लगेवाला प्रत्यय के कृत् प्रत्यय कहल जा हे आउ ओकर जोग से बनल सबद के कृदन्त कहल जा हे। एकरा से क्रिया इया धातु के, सबद के नया रूप मिल जा हे। कृत् प्रत्यय से 'संग्या' आउ 'बिसेसन' बनऽ हे। **जइसे :**

प्रत्यय	क्रिया इया धातु	सबद
हार	होना	होनहार
वैया	रख	रखवैया (संग्या)
अक्कड़	भूलना	भुलक्कड़ (बिसेसन)
आलू	झगड़ना	झगड़ालू (बिसेसन)

क्रिया पद के अन्त में कृत् प्रत्यय के मेल से चार प्रकार के संग्या बनऽ हे :

(क) करतरीवाचक (ख) कर्मवाचक (ग) करनवाचक (घ) भाववाचक

(क) **करतरीवाचक संग्या :** प्रत्यय के मेल से निरमित जउन कृदन्त संग्या से कर्त्ता के बोध होवऽ हे ओकरा करतरीवाचक संग्या कहल जा हे। क्रिया में प्रत्यय लगा के एकरा अइसे बनावल जा हे :

प्रत्यय	क्रिया इया धातु	करतरीवाचक संग्या
अक	गाना	गायक
वैया	लिखना, गाना	लिखवैया, गवैया

प्रत्यय	क्रिया इया धातु	करतरीवाचक संग्या
री	काटना	कटारी
अन	गह	गहन
आ	भूँजना	भूँजा
स्थ	गृह	गृहस्थ
इया	धुनना, लखना	धुनिया, लखिया
एरा	लूटना	लुटेरा
का	उचकना	उचक्का

करतरीवाचक बिसेसन : करतरीवाचक बिसेसन बनावे ला धातु इया क्रिया में प्रत्यय लगावल जा हे :

प्रत्यय	क्रिया इया धातु	करतरीवाचक बिसेसन
आऊ	टिक्, जड़्	टिकाऊ, जड़ाऊ
आक	तैर्	तैराक
आकू	लड़्, उड़्	लड़ाकू, उड़ाकू
आड़ी	खेल्	खेलाड़ी
आलू	झगड़्	झगड़ालू
इया	बढ़्, घट्	बढ़िया, घटिया
इयल	अड़्, मर्	अड़ियल, मरियल
ऐत	डाका	डकैत
वाला	पढ़्	पढ़ेवाला
ओड़	हँस्	हँसोड़
अक्कड़	पी, भूल्	पियक्कड़, भुलक्कड़
आवन	सुहा, लुभा	सुहावन, लुभावन
सार	मिलन	मिलनसार
हार	रखन	राखनहार

(ख) **कर्मवाचक संग्या** : प्रत्यय के जोग से बनल जउन कृदन्त से कर्म के बोध होवऽ हे, ओकरा कर्मवाचक कृदन्त संग्या कहल जा हे।

जइसे :

प्रत्यय	क्रिया/धातु	कर्मवाचक संग्या
ना	ओढ़	ओढ़ना
नी	चाट	चटनी
औना	खेल	खिलौना

(ग) **करनवाचक संग्या** : प्रत्यय के मेल से बनल जउन कृदन्त संग्या से करन के ग्यान होवऽ हे, ओकरा करनवाचक कृदन्त संग्या कहल जा हे।

जइसे :

प्रत्यय	क्रिया इया धातु	करनवाचक संग्या
आ	ठेल्, भूल,	ठेला, भूला
आनी	मथ्	मथानी
ई	खेते, रेत	खेती, रेती
ऊ	भाड़ू	भाड़ू
औटी	कस्	कसौटी
न	बेल	बेलन

(घ) **भाववाचक संग्या** : प्रत्यय के मेल से बनल जउन कृदन्त संग्या से भाव के बोध होवऽ हे, ओकरा भाववाचक कृदन्त संग्या कहल जा हे। **जइसे :**

प्रत्यय	क्रिया इया धातु	भाववाचक संग्या
अंत	गढ़्	गढ़ंत
अ	फेर् घेर्	फेर, घेर
आ	जौड़्	जोड़ा
आई	पढ़	पढ़ाई
आन	उठ्	उठान
आप	मिल्	मिलाप
आव	लग्	लगाव

2. तद्धित प्रत्यय : तद्धित ऊ प्रत्यय हे, जे संग्या इया बिसेसन के अन्त में लगावल जा हे। तद्धित प्रत्यय के जोग से बनल सबद के 'तद्धितान्त' कहल जा हे। **जइसे :**

प्रत्यय	**क्रिया**	**तद्धितान्त रूप**
आई	पंडित, उँचा	पंडिताई, ऊँचाई
पना	लड़का, पागल	लड़कपना, पागलपना

तद्धित प्रत्यय के कई रूप होवऽ हे :

(क) **भाववाचक संग्या :** भाववाचक तद्धितीय प्रत्यय नीचे लिखल हे :

प्रत्यय	**संग्या**	**तद्धितान्त रूप**
आ	बोझ, बजाज	बोझा, बजाजा
आई	पंडित	पंडिताई
आन	धड़	धड़ान
आइन	दूध	दुधाइन
पा	बूढ़ा	बुढ़ापा

(ख) **करतरीवाचक संग्या :** संग्या के अन्त में तद्धित प्रत्यय लगा के करतरीवाचक तद्धित संग्या बनऽ हे। **जइसे :**

प्रत्यय	**सबद**	**तद्धितान्त रूप**
आर	लोहा	लोहार
आरी	खेल	खेलारी
इया	दुख	दुखिया
ई	तेल	तेली
एरा	लूट	लुटेरा
एड़ी	गाँजा	गँजेड़ी

(ग) **ऊनवाचक संग्या :** ऊनवाचक संग्या से पदार्थ के छोटापन, हीनता आदि भाव परगट होवऽ हे। **जइसे :**

प्रत्यय	**सबद**	**तद्धितान्त रूप**
आ	बाबू	बबुआ
ई	टोकरा	टोकरी

इया	लोटा	लोटिया
ओला	खाट	खटोला
ड़ा	चाम	चमड़ा
क	ढोल	ढोलक

(घ) **अपत्यवाचक (संतानवाचक) संग्या** : अपत्यवाचक तद्धित प्रत्यय के परयोग प्राय: संस्कृत नियन होवऽ हे। **जइसे :**

प्रत्यय	**सबद**	**तद्धितान्त रूप**
अ	मनु	मानव
इ	दसरथ	दासरथि
ई	दयानंद	दयानंदी
एय	राधा	राधेय

(ङ) **सम्बन्धवाचक संग्या** : संग्या के अन्त में तद्धित प्रत्यय जोड़ के सम्बन्धवाचक संग्या बनावल जा हे। **जइसे :**

प्रत्यय	**सबद**	**तद्धितान्त रूप**
हाल	नाना	ननिहाल
औती	बाप	बपौती
जा	भाई	भतीजा
एल	नाक	नकेल
आल	ससुर	ससुराल
औटी	चूना	चुनौटी

(च) **गुनवाचक बिसेसन :** गुनवाचक बिसेसन में प्रत्यय जोड़ के अइसे बनऽ हे :

प्रत्यय	**सबद**	**तद्धितान्त रूप**
आ	भूख	भूखा
आलू	झगड़ा	झगड़ालू
ई	देहात	देहाती

इक	वर्ष	वार्षिक
ईला	रंग	रंगीला
इया	पटना	पटनिया
ऊ	बाजार	बाजारू

समास

परिभासा : जब दू इया दू से अधिक सबद अप्पन बीच के बिभक्ति–चिह्न के छोड़ के एक साथ मिल जा हे, तो ओकर मेलं के 'समास' कहल जा हे। **जइसे :**

पूजाघर = पूजा के घर,
देसभक्त = देस के भक्त,
गंगाजल = गंगा के जल,
बिद्यालय = बिद्या के घर,

समास के ***छौ भेद*** होवऽ हे :

1. तत्पुरुस,
2. कर्मधारय,
3. द्विगु,
4. बहुब्रीहि,
5. द्वन्द्व
6. अब्ययीभाव।

1. **तत्पुरुस समास :** जउन समास के अंतिम पद प्रधान होवऽ हे, ओकरा 'तत्पुरुस समास' कहल जा हे **जइसे :**

राजमंत्री नीमन राज चलावऽ हथ।

तत्पुरुस समास के भेद :

बिभक्ति के अनुसार तत्पुरुष समास के छौ भेद होवऽ हे। तत्पुरुस समास में पहिला पद में जउन बिभक्ति होवऽ हे, ओही बिभक्ति के नाम पर ओकर नामकरन होवऽ हे।

जइसे :

1. द्वितीया (कर्म तत्पुरुस), 2. तृतीया (करन तत्पुरुस), 3. चतुर्थी (सम्प्रदान तत्पुरुस)

4. पंचमी (अपादान तत्पुरुस), 5. सस्ठी (संबंध तत्पुरुस) 6. सप्तमी (अधिकरन तत्पुरुस)

1. **द्वितीया (कर्म तत्पुरुस)** : एकरा में कारक के दूसर भेद कर्मकारक के 'के' (हिन्दी 'को') बिभक्ति के लोप रहऽ हे। **जइसे :** पत्तलचटवा, घसगढ़नी, कठखोदवा, चुगलखोर आदि।

2. **तृतीया (करन तत्पुरुस)** : एकरा में कारक के तीसरा भेद करन कारक के 'से' बिभक्ति के लोप रहऽ हे। **जइसे :** जनामांधर (जन्म से अंधा), लतबन्दर (पैर से धाँगल), कनबहिरा, मनगढ़न्त आदि।

3. **चतुर्थी (सम्प्रदान तत्पुरुस)** : एकरा में कारक के चौथा भेद सम्प्रदान के 'ला' 'लेल', आदि बिभक्ति के लोप रहऽ हे। जइसे:-धरमसाला (धरम ला घर), सीराघर (देवता ला घर) गोसाला (गाय ला घर इया बथान) आदि।

4. **पंचमी (अपादान तत्पुरुस)** : एकरा में कारक के पचवाँ भेद अपादान के 'से', 'सेती' आदि बिभक्ति के लोप रहऽ हे। **जइसे :** करमहीन (करम से हीन), जतकट्टा (जात से काटल), देसनिकालल (देस से निकालल) आदि।

5. **सस्ठी (सम्बन्ध तत्पुरुस)** एकरा में कारक के छठा भेद सम्बन्ध के 'के' बिभक्ति के लोप रहऽ हे। **जइसे :** देबीथान (देबी जी के स्थान), बेलपत्तर (बेल के पत्ता), कन्यादान (कन्या के दान) अनकरासरा (दूसर के आसरा)

6. **सप्तमी (अधिकरन तत्पुरुस)** : एकरा में कारक के सतवाँ भेद अधिकरन के 'में', 'पै', 'पर' बिभक्ति के लोप रहऽ हे । **जइसे** : घरघुमनी घर घर में घुमे ओली) गिरहीपरवेस, मँड़बज्जू (माँड़ में बझल) आदि।

तत्पुरुस समास के अन्य भेद :

1. **उपपद तत्पुरुस** : जब तत्पुरुस समास के अंतिम पद अइसन कृदन्त होवऽ हे जेकर स्वतंत्र परयोग न हो सके, तब ओकरा 'उपपद तत्पुरुस समास' कहल जा हे। **जइसे :** तेलचट्टा, लकड़खोदवा, चिड़ीमार आदि।

2. **नञ् तत्पुरुस :** जउन तत्पुरुस समास के पहिला पद निसेधवाचक रहऽ हे, ओकरा 'नञ् तत्पुरुस समास' कहल जा हे। **जइसे :** अछूत, अबेर, अनजान, निरमोहा आदि।

2. **कर्मधारय समास :** जउन समास में बिसेसन–बिसेस्य इया उपमान–उपमेय के मेल होवऽ हे आउ बिग्रह कयला पर दुन्नो पद में एके कर्त्ताकारक के प्रथमा बिभक्ति आवे, तब 'कर्मधारय समास' कहला हे।

जइसे : नीलकमल – नील (बिसेसन), कमल (बिसेस्य)।

महात्मा – महान (बिसेसन), आत्मा (बिसेस्य)।

मुखकमल – मुख (उपमेय), कमल (उपमान)।

स्यामसुंदर, मृगनैनी, भवसागर आदि।

कर्मधारय समास के चार भेद होवऽ हे :

1. बिसेसतामूलक कर्मधारय,
2. उपमामूलक कर्मधारय,
3. मध्यमपदलोपी कर्मधारय
4. रूपक कर्मधारय।

1. **बिसेसतामूलक कर्मधारय** : एकरा में पहिला पद आउर बाद के पद के बीच बिसेसन-बिसेस्य-भाव रहऽ हे। **जइसे :** नीलगगन, स्वेतकमल, रक्तपुस्प आदि।

2. **उपमामूलक कर्मधारय** : एकरा में पहिल पद आउ बाद के पद के बीच उपमान–उपमेय भाव रहऽ हे। **जइसे :** सूरजमुखी, कमलनैनी, चन्द्रमुखी, घनस्याम आदि।

3. **मध्यमपदलोपी कर्मधारय** : जब सबद के पहिल पद आउ बाद के पद के बीच के, बिसेसन-बिसेस्य संबंध बनावे वाला पद के लोप रहऽ हे, ओकरा 'मध्यमपदलोपी समास' कहल जा हे। **जइसे :**

बैलगाड़ी (बैल से खींचल जाए वाला गाड़ी),

गोबरगनेस (गोबर से बनल गनेस)

बनमानुस (बन में रहे वाला मनुस्य)

गुरुभाई (गुरु के संबंध से भाई) आदि।

4. **रूपक कर्मधारय** : जउन कर्मधारय समास में उपमेय के उपमान मान लेवल जा हे, हुआँ 'रूपक कर्मधारय' हो हे। **जइसे** : कमलमुख, चरनकमल, ग्यानधन आदि।

3. **द्विगु समास** : जउन कर्मधारय पद के सुरू में संख्यावाची सबद होवऽ हे, ओकरा 'द्विगु समास' कहल जा हे। **जइसे** : चौराहा, तिमुहानी, अठवारा, एकटंगा, एकरंगा, नौग्रह, पंचवटी आदि।

उपरे के उदाहरन में पहिलका पद संख्यावाचक बिसेसन हे आउ समूचा सबद से कोई बस्तु के समूह के पता चलऽ हे।

4. **बहुब्रीहि समास** : जउन समास के कोइयो पद प्रधान न होवे आउ अप्पन समस्त पद से कोई खास अर्थ के बोध करावे, ओकरा 'बहुब्रीहि समास' कहल जा हे। **जइसे** : नीलकंठ–एकर दू पद–'नील' बिसेसन आउ 'कंठ' संग्या हे। एकरा से ई कर्मधारय समास होयल। बाकि जब दुन्नों पद से प्राप्त अर्थ के बोध न हो के, एगो अन्य या दोसर अर्थ–'महादेव जी' के बोध होयत, ई लेल ई बहुब्रीहि समास कहलायत।

बहुब्रीहि समास के कुछ अन्य उदाहरन :

लम्बोदर : (लम्बा हे उदर जेकर), बिसेस अर्थ–गनेस।

बीनापानि : (हाथ में बीना धारन करे जे), बिसेस अर्थ–सरस्वती।

कपीस : (बन्दर के स्वामी होए जे), बिसेस अर्थ–हनुमान।

सरोज : (सर से उत्पन्न होयल जे), बिसेस अर्थ–कमल।

चक्रपानि : (चक्र हे पानि में जेकर), बिसेस अर्थ–बिस्नु।

एकरंगा : (एक रंग के होए जे), बिसेस अर्थ–सुर्ख लाल कपड़ा।

लाल मुरेठा : (लाल मुरेठा माथा पर रखे से), बिसेस अर्थ–सिपाही।

कठखोद्दी : (काठ खोदे जे), बिसेस अर्थ– पच्छी कठखोदवा।

लकड़सुंघा : (लकड़ी सुंघावे जे), बिसेस अर्थ–बच्चा गायब करे वाला।

कठकरेज : (कठोर करेजा वाला), बिसेस अर्थ–निस्ठुर अदमी।

बहुब्रीहि समास के भेद :

अन्य पदार्थ द्वितीया, तृतीया आदि बिभक्ति में रहे के कारन बहुब्रीहि समास के छौ भेद होवऽ हे। **जइसे :**

कर्म (द्वितीया) बहुब्रीहि : मोदकप्रिय अर्थात (लड्डू हे प्रिय जेकरा)

करन (तृतीया) बहुब्रीहि : कृतकार्य (कैल गेल हे काम जेकरा द्वारा)

सम्प्रदान (चतुर्थी) बहुब्रीहि : दत्तधन (देल गेल हे धन जेकरा ला)

अपादान (पंचमी) बहुब्रीहि : निर्भय, निडर (भय इया डर निकल गेल जेकरा में से)

सम्बन्ध (सस्ठी) बहुब्रीहि : कनफट्टा (कान फटल हे जेकर अर्थात साधु)

अधिकरन (सप्तमी) बहुब्रीहि : पतझड़ (पत्ता झड़ऽ हे जउन रितु में)

5. द्वन्द्व समास : जउन समास में सब्भे पद प्रधान रहऽ हे, ओकरा 'द्वन्द्व समास' कहल जा हे। ई समास के दुन्नो पद के बीच में 'आउ', 'इया' बिभक्ति छिपल रहऽ हे। **जइसे :** भाई–बहिन, लोटा–डोरी, सीता–राम, धरम–करम, माय–बाप आदि।

द्वन्द्व समास के *तीन भेद* होवऽ हे :

(क) इतरेतर द्वन्द्व : जउन समास के सब्भे 'आउ' समुच्चयबोधक द्वारा जुड़ल होए, बाकि ऊ समुच्चयबोधक के लोप रहे ओकरा 'इतरेतर द्वन्द्व समास' कहल जा हे। **जइसे :** सुख–दु:ख, देवता–राच्छस, भाई–बहिन, कर–कुटुम, घर–परिवार, दाल–भात आदि।

(ख) समाहार द्वन्द्व : जउन समास के सब्भे पद 'आउ' द्वारा जुड़ल रहलो पर, अलग–अलग अस्तित्व न रख के, समूह (समाहार) के बोध करावऽ हे, ओकरा 'समाहार द्वन्द्व समास' कहल जा हे। **जइसे :** अनधन (समृद्धि), साग–रोटी (सादा भोजन) धन–दौलत, नोन–तेल, पोथी–पतरा, कपड़ा–लत्ता, हाथ–गोड़ आदि।

(ग) बैकल्पिक द्वन्द्व : जउन समास के बीच बिकल्पसूचक अब्यय 'या', 'अथवा' आदि छिपल रहे ओकरा बैकल्पिक द्वन्द्व समास कहल जा हे। **जइसे** : लाभ-हानि, जात-परजात, जस-अपजस, धर्म-अधर्म आदि।

6. अब्ययीभाव समास : जउन समास के पहिला पद अब्यय होय आउ ओकरा से बनल पूरा पद क्रियाबिसेसन जइसन बेवहार में आवे, ओकरा 'अब्ययीभाव समास' कहल जा हे। **जइसे :** हरदिन, प्रतिदिन, घड़ी–घड़ी, हरघड़ी आदि।

अब्यय पद बादो में आवऽ हे। पद के द्विरुक्तियो करके ई समास बनावल जा हे। अब्ययीभाव के ***तीनो तरह*** के उदाहरन हे :

(क) पहिला पद अब्यय : निडर, निधड़क, अनजाने, हरदिन भरपेट, अबेर, बेकाम, बेखटके आदि।

(ख) आखिरी पद अब्यय : दमभर, आजतक, दिनभर, कलतक आदि।

(ग) द्विरुक्ति : अगिला संग्या के द्विरुक्ति करके भी अब्ययीभाव समास बनावल जा हे। **जइसे :** हाथे–हाथ, कोरे–कोर, भोरे–भोर, दिने–दिन, छने–छन, घरे–घर, पीछे-पीछ, राते–रात, मुँहे–मुँह, कैले–कैल आदि।

अब्यय के द्विरुक्ति से अब्ययीभाव समास बनावल जा हे। **जइसे :** धीरे–धीरे, तेज–तेज, बेर–बेर, तुरते–तुरते, आस्ते–आस्ते, घड़ी–घड़ी आदि।

संधि आउ समास में अंतर

(1) समास में दू पद के जोग होवऽ हे आउ संधि में दूगो बरन के।

(2) समास में पद के प्रत्यय समाप्त कर देवल जाहे। संधि ला दू बरन के मेल बिकार के गुँजाइस रहऽ हे जबकि समास के इ मेल इया बिकार से कोई मतलब न हे।

(3) संधि के तोड़ल के बिच्छेद कहल जाहे, जबकि समास के बिग्रह होवऽ हे। **जइसे :** 'पीताम्बर' में दू पद हे पीत आउ अम्बर। संधि बिच्छेद होवत – पीत + अम्बर। जबकि समास बिग्रह होवत 'पीत जे अम्बर' इया 'पीत हे जेकर अम्बर – पीताम्बर।

पुनरुक्ति

पुनरुक्त सबद : जब एक्के सबद दू बार आवे इया एक सार्थक सबद के साथे दूसर समानुप्रास इया निरर्थक सबद आवे, तो अइसन सबद के पुनरुक्त सबद कहल जा हे।

जइसे :

दिन-दिन, कौड़ी-कौड़ी, खट-पट, पास-पास, घर-घर, मन-मन, पूछ-ताछ, घर-बार आदि।

पुनरुक्त शब्द ***तीन प्रकार*** के होवऽ हे :

1. पूर्न पुनरुक्त 2. अपूर्न पुनरुक्त 3. अनुकरन वाचक

1. पूर्न पुनरुक्त : जब एक्के सार्थक सबद दोहरावल जा हे, तऽ ओकरा पूर्न पुनरुक्त कहल जा हे। **जइसे** :चलित-चलित, आवित-आवित, खाते-खाते, हँसते-हँसते, दउड़ते-दउड़ते आदि।

पूर्न पुनरुक्त सबद के कुछ आउ उदाहरन हे :

संग्या : दिने-दिने मोटा रहल हे। बूँद-बूँद से तालाब भरऽ हे। हँसी-हँसी में निखेली हो गेल।

सर्बनाम : जे-जे कहलन, से-से पूरा कयलन। अप्पन-अप्पन हठ पर अड़ल हथ।

बिसेसन : हरियर-हरियर पत्ता सोहावन लगऽ हे। लाल-लाल साड़ी सोहागिन पहिनऽ हे।

क्रिया : चलित-चलित थक गेली। हँसते-हँसते पेट फूल गेल।

क्रियाबिसेसन : धीरे-धीरे चलऽ। कहियो-कहियो आ जइहऽ।

बिस्मयादिबोधक: राम-राम! ई का कयलऽ! हाय-हाय! सब्भे दूध गिर गेल!

2. अपूर्न पुनरुक्त- अपूर्न पुनरुक्त सबद दू सार्थक इया दू निरर्थक इया एक सार्थक आउ एक निरर्थक सबद के जोग से बनऽ हे। **जइसे :**

(क) दू सार्थक सबद के मेल से :

संग्या : काम-धाम, धरम-करम, बात-चीत आदि।

सर्बनाम : ई-ऊ, जे-से।

बिसेसन : लँगड़ा-लूला, भोला-भाला, हरा-भरा।

क्रिया : देखना-सुनना, गाना-बजाना, रोना-धोना।

(ख) सार्थक सबद आउ निरर्थक सबद के मेल से :

संग्या : अटर–पटर, चट–पट, खट–पट, भीड़–भाड़, पूछ–ताछ आदि।

सर्बनाम : अपन–उपन, कुछ–उछ, कोई–ओई।

बिसेसन : पीला–उला, हरियर–उरियर, ठीक–ठाक, कान–कोतर।

क्रिया : लिखना–उखना, खाना–उना, पढ़ना–उढ़ना, उठना–बइठना।

अब्यय : सामने–उमने, पास–उस आदि।

(3) अनुकरनवाचक :

संग्या : चट–चट, खट–खट, भन–भन, सन–सन, दन–दन।

बिसेसन : भरभरिया, लटपटिया, खटपटिया।

क्रिया : फुसफुसाना, झनझनाना, हिनहिनाना।

क्रियाबिसेसन : धड़–धड़, घर–घर, झट–झट।

अनर्गल सबद : हिगर–दिगर, अंट–संट, लबड़धोंधो, टाँय–टाँय फिस।

अभ्यास के प्रस्न

1. उपसर्ग केकरा कहल जा हे? एकर बिसेसता लिखऽ।
2. नीचे लिखल उपसर्ग से दू–दू सबद बनावऽ।
   (क) उन (ख) सु (ग) स (घ) कु (ङ) अप (च) परा (छ) अल (ज) दर
3. कृत् प्रत्यय आउ तद्धित प्रत्यय के अंतर के उदाहरन सहित समझावऽ।
4. कृदन्त प्रत्यय केकरा कहल जा हे? पाँच उदाहरन दऽ।
5. तद्धित प्रत्यय के परिभासा देइत पाँच उदाहरन लिखऽ।
6. समास के उदाहरन सहित परिभासा दऽ। एकर मुख्य भेद बतावऽ।
7. तत्पुरुस समास केकरा कहल जा हे। एकर भेद के बरनन करऽ।
8. कर्मधारय समास केकरा कहल जा हे? एकर भेद के बरनन करऽ।
9. द्वन्द्व समास केकरा कहल जा हे? एकर भेद के बरनन करऽ।
10. बहुब्रीहि समास केकरा कहल जा हे? एकर भेद के बरनन करऽ।
11. अब्ययीभाव समास केकरा कहल जा हे? दस उदाहरन दऽ।
12. संधि आउ समास में का अंतर होवऽ हे? बरनन करऽ।

●

सबद आउ ओकर अर्थ

सबद उ स्वतंत्र आउ सार्थक ध्वनि के कहल जाहे, जे एक इया अधिक बरन के मेल से बनऽ हे। **जइसे** : तूँ, ऊ, हम, अमरूद, आम आदि।

सबद दू प्रकार के होवऽ हे :

सार्थक आउ निरर्थक

सार्थक : सार्थक ऊ सबद के संग्या हे जेकर कुछ अर्थ हो हे। **जइसे** : आदमी, देवता, दया, धरम, करम आदि।

निरर्थक : निरर्थक ऊ सबद के संग्या हे जेकर कोई अर्थ न हो हे। **जइसे** : ईम, लक, निर, धक, दख, आदि।

भासा इया बेआकरन में जब हम सबद के परयोग करऽ ही तब ओकर मतलब सार्थक सबद ही हो हे। सबद आउ अर्थ एक दूसरा से अटूट रूप में जुड़ल रहऽ हे। अर्थहीन भासा के कोई महत्व न हो हे। कोई भासा के सबदकोस सार्थक सबद से ही बनऽ हे।

अर्थ के बिचार से मगही में कई एक तरह के सबद प्रचलित हे। इनका में से कुछ मुख्य सबद तालिका नीचे लिखल सीर्सक में देवल जा रहल हे। पर्यायवाची सबद, बिपरीतार्थक सबद, एकार्थक सबद, अनेकार्थक सबद उन्नार्थक सबद, अनेक सबद ला एक सबद, श्रुतिसम भिन्नार्थक सबद, सहप. सबद आदि।

पर्यायवाची सबद

अमृत	:	अमरित, इमरित, सुधा
अर्द्धांगिनी	:	घरनी, औरत, पत्नी, तिरिया, जोरू, गृहिनी
आँख	:	नैन, आँख, लोचन
आग	:	आगि, अग्नि, पावक, अनल
अस्व	:	घोड़ा, हय, तुरंग

असुर	:	राच्छस, दैत्य, देव, दानव
अकास	:	असमान, गगन
आवास	:	घर, गेह, गृह, धाम, भवन, वास
इन्द्र	:	महेन्द्र, इन्दर, देवराज, मेघवाहन, सुरपति, सुरेन्द्र
आनन्द	:	हरख, खुसी, सुख
कपड़ा	:	पट, पटोर, चीर, वस्त्र
किताब	:	पोथी, पुस्तक, खाता
किरन	:	किरन, धूप, रस्मि
क्रोध	:	कोप, रोस, गुस्सा, तामस
खग	:	पच्छी, चिड़िया, पंछी, पखेरू, बिहग
चतुरानन	:	पितामह, बिधि, बिधाता, प्रजापति
सागर	:	जलधि, सागर, समुन्दर, सिन्धु, रत्नाकर
पयोधर	:	मेघ, बादल, घटा, मेह, बादर, बदरी, हथिया
अरन्य	:	जंगल, बन, कानन,
कोयल	:	कोकिल, कोइलर, कोइली, कोइल
गनेस	:	गौरीनंदन, लम्बोदर
ज्योति	:	छवि, जोत, चमक, दुति, प्रकास
दास	:	चाकर, नौकर, सेवक
पवन	:	बेयार, बात, वायु
धरती	:	भूमि, भुइयाँ, जमीन, भू, बसुधा, वसुन्धरा
पुत्री	:	बेटी, कन्या, लड़की, सुता, मञा, बच्ची
भवानी	:	पार्वती, गौरी, गउरा, सती, उमा, शैलसुता, शिवा
मधुकर	:	भौंरा, भृंग, मधुप, भँवरा
जमलोक	:	नरक, जमपुर, जहन्नुम
सूरज	:	आदित्य, सूर्य, भानु, दीनानाथ
बिस्नु	:	नारायन, केसव, माधव, गोविन्द, लछमीपति

सरोबर	:	तलाब, सर, जलासय
धन	:	सम्पत्ति, दौलत, सम्पदा
मछली	:	माछ, मीन
रजनी	:	रात, रात्रि, रैन
बान	:	तीर, सर
सरस्वती	:	वीणापाणि, सारदा, बानी, वाक, भासा
पत्थर	:	पाहन, पाषाण, प्रस्तर
पुत्र	:	बेटा, सुत, पूत, लड़का, बच्चा
बालू	:	रेत, सैकत
राजा	:	भूप, नरेस, निरिप, भूपति
महागौरी	:	दुरगा, काली, कुमारी, चन्डी
रजनी	:	रात, रात्रि, रैन
गाछ	:	बिरिछ, तरु, पेड़
लछमी	:	रमा, श्री, बिस्नुप्रिया, कमला, हरिप्रिया
सिव	:	शंभु, शंकर, महादेव, भोला, नीलकंठ
सर्प	:	साँप, नाग, फनि, भुजंग
समुदाय	:	झुंड, संघ, समूह, दल
स्वामी	:	पति, मरद, भतार, घरवाला
सोना	:	कनक, सुबरन, कंचन, हेम
पगड़ी	:	मुरेठा, नेठो, बिठो
जेब	:	बगली, घोकड़ी, जेबी
ढक्कन	:	ठेंपी, खोंपी-
जानवर	:	गोरू, ढोर, डांगर,

बिपरीतार्थक सबद

सबद		बिपरीतार्थक सबद
असली	:	नकली
अंतर्मुखी	:	बहिर्मुखी
अर्थ	:	अनर्थ
अंधकार	:	प्रकास
अमावस्या	:	पूर्निमा
अतिवृस्टि	:	अनावृस्टि
अपमान	:	सम्मान
अच्छा	:	बुरा
अधम	:	उत्तम
अनुकूल	:	प्रतिकूल
अमरित	:	बिस
आग	:	पानी
धरती	:	असमान
आत्मा	:	परमात्मा
आदर	:	निरादर
आगत	:	अनागत
आरोही	:	अवरोही
आयात	:	निर्यात
आज्ञा	:	अवज्ञा
आदि	:	अंत
आय	:	ब्यय
अजादी	:	गुलामी
आधुनिक	:	प्राचीन
आवस्यक	:	अनावस्यक

सबद		बिपरीतार्थक सबद
आगत	:	अनागत
ईद	:	मुहर्रम
उदय	:	अस्त
उधार	:	नगद
उत्तम	:	अधम
उन्नति	:	अवनति
ऊँचा	:	नीचा
उचित	:	अनुचित
एड़ी	:	चोटी
एकता	:	अनेकता
कठिन	:	सरल
कठोर	:	कोमल
कायर	:	निडर
कपूत	:	सपूत
खरीद	:	बिक्री
खुसी	:	गम
गीला	:	सूखा
गरीब	:	अमीर
गरम	:	ठंडा
गुन	:	अवगुन
ग्रस्त	:	मुक्त
घर	:	बाहर
घिरिना	:	परेम
घटिया	:	बढ़िया

सबद		बिपरीतारर्थक सबद
चिर	:	नवीन, अचिर
चोर	:	साधु
चिरंतन	:	नस्वर
उतार	:	चढ़ाव
छोटा	:	बड़ा
छूत	:	अछूत
जाड़ा	:	गरमी
जोड़	:	घटाव
जनम	:	मरन, मिरतु
जीत	:	हार
जल	:	स्थल
ज्योति	:	तिमिर, तम
अकास	:	पताल
जीवित	:	मृत
जिन्दा	:	मरल
झगड़ा	:	मिलाप
झूठ	:	सच
झोपड़ी	:	महल
तेज	:	मंद, धीमा
अहदी	:	फरहर
जगल	:	सुतल
असली	:	नकली
अउरत	:	मरद
मेहरारू	:	मरदाना
न्याय	:	अन्याय

सबद		बिपरीतारर्थक सबद
फायदा	:	नुकसान
निडर	:	डरपोक
नेकी	:	बदी
पंडित	:	मूर्ख
प्रसंसा	:	निंदा
पुरस्कार	:	दंड
प्रकट	:	गुप्त
सुबह	:	सांझ
पच्छ	:	बिपच्छ
सुरू	:	अंत
बाढ़	:	सूखा
बालक	:	बूढ़ा
भारी	:	हल्का
भला	:	बुरा
भोगी	:	जोगी
मिलन	:	बिरह, बिछुरन
आदमी	:	राच्छस
महान	:	सधारन
मीठा	:	तीता
सभ्य	:	असभ्य
भाग्य	:	अभाग्य
साकाहारी	:	मांसाहारी
विजय	:	पराजय
सांति	:	असांति
शुक्ल	:	कृष्ण

सबद		बिपरीतार्थक सबद
सत्रु	:	मित्र
सोसन	:	पोसन
सूखा	:	गीला
संजोग	:	बियोग
सुलभ	:	दुर्लभ
सुख	:	दु:ख
स्वामी	:	सेवक
साफ	:	गंदा
सम्मान	:	अपमान
सुंदर	:	कुरूप
सच्चा	:	झूठा
समर्थन	:	बिरोध
सबल	:	निर्बल
स्त्री	:	पुरुस

सबद		बिपरीतार्थक सबद
स्वतंत्र	:	परतंत्र
संकल्प	:	बिकल्प
सार्थक	:	निरर्थक
हद	:	बेहद
क्षमता	:	अक्षमता
हानि	:	लाभ
हिंसा	:	अहिंसा
हँसना	:	रोना
सजीव	:	निर्जीव
सुगंध	:	दुर्गंध
सफल	:	बिफल
सार्थक	:	निरर्थक
क्षणिक	:	शाश्वत

एकार्थक सब्द

अग्यान : जेकरा ग्यान न होए

मूरख : बुद्धिहीन

मूढ़ : जड़मति

अमूल्य : जउन बस्तु के मूल्य न आंकल जा सके।

अनमोल : जउन बस्तु के मोल लगाना संभव न होए

बहुमूल्य : जउन वस्तु के मूल्य बहुत होए

अहंकार : अपना के उचित से जादे समझेवाला

अभिमान : अप्पन बड़प्पन के गलत बोध

दर्प : अपना के श्रेष्ठ आउ अन्य के छोटा बुझे के भाव

घमंड : अपना के वास्तविक स्थिति से अधिक समझ के मगरूर रहे ओला

अपराध	:	कानून के दृस्टि में गलत काम
पाप	:	नैतिक दृस्टि से गलत काम
अनुकम्पा	:	अतिसय किरपा
अनुभव	:	बेवहारिक जीवन से प्राप्त ग्यान
मन	:	संकल्प करे वाला
बुद्धि	:	बिचार करे वाला
चित्त	:	स्मरन रखेवाला
अप्राप्य	:	जे प्राप्त न कयल जा सके
आधि	:	मानसिक कस्ट
ब्याधि	:	सारीरिक कस्ट
अनाचार	:	अनुचित आचरन
स्वागत	:	सभ्यता आउ प्रथा के अनुसार सिस्टाचार ला कयल गेल सम्मान
उपयोग	:	सुन्दर ढंग से काम में लाना
स्पर्द्धा	:	प्राप्ति के बिकलता दूसर के उन्नति देख के खुद उन्नति करे के इच्छा
किरपा	:	छोटा के प्रति दया भाव
दया	:	दूसर के प्रति करुना भाव
करुना	:	दूसर के दुःख में कातर भाव से हितकामना
काल	:	समय, यम
समय	:	काल के कोई निस्चित अवधि
खेद	:	अप्पन गलती के कारन मानसिक कस्ट
छोभ	:	असफलता के कारन झुँझलाहट
दुख	:	हिरदय में होवे वाला कस्ट
बिसाद	:	दुखी मन के बेदना
सोक	:	प्रियजन के निधन से उत्पन्न दुःख

गर्व	:	अप्पन स्रेस्ठता के बोध
गौरव	:	अप्पन देस के महत्ता के बोध
चित्त	:	सहज ग्यान वाला चेतन
मन	:	संकल्प-बिकल्प से जुड़ल बुद्धि
आत्मा	:	सरीर में जीवन के सत्ता
अन्तः करन	:	भीतरी मन के बिसुद्ध सक्ति
चेस्टा	:	अच्छा काम ला सक्रिय होना
प्रयास	:	कोई काम ला जतन करना
प्रयत्न	:	कोई काम ला समन्वित प्रयास करना
तट	:	सरोवर इया समुद्र के किनारा
पुलिन	:	जल से निकलल भूमि खंड
कछार	:	तटीय भूभाग
दछ	:	सारीरिक जोग्यता वाला
निपुन	:	ग्यान जन्य जोग्यता वाला
कुसल	:	सारीरिक-मानसिक जोग्यता से भरल
वायु	:	साधारन हवा
पवन	:	लगातार बहेवाला
बतास	:	ठहर-ठहर के झोंका के रूप में चले ओला हवा
समीर	:	मंद गति वाला हवा
मलय पवन	:	सुगन्धित सीतल हवा
झंझावात	:	बारिस के झोंका के साथ तेज झकझोर चले वाला हवा
तूफान	:	प्रबल बेग से नाचते चलेवाला समूह वायु
आँधी	:	गर्दा से भरल भारी हहराइत बेग वाला वायु

अनेकार्थक सबद

अर्क : इन्द्र, सूर्य, रस, काढ़ा, अकवन
अर्ज : उपार्जन, लाभ, बिनती, प्रार्थना
अज : बकरा, अजन्मा, दसरथ के पिता, ब्रह्मा, मेसरासि
अर्थ : मतलब, तात्पर्य, धन, कारन, लिए, प्रयोजन
अछर : ईस्वर, बरन, सनातन, अकास, धरम, बिस्नु
अम्बर : अकास, कपड़ा, राच्छस-बिसेस
अन्तर : फरक, मध्य, अवकास, बाधा, भीतर, हिरदय, भेद
अरब : देस बिसेस, घोड़ा, सौ करोड़
अचल : पक्का, परबत, स्थिर
अनंत : अकास, अंतहीन, असीम, अछय, तछक, बिस्नु
अमर : देवता, जे न मरे, बटबिरिछ
अमरित : अमर, औसधि, इन्द्र जल, दूध, पारा, सुबरन
अरुण : लाल, कुंकुम, सूर्य, सारथी
अहि : कस्ट, साँप, सूर्य
आम : आम, दुःख, पीड़ा, मामूली, रसाल, सर्बसाधारन
आराम : बिस्राम, बगीचा
उत्तर : दिसाबिसेस, उतारा, जबाब, हल
कटाछ : आछेप, तिरछा नजर, ब्यंग्य
करन : कुन्ती पुत्र, दानी, कान
कर : किरन, हाथ, सूँढ़, राजस्व
कनक : पलास, सोना, धतूरा, नागकेसर, गेहूँ, खजूर
कला : अंस, कौसल
कसरत : अधिकता, बेयाम
कृस्न : भगवान, काला, राधा नागर
कल : सुन्दर, अगला दिन, चैन, जंत्र, बोझ
करम : कर्म, भाग्य, कृपा

कद : बादल, हठ, ईर्स्या, डील-डौल
कमला : लछमी, सुन्दरी, एगो कीड़ा
काम : इच्छा, काज, कामदेव
कुसल : चतुर, निपुन, कुस लावेवाला, कुसल-मंगल
केतन : घर, कार्य, ध्वजा
केतु : ग्रह बिसेस, ध्वजा, पुच्छल तारा
केवल : मात्र, बिसुद्ध ग्यान
कैरव : कमल, कुमुद
कोट : किला, बस्त्र बिसेस
खग : राच्छस, पछी, आकास चारी
खैर : कत्था, कुसल
गति : चाल, मोच्छ, हालत
गुन : कौसल, डोरी, लाभ, सोभाव, सत-रज-तम (तिरगुन)
गुरु : भारी, सिच्छक, स्रेस्ठ, बड़ा, बृहस्पति ग्रह
जाल : किरन, फरेब, फाँस, धोखा,
तात : पिता, भाई, मित्र, स्रेस्ठ, पूज्य, प्रिय
तारा : देबी, नच्छत्र, पुतली, बालिका
ताल : कठताल, ताड़, दलदल, भूमि, पोखर, स्वर
दाम : मूल्य, जाल, फंदा, रस्सी, माला
द्विज : चन्द्रमा, गनेस, पछी, ब्राह्मण, छत्रिय, बैस्य
दंड : डंटा, दंडवत, सजा
धन : सम्पत्ति, जोड़
धर्म : कर्तब्य, गुन, प्रकृति, सोभाव, सम्प्रदाय
धान्य : अन्न, धान
नकुल : जानवर बिसेस, चौथा पांडव
नाना : बिबिध, माता के पिता, पोदीना
पोत : नाव, बस्त्र, सोभाव

बल	:	सक्ति, सेना, बलराम
बलि	:	उपहार, कर, बलिदान
बहार	:	आनंद, चहचही, बसंत रितु, एक राग,
भूत	:	परानी, परेत, बीतल समय, पृथ्वी
मल	:	पाप, मैल, बिकार
रस	:	पारा, जल, नवरस, परेम, सवाद, षड्रस
राग	:	परेम, ईर्स्या, द्वेस, रंग, लय
लवन	:	नमक, नोन, खार
लोक	:	संसार, स्त्री, समूह
बर्न	:	रंग, अच्छर, जाति
वार	:	दिन, प्रहार, आघात
बाज	:	घी, अन्न
वास	:	घर, सुगन्ध, बस्त्र

उन्नार्थक सबद

सबद	:	उन्नार्थक सबद	सबद	:	उन्नार्थक सबद
आम	:	अमौरी	कुटी	:	कुटिया
आँगन	:	अँगनई	चूहा	:	चुहिया
अँगूठा	:	अँगूठी	चमचा	:	चमची
आँत	:	अँतरी	छूरा	:	छूरी
कुरता	:	कुरती	छाता	:	छतरी
कटोरा	:	कटोरी	जूता	:	जूती
कलसा	:	कलसी	चक्का	:	चक्की
केवाड़	:	केवाड़ी	छाता	:	छतरी
कंगन	:	कंगनी	जूता	:	जूती
कोठा	:	कोठरी	चक्का	:	चक्की
खाज	:	खुजली	छाता	:	छतरी

सबद	:	उन्नार्थक सबद	सबद	:	उन्नार्थक सबद
झण्डा	:	झण्डी	ढकना	:	ढकनी
झोला	:	झोली	थाल	:	थाली
टीका	:	टिकुली	नथ	:	नथुनी
टाँग	:	टँगड़ी	नाला	:	नाली
टोप	:	टोपी	पलंग	:	पलंगड़ी
ठठेरा	:	ठठेरी	पंख	:	पँखुड़ी
डोला	:	डोली	बहु	:	बहुरिया
डोल	:	डोलची	रस्सा	:	रस्सी

अनेक सबद ला एक सबद.

अनेक सबद	:	एक सबद
जे न मरे	:	अमर
जे कभी बूढ़ा न होए	:	अजर
जेकर कोई सहारा न होए	:	अनाथ
जे मेहमान अचानक आ जाए	:	अतिथि
जेकर मूल्य न आँकल जा सके	:	अनमोल
जे असंभव होए	:	असंभव
जे अचानक घटल होए	:	अनचीतल
जेकर समान दूसर न होए	:	अद्वितीय
जे भोरे होए	:	अनमुँहे
जेकरा में प्रवेस संभव न होए	:	अगम
आम के फूटल गुठली	:	अमोला
जेकर कोई नाथ न होए	:	अनाथ
कम खाए वाला	:	अल्पहारी
कानून के बिरूद्ध	:	अबैध
जेकरा आसक्ति न होए	:	अनासक्त

जे पढ़े योग्य न होए	: अपठनीय
जेकर पेट न भरे	: हहिया
जे लीक पर न रहे	: अलीक
अइसन बात जे पसंद न कयल जाए	: अनकठुल
ईस्वर में बिस्वास करे वाला	: आस्तिक
जे प्रमान से सिद्ध न होए	: अप्रमानिक
जउन भेदल न जा सके	: अभेद्य
जउन सैनिक घोड़ा पर सवार होए	: अस्वारोही
जउन ई लोक में न पावल जाए	: अलौकिक
जे लुप्त हो गेल	: अलोप
दुबिधा भरल स्थिति	: असमंजस
जेकर पति मर गेल होए	: राँड़
जेकर माय–बाप मर गेल होए	: टुअर
पीछे–पीछे चले वाला	: पिछलगुआ
जेकर बिआह न होल हे	: बाँड़, बंड
जेकरा बाल–बच्चा न भेल होए	: बाँझ
दूध देवे ओला गाय–भइँस	: लगहर
दूध देवल बंद कर देवे ओला पसु	: बिसुखल
समय से पहले मृत्यु	: अकाल मउअत
केवल अप्पन बारे में सोचेवाला	: एकसिरताह
कुंज में बिहार करे ओला	: कुंज बिहारी
कठोर हृदयवाला	: कठकरेज
जेकरा पइसा खर्च करे में आँख लगे	: किरिपन
नदी के किनारा	: कछार
समय से पहिले गर्भ खराब होना	: कच्चा डाँढ़
बिना तर्क के बहस	: कठदलील

पोला बाँस	:	खोंखर
असमान में बिचरे वाला	:	गगनचर
गर्भवती मादा जानवर	:	गाभिन
दुसर के चुगली करे ओला	:	चुगलखोर
हर खाद्य पदार्थ चाट जाए ओला	:	चटोर
लाज से पानी होयल	:	ठिसुआयल
खूब बढ़ा-चढ़ा के बोले वाला	:	डिंगाहा
भारी बखेरा	:	तितिम्मा
बार-बार कहला पर भी न माने ओला	:	थेथर
बिद्रुप चेहरा रखेओला	:	घोघरमुहाँ
खूब तेज लाल रंग	:	टुह-टुह लाल
बीच में बोले वाला	:	बतकट
ठोकर लगावेवाला	:	ठेंसाहा
दुबिधा में पार होना	:	धरम धक्का
अप्पन पेट पूजा में मगन रहे ओला	:	पेटमधवा
गलत राह पर चले ओला	:	बेराह
ब्यर्थ के बात बनावे ओला	:	बतबनौना
जेकरा भात में जादे रूचि रहे हे	:	भतखउका
जेंतना सक्ति होए	:	भरसक्ति
बेहद कम बुद्धि वाला	:	भुच्चड़
जेकर बाल बच्चा न हे	:	निरबंसा
लजालु स्वभाव के	:	लजकोकड़
बहुत झगड़ा करे वाला	:	मुँहजोर
बहुत खुसामद भरल	:	मुँह देखल
लम्बा व्यक्ति	:	लमहर
लाख रुपया के स्वामी	:	लखपति
हठ करे ओला	:	हठी
स्वजाति से सम्बद्धता के प्रतीक	:	हुक्का पानी

श्रुतिसम भिन्नार्थक सबद

अँगना	:	आँगन
अंगना	:	स्त्री
अंश	:	हिस्सा
अंस	:	कंधा
अनल	:	आग
अनिल	:	हवा
अनु	:	पीछे
अणु	:	कण, एटम
अभिराम	:	सुंदर
अविराम	:	लगातार
अरि	:	सत्रु
अरी	:	स्त्री के लिए सम्बोधन
अवधि	:	समय
अवधी	:	अवध प्रदेश के एगो भासा
असन	:	भोजन
आसन	:	बइठे के बस्तु
अगम	:	दुर्लभ
आगम	:	प्राप्ति
अध्ययन	:	पढ़ना
अध्यापन	:	पढ़ाना
अलि	:	भँवरा
अली	:	सखी
अनत	:	सीधा
अनति	:	अहंकार
अधम	:	नीच
अधर्म	:	पाप
इत्र	:	सुगंध
इतर	:	दूसरा
उपकार	:	भलाई
अपकार	:	बुराई
ऋत	:	सत्य
ऋतु	:	मौसम
इड़ा	:	पृथ्वी
ईड़ा	:	स्तुति
इति	:	समाप्ति
ईति	:	सस्य, बिहन
इंदु	:	चनरमा
इंदुर	:	चूहा
आकर	:	खान
आकार	:	सूरत, सक्ल
आदि	:	आरम्भ
आदी	:	अदरक
आधि	:	मानसिक कस्ट
आरति	:	दुःख
आरती	:	देवता के धूप-दीप दिखाना
आली	:	सखी
अलि	:	भौंरा
आस्तिक	:	जेकरा ईस्वर में आस्था हे
आस्तीक	:	एक रिसि
अधम	:	नीच
अधर्म	:	पाप
इत्र	:	सुगंध
इत्तर	:	दूसरा

उपकार	:	भलाई	कपीस	:	सुग्रीव या बाली बानर के राजा
अपकार	:	बुराई	कलि	:	कलजुग
उद्‌भव	:	उत्पत्ति	कली	:	अधखिला फूल
उद्धव	:	कृष्ण के सखा	कीश	:	बंदर, चिड़िया, सूरज
उपसना	:	दुर्गंध होना	कीस	:	गर्भ के थैला
उपासना	:	पूजा	कुट	:	किला
उपवास	:	भोजन न करना	कूट	:	पहाड़ के चोटी
उपहास	:	निंदा	कुल	:	सब, बंस
कंकाल	:	हड्डी के ठठरी	कूल	:	किनारा
कंगाल	:	भिखारी	क्रिया	:	काम
कंजर	:	नीच पुरुस	किरिया	:	कसम
कुंजर	:	हाथी			
कपिस	:	भूरा			

सहचर सबद

कभी–कभी अइसनो सबद मिलऽ हे, जे अधिकतर अनायास भाव से साथ–साथ परयोग में आवऽ हे। ओकरा 'सहचर सबद' कहल जा हे। जइसे—करनी–धरनी, किरिया–करम, चाल–चलन, जप–तप, आगा–पीछा, आस–पास, अन–धन, घर–दुआर, कुल–परिवार, काम–काज, जनम–मरन, जइसन–तइसन, झूठ–सच, ताक–झाँक, दान–पुन्न, हाथ–गोड़, राह–बाट, बाजा–गाजा, मेल–जोल, साँझ–सबेरे आदि।

अभ्यास के प्रस्न

1. नीचे लिखल सबद के दू-दू गो पर्यायवाची सबद बतावऽ :
   अमृत, आँख, सूरज, सरोवर, गनेस, आग, पुत्री, धरती।
2. नीचे लिखल सबद के बिपरीतार्थक सबद बतावऽ :
   अन्धकार, अनुकूल, धरती, कपूत, आदि, सुबह, ज्योति।

3. नीचे लिखल सबद के अनके सबद ला एक सबद बतावऽ :
जे न मरे, जब भोर हो जाय, जेकर कोई नाथ न होवे, पीछे-पीछे चले वाला, जेकर पति मर गेल हे, जेकर माय-बाप मर गेल हे।

4. नीचे लिखल सबद के श्रुतिसम भिन्नार्थक सबद बतावऽ :
आदी, आदि, अँगना, अंगना, अंश, अंस, अनु, अणु, कंकाल, कंगाल, कुल, कूल।

5. पाँच गो सहचर सबद बतावऽ।

वाक्य बिचार

वाक्य : सार्थक सबद इया पद के बेवस्थित समूह के वाक्य कहल जा हे। **जइसे :** मोहन किताब पढ़इत हे।

एकरा में 'मोहन' 'किताब' आउ 'पढ़इत हे' मिल के एगो सार्थक क्रमबद्ध पद समूह बनावऽ हे। ई लेल ई एगो वाक्य हे।

वाक्य मनुस्य के बिचारन के पूर्नता परगट करऽ हे। वाक्य ऊ सार्थक ध्वनि हे जेकर माध्यम से लेखक लिख के आउ बक्ता बोल के अप्पन भाव इया बिचार के पाठक इया स्रोता पर परगट करऽ हथ।

वाक्य के बिसेसता : वाक्य में आयल पद–समूह के तीन गो बिसेसता होवऽ हे : (क) जोग्यता (ख) अकांच्छा (ग) क्रम

(क) जोग्यता– जब वाक्य के प्रत्येक पद इया सबद अप्पन अर्थ परगट करे में सहायक होवे, तऽ समझे के चाही कि वाक्य में जोग्यता बर्तमान हे। **जइसे :** हम बंदूक से लिखइत ही।

ई वाक्य में जोग्यता के अभाव हे। इहाँ 'बंदूक' के जगह 'कलम' के परयोग होवे के चाही।

(ख) अकांच्छा : वाक्य के एक पद के सुन के दूसर पद सुने के जे सोभाविक लालसा जागऽ हे, ओकरा अकांच्छा कहल जा हे। **जइसे :**

ईमानदार आउ परिस्रमी के............

ई कहला से अकांच्छा पूर्न न होवे;

आगे सुने के उत्कंठा बनल रहऽ हे।

एकरा जदि नीचे लिखल तरी कहल जाए :

"ईमानदार आउ परिस्रमी के सगरो कद्र होवऽ हे।"

अइसन कहे से अकांच्छा पूर जा हे। ई लेल ई एगो वाक्य हे।

(ग) क्रम : वाक्य में प्रयुक्त पद इया सबद के बिधिवत स्थापना के क्रम कहल जा हे। **जइसे** : घरे राम गेलक।

ई वाक्य ठीक न हे। 'घरे' सबद के राम के बाद आवे के चाही आउ वाक्य ई प्रकार से होवे के चाही। 'राम घरे गेलक'।

वाक्य भेद

वाक्य के *तीन तरह* से भेद कैल जा सकलक हे :

1. रचना के दृस्टि से 2. क्रिया के दृस्टि से 3. अर्थ के दृस्टि से

1. रचना के दृस्टि से वाक्य के ***तीन भेद*** होवऽ हे :

(क) सरल वाक्य (ख) मिस्र वाक्य (ग) संजुक्त वाक्य

(क) सरल वाक्य : जउन वाक्य में एकेगो क्रिया होवऽ हे, ओकरा सरल वाक्य कहल जा हे। **जइसे :**

ऊ सब घुमे जइतो। हमनी भात खा रहलियो हे।

ई दुन्नो वाक्य सरल हे काहे कि एकरा में एक–एक क्रिया हे।

(ख) मिस्र वाक्य : जउन वाक्य में एक सरल वाक्य के अलावा ओकर अधीन एक इया एक से अधिक आस्रित उपवाक्य रहे, ओकरा मिस्र वाक्य कहल जा हे। **जइसे :**

(i) बाबूजी देरी से अतथुन, काहे कि ऊ मेला गेल हथुन।

(ii) ऊहाँ के–के गैल हे, हम न जानऽ ही।

मिस्र वाक्य में पहिला के मुख्य वाक्य इया मुख्य उपवाक्य आउ दूसर वाक्य के सहायक वाक्य इया आस्रित उपवाक्य कहल जा हे। इहाँ "बाबूजी देरी से अतथुन" आउ "उहाँ के–के गेल हे" मुख्य वाक्य हे आउ बाकी सहायक वाक्य हे।

(ग) संजुक्त वाक्य : जउन वाक्य में एक से जादे सरल इया मिस्र वाक्य के मेल संजोजक अव्यय द्वारा होवऽ हे, ओकरा संजुक्त वाक्य कहल जा हे। **जइसे :**

(i) तूँ ई बार बड़ी मेहनत कैलऽ हे, **ई लेल** सफलता जरूरे मिलतो।

(ii) सूरज उगल **आउ** कुहा फट गेल।

पहिला वाक्य में 'ई लेल' आउ दुसरका में 'आउ' संजोजक अब्यय हे जे सरल वाक्यवन के जोड़ के संजुक्त वाक्य बनयलक हे।

संजुक्त वाक्य में सब्भे वाक्य अप्पन स्वतंत्र सत्ता बना के रखऽ हे आउ एकरा में कोई एक दूसरा पर आस्रित न रहे।

2. क्रिया के दृस्टि से वाक्य के *तीन भेद* होवऽ हे :

(क) करतरीवाचक वाक्य

(ख) कर्मवाचक वाक्य

(ग) भाववाचक वाक्य

(क) करतरीवाचक वाक्य : जउन वाक्य में क्रिया के रूप कर्त्ता के लिंग, बचन आउ पुरुस के अनुसार होवऽ हे, ओकरा करतरीवाचक वाक्य कहल जा हे। **जइसे :** ऊ रमायन पढ़ऽ हे। राधा घर जा हे।

(ख) कर्मवाचक वाक्य : जउन वाक्य में क्रिया के रूप कर्म के अनुसार होवऽ हे, ओकरा कर्मवाचक वाक्य कहल जा हे। **जइसे :**

ओकरा से रमायन पढ़ल न जा हे। हमरा से भात खायल न जा हे।

(ग) भाववाचक वाक्य : जउन वाक्य में क्रिया कर्त्ता आउ कर्म के अनुसार न रह के स्वतंत्र रूप से पुल्लिंग, एकबचन आउ अन्यपुरुस में हो हे, ओकरा भाववाचक वाक्य कहल जा हे। **जइसे :**

हमरा से घामा में न चलल जाए। बुतरुअन से दउड़ल न जाए।

3. अर्थ के दृस्टि से वाक्य के आठ भेद होवऽ हे।

(क) बिधिबोधक वाक्य : जउन वाक्य से कोई बात के होवे के सामान्य बोध होवे, ओकरा बिधिबोधक वाक्य कहल जा हे। **जइसे :**

सरलवाक्य : हम कबड्डी खेलली।

मिस्रवाक्य : जब हम कबड्डी खेल चुकली, तब ऊ पहुँचल।

संजुक्तवाक्य : हम कबड्डी खेलली आउ खूब मजा लेली।

(ख) आग्याबोधक वाक्य : जउन वाक्य से आग्या के बोध होवे, ओकरा आग्याबोधक वाक्य कहल जा हे।

जइसे : तूँ पढ़ऽ। तूँ हिआँ से चल जा।

दरवाजा बन्द करऽ। सोझ खड़ा रहऽ।

(ग) निसेधबोधक वाक्य : जेकरा से काम के न होवे के बोध होवे ओकरा निसेधबोधक वाक्य कहल जा हे।

जइसे : **सरल वाक्य** : हम रोटी न खैली।

मिस्र वाक्य : हम रोटी न खैली, से हम्मर मन खुस न हे।

संजुक्त वाक्य : हम पढ़ाई न कैली आउ एही से हमरा पाठ इयाद न होयल।

(घ) प्रस्नबोधक वाक्य : जउन वाक्य से कउनो प्रस्न पूछल जाय के बोध होवे ओकरा प्रस्नबोधक वाक्य कहल जा हे।

जइसे : तोर का नाम हवऽ? तूँ किनकर लइका हऽ?

(ङ) संदेहबोधक वाक्य : जेकरा से कोई प्रकार के संदेह के बोध होवे, ओकरा संदेहबोधक वाक्य कहल जा हे।

जइसे : ऊ अब खा लेल होत। गाड़ी अब पहुँच गेल होत।

(च) बिस्मयबोधक वाक्य : जेकरा से आस्चर्ज, हर्स, बिसाद आदि के बोध होए, ओकरा बिस्मयबोधक वाक्य कहल जा हे।

जइसे : हाय! कइसन टूटल सड़क हइ । अहा ! केतना सुन्दर लड़की हइ ।

(छ) संकेतबोधक वाक्य : जहाँ एक वाक्य दूसर वाक्य के संभावना पर निरभर करे, हुआँ संकेतबोधक वाक्य हो हे।

जइसे : बदरी न लगइत, तऽ कपड़ा सुख जाइत। तूँ आ जइतऽ, तऽ काम हो जाइत।

(ज) इच्छाबोधक वाक्य : जउन वाक्य से इच्छा, कामना, असीरबाद आदि के बोध होवे ओकरा इच्छाबोधक वाक्य कहल जा हे।

जइसे : भगवान तोर भला करथ। तोर जातरा सफल होवे।

अभ्यास के प्रस्न

1. वाक्य केकरा कहल जा हे? एकर बिसेसता लिखऽ।
2. रचना के दृस्टि से वाक्य के भेद करइत एकर बरनन करऽ।
3. क्रिया आउ अर्थ के दृस्टि से वाक्य के भेद करइत एकर बरनन करऽ।

●

वाक्य–बिग्रह

वाक्य-बिग्रह : कउनो वाक्य के सब्भे अंग के अलगे–अलगे करके ओकर पारस्परिक संबंध देखावे के क्रिया के वाक्य–बिग्रह कहल जा हे। वाक्य–बिग्रह के वाक्य–बिस्लेसन आउ वाक्य बिभाजन भी कहल जा हे।

सरल वाक्य के बिग्रह :

सरल वाक्य के **दू *खंड*** होवऽ हे :

(1) उद्देस्य (2) बिधेय

1. उद्देस्य : कउनो वाक्य में जउन कोई बिसय इया बस्तु के बारे में कुछ कहल जाए, ओकरा उद्देस्य कहल जा हे।

जइसे : राम किताब पढ़ऽ हे। सीता बाग में गेलक।

इहाँ 'राम' आउ 'सीता' उद्देस्य हे।

उद्देस्य के बिस्तार : जउन सबद उद्देस्य के बिसेसता बतलावे ओकरा उद्देस्य के बिस्तार कहल जा हे।

जइसे : दशरथ पुत्र राम बिजयी भेलन। मेहनती लड़का सफल होवऽ हे।

इहाँ पहिला वाक्य में 'दसरथ पुत्र' आउ दुसरका वाक्य में 'मेहनती' उद्देस्य के बिस्तार हे काहे कि ई क्रम से राम आउ लड़का के बिसेसता बतावित हे।

2 बिधेय : जउन सबद द्वारा उद्देस्य के बिसय में कुछ कहल जाए, ओकरा बिधेय कहल जा हे।

जइसे : तोर भाई खा रहलथुन हे। लइकन खेल रहलइ हे।

इहाँ पहिला वाक्य में 'खा रहलथुन हे' आउ

दूसर वाक्य में 'खेल रहलइ हे' बिधेय हे काहे कि ई अप्पन-अप्पन उद्देस्य के बारे में बतावित हे।

बिधेय के बिस्तार : जउन सबद बिधेय के बिसेसता बतावऽ हे ओकरा बिधेय के बिस्तार कहल जा हे।

जइसे : राम **गते–गते** दउड़ऽ हे। राधा **कलम से** लिखऽ हे।

इहाँ 'गते–गते' आउ 'कलम से' बिधेय के बिस्तार हे।

बिधेय के बिस्तार के कई रूप हे :

(क) कारक से : रावन **तीर से** मारल गेल।

(ख) क्रियाबिसेसन से : कनिवाँ **सले–सले** डेग धरइत हे।

(ग) वाक्यांस : साहेब पाँच बजे के बादे घरे अतथिन।

(घ) पूर्बकालिक क्रिया से : ऊ पढ़ के सूत गेल।

(ङ) क्रियाद्योतक से : ऊ चलइत–चलइत थक गेल।

सरल वाक्य के बिग्रह के उदाहरन :

1. अरजुन कुन्ती के बेटा कौरव मित्र कर्न के बान से मारलन।

2. गीता तोर छोट बहिन अप्पन मुख से सुन्दर गीत गा रहल हे।

	उद्देस्य		बिधेय		
उद्देस्य (कर्त्ता)	उद्देस्य के बिस्तार	क्रिया	कर्म	बिधेय के बिस्तार	
				कर्म के बिस्तार	क्रिया के पूरक इया अन्य बिस्तार
अरजुन	कुन्ती के बेटा	मारलन	कर्न के	कौरवमित्र	बान से
गीता	तोर छोट बहिन	गा रहल हे	गीत	सुन्दर	अप्पन मुख से

मिस्र वाक्य के बिग्रह : मिस्र वाक्य ऊ हे, जेकरा में एगो प्रधान उपवाक्य आउ एक इया एक से अधिक आस्रित उपवाक्य रहऽ हे। अइसन वाक्य के बिग्रह में प्रधान उपवाक्य आउ आस्रित उपवाक्य के हिगरा के उनका पारस्परिक सम्बन्ध बतावे पड़ऽ हे।

जइसे : रमेश कहलक कि ओकर छोट भाई, जे लोथ हे, बराती न जायत, काहे कि ऊ घुर–फिर न सकऽ हे।

(क) मोहन कहलक : प्रधान उपवाक्य ('क' में प्रयुक्त सकर्मक क्रिया 'कहलक' के कर्म)

(ख) कि ओकर छोट भाई बराती न जायत : संग्या उपवाक्य ('ख' में प्रयुक्त छोट भाई के बिसेसन)

(ग) जे लोथ हे : बिसेसन उपवाक्य (ग में प्रयुक्त 'जायत क्रिया के करन के रूप में)

(घ) काहे कि ऊ घुर-फिर न सकऽ हे : क्रियाबिसेसन उपवाक्य।

संजुक्त वाक्य के बिग्रह : जउन वाक्य में एक से जादे सरल इया मिस्र वाक्य आपस में संजोजक अब्यय द्वारा जुड़ल होय, ओकरा संजुक्त वाक्य कहल जा हे। अइसन वाक्य के बिग्रह नीचे लिखल ढंग से कयल जाहे :

श्याम आगे बढ़ गेल आउ सोहन पीछे छूट गेल, बाकि आगे चल के दून्नो मिल गेलन।

(क) स्याम आगे बढ़ गेल : प्रधान उपवाक्य

(ख) सोहन पीछे छूट गेल : समानाधिकरन वाक्य

(ग) बाकि आगे चल के दुन्नो मिल गेलन : समानाधिकरन वाक्य संजोजन-आउ, बाकि।

●

वाक्य परिवर्तन

वाक्य परिवर्तन : जब कउनो वाक्य में रचना के दृस्टि से अइसन परिवर्तन कैल जाय कि ओकर बनावट तो बदल जाय बाकि अर्थ इया मूलभाव में तनिको अंतर न आवे तऽ ओकरा वाक्य परिवर्तन कहल जा हे।

जइसे : गनेस लड्डू खयलक।

ई वाक्य के अइसहूँ कहल जा सकलक हे :

गनेस से लड्डू खायल गेल।

वाक्य परिवर्तन ला कई रूप अपनावल जा हे, जे नीचे लिखल हे :

(क) सरल वाक्य के मिस्र वाक्य में परिवर्तन :

सरल वाक्य : मेहनती विद्यार्थी जरूर सफलता पावऽ हे।

मिस्र वाक्य : जउन विद्यार्थी मेहनती होवऽ हे, ओही सफलता पावऽ हे।

(ख) सरल वाक्य से मिस्र वाक्य में परिवर्तन :

सरल वाक्य : परेसान रहला पर भी ऊ हिम्मत न हारल ।

मिस्र वाक्य : ऊ परेसान हल बाकि हिम्मत न हारल।

(ग) मिस्र वाक्य से सरल वाक्य :

मिस्र वाक्य : जखनी घाम रहत, हम बाहर न जायम।

सरल वाक्य : घामा रहला पर हम बाहर न जायम।

(घ) संजुक्त वाक्य से सरल वाक्य :

संजुक्त वाक्य : दुन्नो में बतरस होयल आउ लाठी चले लगल।

सरल वाक्य : दुन्नो में बतरस होयला पर लाठी चले लगल।

(ङ) करतरीवाचक वाक्य से कर्मवाचक वाक्य :

करतरीवाचक : राधा चिट्ठी लिखलक।

कर्मवाचक : राधा से चिट्ठी लिखल गेलइ।

(च) **बिधिवाचक वाक्य से निसेधवाचक वाक्य :**

बिधिवाचक : महेस सुरेस से बड़ा हे।

निसेधवाचक : सुरेस ओतना बड़ा न हे, जेतना महेस।

(घ) **निसेधवाचक वाक्य से बिधिवाचक वाक्य :**

निसेधवाचक : तोरा नियन लजकोकड़ कोई न होएत।

बिधिवाचक : तूँ सबसे जादे लजकोकड़ हऽ।

अभ्यास के प्रस्न

1. वाक्य बिग्रह केकरा कहल जा हे ?
2. उद्देस्य आउ बिधेय से तूँ का समझऽ हऽ?

नीचे लिखल के वाक्य बिग्रह करऽ:-

(क) सीता तोर बहिन अप्पन हाथ से सुन्दर फूल काढ़ रहल हे।

(ख) मोहन कहलक कि ओकर छोट भाई जे बड़ी देहचोर हे, दूकाने न जाएत, काहे कि ऊ घुर–फिर न सके।

3. (क) 'धीरजी आदमी ही सुख-सान्ति पावऽ हे'–एकरा मिस्र वाक्य में बदलऽ।

(ख) 'सुखाड़ पड़े से फसल जर गेल'–एकरा संजुक्त वाक्य में ·बदलऽ।

(ग) 'राधा कविता से जादे तेज हे'–एकरा निसेधवाचक में बदलऽ।

(घ) 'ऐस आउ आराम के न चाहऽ हे?' एकरा बिधिवाचक में बदलऽ।

●

पद–परिचय

पद-परिचय : कउनो वाक्य में जेतना पद होवऽ हे ओकर अलग-अलग स्वरूप होवऽ हे आउ ओकर अन्य पद सभन से संबंध भी होवऽ हे। पद-परिचय में एकरे बिस्लेसन हो हे।

1. संग्या के पद-परिचय : एकरा में वाक्य में आयल संग्या के भेद, लिंग, बचन, पुरुस, कारक, क्रिया आउ अन्य पद से संबंध बतावल जा हे। **जइसे :** इहाँ हिमालय, जे बिसाल परबत हे, खाड़ हे।

हिमालय : ब्यक्तिवाचक संग्या, कर्त्ताकारक, पुल्लिंग, एकबचन, अन्यपुरुस।

2. सर्बनाम के पद-परिचय : एकरा में सर्बनाम के भेद, लिंग, बचन, पुरुस, कारक, वाक्य में संग्या के बदले अयला पर क्रिया के उल्लेख कयल जा हे। **जइसे :** हम अप्पन पाठ इयाद करऽ ही।

हम : पुरुसवाचक सर्बनाम, उत्तमपुरुस, उभयलिंग, एकबचन, कर्त्ताकारक, 'इयाद कर ही' क्रिया के कर्त्ता।

अप्पन : निजवाचक सर्बनाम, उभयलिंग, एकबचन, सम्बन्धकारक।

3. बिसेसन के पद-परिचय : एकरा में बिसेसन के भेद, लिंग, बचन, पुरुस, कारक आउ बिसेस्य बतावे पड़ऽ हे। **जइसे :** ओकरा भी एगो लाल साड़ी हल।

एगो : संख्यावाचक बिसेसन, एकबचन, अन्यपुरुस, साड़ी बिसेस्य के बिसेसन।

लाल : गुनवाचक बिसेसन, एकबचन, अन्यपुरुस, साड़ी बिसेस्य के बिसेसन।

4. क्रिया के पद-परिचय : क्रिया के पद-परिचय में भेद, लिंग, काल, बचन, पुरुस, वाच्य आउ अन्य पद से सम्बन्ध बतावल जा हे।

जइसे : सीता मंदिर चल गेल।

गेल : अकर्मक क्रिया, सामान्यभूत, उभयलिंग, एकबचन, अन्यपुरुस, करतरीवाच्य। एकर कर्त्ता सीता हे।

5. क्रियाबिसेसन के पद-परिचय : क्रियाबिसेसन के पद-परिचय में क्रिया के भेद आउ ऊ क्रिया पद के उल्लेख कैल जा हे, जेकर ऊ बिसेसता बतावऽ हे। **जइसे :**

ऊ गते–गते चलऽ हे।

रीतिवाचक, चलऽ हे क्रिया के बिसेसता।

6. अब्यय के पद-परिचय : एकर पद-परिचय में भेद आउ ओकरा से संबंध पद के चरचा कैल जा हे। **जइसे :**

अहा! केतना सुन्दर हे। **अहा–बिस्मयादिबोधक** अब्यय।

अभ्यास के प्रस्न

1. 'इहाँ जमुना, जे पूजनीय नदी हे, बहऽ हे।' ई वाक्य में संग्या के पद परिचय दऽ।
2. 'हम अप्पन आलमारी सजावऽ ही।' ई वाक्य में सर्बनाम के पद परिचय दऽ।
3. 'ऊ धीरे-धीरे भात खाहे आउ पढ़ के सुत जाहे' ई वाक्य के पद-परिचय दऽ।



बिराम आउ अन्य चिह्न

भासा के अर्थ बोध में सुगमता ला वाक्य में स्थान-स्थान पर कम इया अधिक समय तक ठहरे पड़ऽ हे। एही ठहराव के सूचना ला भिन्न–भिन्न चिह्न के परयोग कैल जा हे, जेकरा बिरामचिह्न कहल जा हे।

बिरामचिह्न के प्रकार

मगही में नीचे लिखल बिरामचिह्न के बेवहार होवऽ हे :

(1) पूर्न बिराम (2) अल्प बिराम (3) अर्द्ध बिराम

(4) प्रस्नवाचक चिह्न (5) बिस्मयादिबोधक चिह्न

(6) उद्धरन चिह्न (7) कोस्टक चिह्न

(8) लोप चिह्न (9) योजक चिह्न

(10) बिबरन चिह्न (11) लाघव चिह्न

(12) रेखिका चिह्न (13) पुनरुक्ति चिह्न

(14) त्रुटि चिह्न

(1) पूर्न बिराम : वाक्य के पूर्न समाप्ति पर पूर्न बिराम के परयोग कैल जा हे। **जइसे** : मोहन चल गेल। स्याम पहुँच गेल।

(2) अल्प बिराम : मगही में अन्य भासा नियन अल्प बिराम के परयोग सबसे अधिक हो हे। नीचे लिखल अवस्था में अक्सर एकर बेवहार कैल जा हे :

(क) कोई उक्ति के पहिले। **जइसे** : सोहन कहलक, ''हम कोलकत्ता जरूर जायम।''

(ख) दू इया तीन से अधिक सबद इया वाक्य खंड के एक दूसरा से अलग करे में। **जइसे** : हीरा, लखन, राधा, सोहन आउ मोहन ऐलन। जा, समझऽ आउ कुछ करके देखावऽ।

(ग) केकरो संबोधन करे में। **जइसे** : हे सखी, जा हऽ तऽ जा, बाकि बिसारिहऽ नऽ। हो बेटा, जा के तुरंत चिट्ठी लिखिहऽ।

(घ) जहाँ कोई वाक्य–'खंड काहे कि' 'बाकि' आदि सबद से सुरू हो हे, तो ऊ वाक्य खंड के पहले। **जइसे** : बेटी आयल तो हे, बाकि चारे दिन में चल जायत। कल समय पर न पहुँचम, काहे कि रिक्सा हड़ताल हे।

(ङ) हाँ, न, बस, अच्छा, जइसन सबद के बाद कोई वाक्य आवे तो ई बिभिन्न सबद के बाद। **जइसे** : हँ, ई काम करम। न, हम्मर जी न माने। बस, अब न कहऽ। अच्छा, कहऽ हऽ तो बिस्वास करही पड़त।

(च) दू भिन्नार्थक जुग्म सबद आउ वाक्य खंड के अलग करे में। **जइसे** : सुख आउ दु:ख, नेकी आउ बदी, जीवन में झेले ही पड़े हे। घर या बाहर, सूतते या जागते, भगवान के इयाद करे के चाही।

(छ) मिस्र वाक्य के आस्रित वाक्य से अलग करे में। **जइसे** : हम जइसही चले लगली, मोहन आ गेल।

3. **अर्द्ध बिराम** : अर्द्ध बिराम के बेवहार हुआँ कैल जाहे, जहाँ अल्प बिराम से अधिक ठहरे के जरूरत हो हे। एकर परयोग अक्सर मिस्र वाक्य में हो हे। **जइसे** : हड़ताल बुरा चीज हे; एकरा से राष्ट्र के भारी हानि हे। हम बिद्यार्थी ही; हमरा भारी काम में मत जोतऽ।

4. **प्रस्नवाचक** : जउन वाक्य से प्रस्न करे इया पूछे के बोध होए, हुआँ प्रस्नवाचक चिन्ह आवऽ हे। **जइसे** : का तूँ पढ़ लेलऽ? तूँ कठोर बचन काहे बोलऽ हऽ?

5. **बिस्मयादिबोधक** : बिस्मयादिबोधक चिह्न के परयोग नीचे लिखल स्थिति में होवऽ हे :

(क) मन के हरस, बिस्मय, बिसाद, घिरिना, भय, लज्जा आदि भाव परगट करे में। **जइसे** : पिया–मिलन के सुख के का कहना !

बाप रे! एतना दु:ख !

माय गे! लगे हे कि धरती फटे आउ समाऊँ।

(ख) पूज्य आउ गुरुजन ला सम्मान ब्यक्त करे में।

जइसे हे भगवान! तूँ ही सहारा हऽ।

(ग) सुभ कामना, असीरबाद परगट करे में।

जइसे : दूधो नहा! पूतो फलऽ !

तोहरा पर भगवान के किरिपा बरसे!

6. उद्धरन चिह्न : उद्धरन चिह्न के परयोग दू रूप में कैल जा हे : एकहरा रूप में आउ दुहरा रूप में।

जइसे : एकहरा रूप में ' ' आउर दुहरा रूप में " "।

(क) पुस्तक, पत्र-पतरिका, ब्यक्ति बिसेस, लेखक, स्थान के नाम कोई बिसय के सीर्सक आदि उद्धरन करे में एकहरा उद्धरन चिह्न के बेवहार कैल जाहे।

जइसे : आज अचानक 'शंकराचार्य जी' के दरसन भे गेल। 'धर्मयुग' अच्छा पत्र हे। 'आकाशदीप' कहानी अच्छा हे।

(ख) कोई पुस्तक, लेखक इया बक्ता के कथन के ओही रूप में उद्धृत करे में दुहरा चिह्न के परयोग होवे हे।

जइसे : इन्दिरा गाँधी कहलन हल–"परिश्रम के अलावा कोई रास्ता न हे।"

मगही में एगो गीत के पंक्ति हे—"पान ऐसन पातर गे बेटी! फुलवा ऐसन सुकुमार। कइसे सहबऽ गे बेटी ! ससुरिया में तरवार के धार।"

7. कोस्टक चिह्न : वाक्य में आयल कोई पद बिसेस के स्पस्ट करे में कोस्टक चिह्न के परयोग कैल जा हे।

जइसे : परिवार नियोजन ला सबसे सुन्दर उपाय हे (ब्रह्मचर्य के पालन)। ....(आज अदमी संयम खो देलक हे)।

8. पुनरुक्ति चिह्न : पुनरुक्ति चिह्न के बेवहार एक्के सबद के बार–बार लिखे में कैल जा हे।

जइसे : श्री मोहन सिंह, "स्याम" "राधा" आदि।

9. योजक चिह्न : योजक-चिह्न के बेवहार दू सबद के जोड़े में कैल जा हे। **जइसे :** खाना–पीना, सूतना–जगना, सुख–दुख, रुपया–पइसा, छोटा–नियर, बड़ा–ऐसन आदि।

11. लाघव चिह्न : लाघव चिह्न के परयोग कोई सबद के संच्छेप रूप में लिखे में कैल जा हे। **जइसे :** ता०=तारीख, डी०.लिट्०, डॉक्टर ऑफ लिटरेचर आदि।

12. रेखिका चिह्न : रेखिका चिह्न के परयोग कोई वाक्य के पूर्न करे में कैल जा हे। **जइसे :** आदमी के सफलता के मूल मंत्र है—परिस्रम आउ लगन।

13. बिबरन चिह्न : बिबरन चिह्न के परयोग कोई बिसय इया पद के बेयाख्या करे में कैल जा हे। **जइसे :** नीचे लिखल सबद के अर्थ बतावऽ : अमृत-मंथन, सभ्यता–संस्कृति आदि।

14. त्रुटि चिह्न : जदि लेख के बीच में कोई अच्छर, सबद , पर, वाक्यांस इया वाक्य लिखे में छूट जाए, तो हुआँ त्रुटि चिह्न लगा के छुटल अंस के एगो किनारा में या ऊपर में लिख देवल जाहे।

जइसे : घर से कागज, ^ (कलम) किताब आउ स्याही ले अइहऽ। कलम ^

अभ्यास के प्रस्न

1. 'बिराम-चिह्न' से का समझऽ हऽ ? बिराम-चिह्न कै गो होवऽ हे, चिह्न से साथ बतावऽ?

1. अल्प बिराम के परयोग कहाँ–कहाँ होवऽ हे?

2. योजक चिह्न, प्रस्नवाचक, अर्द्ध बिराम के परयोग कहाँ-कहाँ होवऽ हे?

●

मुहावरा आउ लोकोक्ति

मुहावरा अइसन लाच्छनिक वाक्यांस हे जे सामान्य अर्थ से भिन्न बिलच्छन आउ चमत्कारपूर्न अर्थ के प्रतीक हे। मुहावरा के अर्थ आउ बेवहार प्रसंग के अधार पर होवऽ हे। हरेक मुहावरा के अप्पन लच्छार्थ होवऽ हे। बिना लच्छन इया ब्यंजन सक्ति के एकर अर्थ लच्छित न हो सकऽ हे। मुहावरा कें परयोग स्वतंत्र रूप से न हो के पूर्न वाक्य में होवऽ हे।

लोक में प्रचलित ब्यंजनापूर्न कथन के लोकोक्ति इया कहावत कहल जा हे। कहावत के परयोग से भासा बहुत अर्थब्यंजक आउ रोचक हो जा हे। लोकोक्ति लोक प्रसिद्धि के रूप होवऽ हे। अक्सर ई कउनो कहानी, घटना इया चिरसत्य पर आधारित रहऽ हे।

मुहावरा आउ लोकोक्ति में एगो मुख्य अन्तर ई हे कि मुहावरा के परयोग वाक्य के अन्तरगत हो हे बाकि लोकोक्ति इया कहावत के परयोग एकदम स्वतंत्र आउ पूर्न वाक्य के रूप में हो हे। अइसे तो मुहावरा आउ लोकोक्ति के अप्पन-अप्पन बिसेसता हे, बाकि दुन्नो में एक बात के समानता हे कि दुन्नो के बेवहार से भासा में चुस्ती, चमत्कार आउ लालित्य आ जा हे।

लोकोक्ति इया कहावत

1. **अँधरा के आगे रोवे, अप्पन दीदा खोवे**—बेसमझ के आगे अप्पन दुःख कहे से कोई लाभ न होवऽ हे।
2. **अंधड़ में बगुला के बाह**—भारी उत्पात में कमजोर प्रानी के कुछ भी बल न चले ?
3. **अंधा में काना राजा**—मूर्ख के बीच थोड़ा अक्ल वाला के भी मान होवऽ हे।
4. **अंत भला तो सब भला**—कोई काम में अंतिम सफलता के ही मोल होवऽ हे।

5. **अहार ला आदमी पहाड़ चढ़े हे**—जीविका ला आदमी कइसनो भारी कठिनाई झेले से न डरऽ हे।

6. **अबरा के मउगी सब के भउजी**—कमजोर के चीज पर सब कोई अधिकार जमावऽ हे।

7. **अदरा गेल, तीन गेलन, सन, साठी, कपास**—अदरा नच्छत्र में बरसा न होवे पर सन, साठी, धान आउ कपास के खेती बरबाद हो जा हे।

8. **अप्पन डफली अप्पन राग**—एक मत होके काम न करना।

9. **अप्पन मुँह मियाँ मिट्ठू**—अप्पन बड़ाई अपने करके आदर चाहना।

10. **अपनो दही के कोई खट्टा कहे हे**—अप्पन खराब चीज के कोई खराब न कहे।

11. **सोना के लूट कोइला पर छाप**—अधिक हानि छोड़ के कम हानि के चिंता करना।

12. **एक म्यान में दू तलवार**—एक्के जगह में दू दुस्मन घँसान होना।

13. **एक तो करैला, ऊपर नीम चढ़ल**—बुरा के आउ बुरा संगत मिलना ।

14. **एक तो चोरी, ऊपर सीना जोरी**—अपराधी होके भी निडरपना देखाना।

15. **एगो हरे सौंसे गाँव खाँसी**—तकलीफ ज्यादा आउर उपचार के साधन कम होना।

16. **ओछा के प्रीत बालू के भीत**—छिछला ब्यक्ति के दोस्ती छनिक हो हे।

17. **ओस चाटे से पियास न बूझे हे**—सही जरूरत में कम साधन से काम न चलऽ हे।

18. **कहाँ राजा भोज कहाँ गांगू तेली**—बड़ा से छोटा के तुलना न हो सकऽ हे।

मुहावरा

धुक-चुक करइत : होह-पोह में रहल

पगड़ी रखल : इज्जत रखल

बुतात देवल	:	खोराकी चलावल
भाग चरचरायल	:	एकाएक भाग खुलल
मध चुअल	:	मीठा बोलल
रोआं नोचल	:	सतावल
सिहरी फटल	:	हिचक मेटल
हहास कयल	:	दोसर के बढन्ती देख के जरल
हाथ पीअर कयल	:	बिआह कयल
हाथ पसारल	:	माँगल
हियाव होयल	:	हिम्मत भेल
हेठार में पड़ल	:	ठेठ देहात
चक्की पीसल	:	लगातार काम करइत रहल
घर तलासी कयल	:	घर में खोज-बिन कयल गेल
सबरी के बइर होल	:	जादे भक्ति आउ भरोसा भेल
सोवाहा होयल	:	सब खतम भेल
पासा फेंकल	:	भाग भरोसा करके काम कयल
सवाँग में घून लगल	:	काम करे में असफल होयल
दवा दारू कयल	:	सेवा कयल
पारा गरम भेल	:	खिसिआयल
भट्ठा बइठल	:	सब खतम होयल
छौ इँच छोटा कयल	:	गरदन काटल
कन्या रासि के भेल	:	निकम्मा होल
सनीचरा सवार होल	:	भाग्य खराब भेल
छौ पाँच कयल	:	अधिक बिचार कयल
लेना एक न देना दू	:	कोई संबंध न रखल
लोह माछर होना	:	बिखियायल
अब तब होना	:	मरे के हालत में होयल

तुला राशि के भेल	:	बहुत खिसिआयल
उल्लू के पट्ठा होयल	:	मूर्ख होयल
पापड़े बेलल	:	काम न मिलल
दिल दुखावल	:	चोट पहुँचावल
दिल में समायल	:	करेजा में समायल
कान देवल	:	धेयान देवल
मुँह जूठी कयल	:	नाम मात्र के खाना खायल
पेट जरल	:	बहुत भुखायल
पेट में बात न पचल	:	कोई बात न छिपावे वाला
पेट फटल	:	धीरज न धरल
हाथ जोड़ के पीछे पड़ल	:	तन-मन से पीछे पड़ल
लाल पीअर भेल	:	गुस्सा भेल
दीदा उलटल	:	अस्वीकार कयल
घिउ के दिआ जरावल	:	आनंद मनावल
पेउन लगावल	:	बात सुधारल
पीढ़ा देवल	:	मान-आदर कयल
अँचरा पसारल	:	प्रार्थना कयल गेल
उसकुन काढ़ल	:	छेड़ कयल
एक से एकइस होयल	:	लगातार बढ़ोत्तरी भेल
ओरहन देवल	:	सिकायत कयल
खोपसन देवल	:	उलाहना देवल
धमलउर लगावल	:	भीड़-भड़क्का भेल
टाट उलटल	:	दिवाला भेल
ढोल पीटल	:	सुना के कहल
थू-थू होल	:	घिरकारल
घोघना फूलल	:	रूसल

अभ्यास के प्रस्न

1. नीचे लिखल कहावत के अइसन परयोग करऽ कि ओकर अर्थ सस्ट हो जाय।

   ओछा के प्रीत बालू के भींत

   ओस चाटे से पियास न बूझे हे

   सोना के लूट कोइला पर छाप

   अपनो दही के कोई खट्टा कहे हे

   एक तो करैला, ऊपर नीम चढ़ल

2. नीचे लिखल मुहावरा के अर्थ लिखऽ आउ वाक्य में परयोग करऽ।

   पेट में बात न पचल

   हाथ जोड़ के पीछे पड़ल

   एक से एकइस होयल

   उल्लू के पट्ठा होयल

   तुला रासि के भेल

●

गण	सूत्र	चिह्न	उदाहरन	देवता	फल
तगण	ताराज	SS1	आकाश	नभ	निष्फल
रगण	राजभा	S1S	भारती	अग्नि	मृत्यु
जगण	जभान	1S1	जबान	भानु	रोग
भगण	भानस	S11	साहस	चन्द्रमा	कीर्ति
नगण	नसल	111	जलज	नाग	सुख
सगण	सलगा	11S	वरदा	वायु	वास

तगण, रगण, जगण आउ सगण असुभ गण मानल जा हथ। इनकर बेवहार छन्द के आरम्भ में न कैल जाए।

5. **यति** : यति माने बिराम इया बिस्राम हो हे। लम्बा–लम्बा चरन में उच्चारन के स्पस्टता, लय आउ सुबिधा ला बीच-बीच में रूकल जरूरी हे। सामान्यत: हरेक चरन के अन्त में यति के बेवहार हो हे। बाकि कभी–कभी बीच में यति आ जा हे।

6. **गति** : छंद में संगीत तत्व महत्वपूर्न होवऽ हे। एकरा ला लय आउ प्रवाह पर धेयान पड़ऽ हे। एही प्रवाह आउ लय गति कहलावऽ हे। छन्द में चरन के मात्रा आउ सबद के क्रम ठीक रहे से गति अपने आप आ जा हे। गति न रहे से चरन में लयात्मकता न आवे।

7. **तुक** : छन्द के चरनान्त में समान बरन–स्थापन के तुक कहल जा हे। **जइसे**–प्रतिपाली–मराली; गात–प्रभात आदि तुक बन्दी गद्य के पद्य से अलग करऽ हे। आज कल सब छन्द तुकान्त न होवे। कुछ छन्द अतुकान्त भी होवऽ हे।

छन्द के भेद

छन्द के ***तीन भेद*** करल जा हे :

1. बरनिक 2. मात्रिक 3.मुक्त छन्द

1. **बरनिक छन्द** : जेकरा में बरन के संख्या आउ क्रम के दृस्टि से पद रचना करल जा हे ऊ बरनिक छन्द कहलावऽ हे।

2. मात्रिक छंद : जेकरा में मात्रा के आधार पर पद्य रचना करल जा हे, ऊ मात्रिक छन्द कहलावऽ हे।

बरनिक आउ मात्रिक दुन्नो तरह के छन्द के ***तीन–तीन*** भेद हो हे :

(1) **सम** : एकरा में पद्य के चारो चरन समान होवऽ हे।

(2) **अर्द्धसम** : एकरा में पहिला, तीसरा आउ दूसरा, चौथा चरन के बरन आउ मात्रा में समानता हो हे।

(3) **बिसम** : एकरा में चारो चरन के बरन इया मात्रा में बिसमता होवऽ हे।

26 बरन तक के बरनिक छंद साधारन आउ एकरा अधिक बरन वाला बरनिक छन्द दण्डक कहलावऽ हे जबकि मात्रिक छन्द में 32 मात्रा तक के छन्द साधारन आउ 32 से अधिक मात्रा वाला दंडक कहलावऽ हे।

3. मुक्त छन्द : मुक्त छन्द में बरन आउ मात्रा के बन्धन न हो हे। एकर चरन में असमानता हो हे।

मात्रा के गिनती (गनना) के सामान्य नियम

मात्रिक छन्द में मात्रा के गनना के महत्वपूर्न स्थान हे। मात्रा के गनना के सामान्य नियम नीचे लिखल हे :

1. अ, इ, उ, ऋ ह्रस्व स्वर आउ इनका से संजुक्त ब्यंजन लघु होवऽ हे। **जइसे** : असकत (1111) आदि।
2. चन्द्र बिन्दु जुक्त बरन लघु हो हे। जइसे–हँसल (111) आदि।
3. दीर्घ स्वर–आ, ई, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ आउ इनका से संजुक्त ब्यंजन गुरु हो हे। **जइसे** : रामा–ऽऽ, गीता–ऽऽ आदि।
4. संजुक्ताच्छर के पहिले वाला ह्रस्व बरन गुरु मानल जा हे। **जइसे** : तथ्य–ऽ।, कथ्य–ऽ।
5. अनुस्वारजुक्त बरन गुरु हो हे। **जइसे** : कंधा–ऽऽ
6. बिसर्ग युक्त बरन गुरु हो हे। **जइसे** : दु:ख–ऽ।

छन्द बिचार

छन्द :'पद्यरचना' जे अच्छर के संख्या आउ क्रम, मात्रा के गिनती आउ यति–गति से सम्बद्ध बिसेस नियम से नियोजित होय, छन्द कहला हे।

'पद्य के सृस्टि 'छन्द' के अनुसार होवे के कारन एकरा (छन्द के) पद्यरचना के मानक कहल जा हे। एकरा से 'पद्य' में प्रवाह, लय, गेयता, संगीतात्मकता के साथे–साथ प्रभावान्विति के आधान हो हे।

छन्द के अंग

छन्द के अंग नीचे लिखल हे : 1. चरन (पाद) 2. बरन आउ मात्रा 3. संख्या आउ क्रम 4. गण 5. यति 6. गति 7. तुक

1. चरन इया पाद : 'पद्य के एक पंक्ति चरन कहलावऽ हे। 'पद्य' के हरेक चरन में बरन इया मात्रा के संख्या क्रमानुसार नियोजित करल जा हे।

संख्या के अधार पर चरन के दू भेद हे–सम आउ बिसम

'पद्य के दूसरा आउ चउथा चरन सम आउ पहिला आउ तीसरा चरन बिसम कहलावऽ हे।

2. बरन आउ मात्रा : बरन माने अच्छर होवऽ हे। बरन दू तरह के होवऽ हे–ह्रस्व आउ दीर्घ। सामान्यत: ह्रस्व स्वर वाला बरन के एक मात्रा होवऽ हे आउ ऊ लघु कहलावऽ हे। दीर्घ स्वर वाला बरन के दू मात्रा हो हे आउ ऊ गुरु कहलावऽ हे।

(क) अ, इ, उ, ऋ आउ ऌ ह्रस्व स्वर हथ। ई सब के उच्चारन में जे समय लगऽ हे ओकर नाम मात्रा हे। ह्रस्व स्वर के एक मात्रा मानल जा हे। लघु बरन के चिन्ह हे :

(1) सीधा खड़ा रेखा : (I)।

(ख) आ, ई, ऊ ॠ, ए, ऐ, ओ, औ, दीर्घ स्वर हे। लघु इया ह्रस्व स्वर के अपेच्छा दीर्घ स्वर के उच्चारन में अधिक समय लगऽ हे। ई लेल इनका

दीर्घ स्वर कहल जा हे। इनकर दू मात्रा मानल जा हे। गुरु इया दीर्घ बरन के चिन्ह हे : (ऽ) बिकारी इया अंग्रेजी के एस (ऽ) अच्छर।

3. संख्या आउ क्रम : बरन इया मात्रा के गनना के संख्या कहल जा हे। **जइसे** : पान सन पातर सजनी, फुलवा सन सुकुमार।

इहाँ मात्रा के संख्या 24 आउ बरन के संख्या 19 हे।

लघु आउ गुरु बरन के मात्रा के स्थान के निर्धारन इया नियोजन के क्रम कहल जा हे।

4. गण : तीन बरन के समूह गण कहलावऽ हे। गण से लघु–गुरु के निर्धारन आउ गनना हो हे। गण आठ हथ, जिनकर जानकारी ला ई स्लोक प्रचलित हे :

आदि मध्यावसानेसु य–र–ता यान्ति लाघवम्।
भ–ज–सा गौरवं यान्ति म–नौ तु गुरु लाघवम्।।

अर्थात् यगण, रगण आउ तगण में क्रमसः पहिला, दूसरा आउ अन्तिम बरन लघु होवऽ हे। भगण, जगण आउ सगण में क्रमसः पहिला, दूसरा आउ अन्तिम बरन गुरु होवऽ हे। बाकि मगण में तीनो गुरु आउ नगण में तीनो लघु बरन होवऽ हे।

गण के नाम आउ ओकर रूप के सस्ट करे ला एगो सूत्र भी प्रचलित हे : 'यमाताराजभानसलगा'.

ई सूत्र के पहिला आठ बरन, आठ गण के नाम हे आउ आखिरी दू बरन 'ल' आउ 'ग' लघु आउ गुरु के सूचक हथ। जउन गण के उल्लेख करेला हे, ऊ गण के आरंभ के अच्छर आउ ओकर आगे के दू बरन तक लघु इया गुरु देके ओकर रूप जानल जा हे। बिभिन्न गण के नाम, रूप, चिह्न, उदाहरन आउ फल आदि के बिबरन :

गण	सूत्र	चिह्न	उदाहरन	देवता	फल
यगण	यमाता	।ऽऽ	गजाला	जल	वृद्धि
मगण	मातारा	ऽऽऽ	भोराहा	भूमि	मंगल

7. सबद के अन्त के अर्ध ब्यंजन के लघु मानल जा हे।

जइसे : श्रीमान्–ऽऽ।

मगही में कोई बरन के ह्रस्व इया दीर्घ अनायास रूप में करल जा सकऽ हे। ई उच्चारन पर निर्भर करऽ हे। जब लघु बरन के उच्चारन गुरु बरन जइसन करल जाए तब ओकरा गुरु मान के मात्रा के गिनती करल जा हे। अइसहीं जब गुरु बरन के उच्चारन लघु बरन जइसन करल जा हे तब ओकर मात्रा के गिनती लघु बरन नियन करल जा हे।

प्रमुख छन्द

(1) चौपाई : चौपाई मात्रिक छन्द हे। एकरा में ***चार चरन*** होवऽ हे। एकर हरेक चरन में सोलह गो मात्रा होवऽ हे। पहिला आउ दूसरा चरन के तुक आउ तीसरा आउ चउथा चरन के तुक मिलऽ हे। चरन के अन्त में जगण (।ऽ।) इया तगण (ऽऽ।) के न रखल जा हे।

उदाहरन : हरखित भेलन रामजी कइसे।
प्यासल हिरन पाइ जल जइसे।।
भेलन बानर–भाल अनन्दा।
मुसकत कुमुद पाप जस चन्दा।। —*परमेश्वरी*

उदाहरन : तेज जहाँ उहँ सकल खजाना।
चमकत पुनिया चान समाना।।
चान चकोर निहारत राती।
ढिबरी संग तेल अरु बाती।। —*घमण्डी राम*

(2) रोला : रोला अवतारी जाति के सममात्रिक छन्द हे। एकर हरेक चरन में चौबीस मात्रा होवऽ हे। इगारह आउ तेरह पर यति के बिधान हे।

उदाहरन : 1. फूल–पात झुलस गेल धरती भेलय चुल्हा।
जनावर पियासल फिरय काग के मुँह खुल्ला।। —*मिथिलेश*

2. हम ही कइसन पूत, नित पिये खून के घूँट।
खाये नित बबूरे, हम तो ओहे ही ऊँट।।—*घमण्डीराम*

(3) दोहा : दोहा अर्द्धसम मात्रिक छन्द हे। एकर पहिला आउ तीसरा चरन में तेरह–तेरह मात्रा आउ दूसरा आउ चउथा चरन में इगारह–इगारह गो मात्रा होवऽ हे। यति चरन के अन्त में होवऽ हे। बिसम चरन के आदि में जगण न रहऽ हे आउ सम चरन के अन्त में गुरु–लघु आना जरूरी हे आउ अन्त में दुन्हु के तुको मिलऽ हे।

उदाहरन : 1. तीन ताप से हिय हमर, तपल रहे दिन–रात।
अइहऽ भले न स्याम तू, पुलक पसिजतो गात।।
—जनक नन्दन प्रसाद सिन्हा 'जनक'

2. पर्यावरन बचाव के, एक्के साधन नेक।
रोपऽ जब दस पेड़ के, तबे उखाड़ऽ एक।।
—डॉ अभिमन्यु प्रसाद मौर्य

3. मानुख जग में जीत के, सेहरा जबहि पाय।
पाँव न धरती पर पड़े, उड़त अकासे जाय।।
—घमण्डी राम

(4) सोरठा : सोरठा अर्द्धसममात्रिक छन्द हे। ई दोहा के ठीक उल्टा हो हे। एकर पहिलका आउ तिसरका चरन में इगारह–इगारह मात्रा आउ दुसरका आउ चउथा चरन में तेरह–तेरह मात्रा होवऽ हे। सम चरन के आदि में जगण न होवऽ हे आउ बिसम चरन के आखरी बरन लघु रहऽ हे आउ दुन्हु के तुको मिलऽ हे।

उदाहरन :1. धरती करइ बियाह, लगावे चन्दा उबटन।
हरा घोघ के ओट, चलावे दुल्हिन चितवन। *—रामकृष्ण मिश्र*

2. घर में छिपे सरीफ, जब नाचे सगरे दुस्ट।
सज्जन भूखे पेट, दुरजन मखन तबे पुस्ट।। *—घमण्डी राम*

(5) कुण्डलिया : ई एगो संजुक्त मात्रिक छन्द हे। ई दू मात्रिक छन्द–'दोहा' आउ 'रोला' के संजोग से बने हे। एकरा में छह चरन हो हे। हर चरन में 24-24 मात्रा होवऽ हे। एकर सुरू के दू चरन एगो दोहा के रूप मे रहऽ हे। ओकर बाद चार चरन रोला छन्द में रहे हे। बाकि रोला के पहिला चरन, दोहा के अन्तिम चरनवाला खंड होवऽ हे। कुंडलिया में प्रारंभ में बेवहार में आवे वाला सबद ओकर अन्त में भी प्रयुक्त कैल जा हे। 'यति' दोहा आउ रोला नियन होवऽ हे।

उदाहरन : 1. दुलहिन बारह बरस के साठ बर्स के दुल्हा।
चलल उ बरात सजा के, मुहाँ जइसे चुल्हा।।
मुहाँ जइसे चुल्हा, सिकुड़ल तनमा के चाम।
लगऽ हइ लँगूर नियन, ऊ पूरा बूढ़ा झाम।।
कहई 'मगहिया' कवि आल बुढ़वा के दुरदिन।
देख के अइसन वर, उहाँ से भागल दुल्हिन।।

—संत राम नगीना सिंह 'मगहिया'

2. पीये लगलन दूध जब, सगरो सिरी गनेस।
चम्मच आउ गिलास ले, दउड़ल सउँसे देस।।
दउड़ल सउँसे देस, मचल हल्ला बिदेस में।
बदल के पापी रूप, पहुँचलन भक्त बेस में।।
कहे 'मौर्य' मुसकाय, आज भगवानो जगलन।
शक्ति देखावे ला, दूध ऊ पीये लगलन।।

—डॉ० अभिमन्यु प्रसाद मौर्य

(6) **अरिल्ल** : अरिल्ल छन्द में सोलह मात्रा होवऽ हे।
चरन के अन्त में दुगो लघु (।।) होवऽ हे।

उदाहरन : पग चंचल तुरते में ठिठकल,
बस एके कदम चल के ठमकल।
ऊ अपलक पूत निहारित हल,
तम चुपके पाँव पसारित हल।

—प्रो० अवधेश कुमार सिन्हा

7. हरिगीतिका : हरिगीतिका जौगिक जाति के सममात्रिक छन्द हे। एकर हरेक चरन में अठाइस मात्रा होवऽ हे। सोलह आउ बारह मात्रा पर यति होवऽ हे। चरन के अन्त क्रम में एगो लघु आउ एगो गुरु होवऽ हे।

उदाहरन : पता न कइसे तोरा हम्मर, तनिक याद न आवऽ हे।
भादो के ई रैन अँधरिया, हाय बहुत सतावऽ हे।।
झिंगुर के झन्नाहट सुन के, चैन तनिक न आवऽ हे।
बरखा के हहरौआ हावा, हमरा हद जड़ावऽ हे।।

8. किरीट सवैया : किरीट सवैया चौबीस अच्छर के संस्कृति जाति के बरनिक समवृत छन्द हे। एकर हरेक चरन में आठ गो भगण (ऽ।।) होवऽ हे।

उदाहरन : मानव दानव से बढ़ गेलक, भारत पापन से भर गेलक।
केकर–केकर नाम धरूँ हम, लोगन हे मुख छाजन देलक।।
ओढ़न–लोढ़न चोरन भूठन, रूप न देखल जाय सके अब।
भेदन–छेदन खोलब जेकर, मुँह में लकड़ी लगवे जब।।

—प्रो० दशई सिंह

9. लावनी : लावनी महातैथिक जाति के सममात्रिक छन्द हे। एकर हरेक चरन में तीस मात्रा होवऽ हे। सोलह आउ चउदह मात्रा पर यति होवऽ हे। चरन के अन्त में लघु–गुरु के कोई बंधन न होवऽ हे।

उदाहरन : उमड़–घुमड़ घन घिरल अकसवा, चमकल आँख के कोर रे।
राधा के फोरलक गगरिया, नटखट नवल किसोर रे।।
ओकर दसा देख घन कानै, टपकइ टपाटप लोर रे।
या चाँदी के हँसली छिन के, भागलइ हाथा चोर रे।।

— जयराम सिंह

10. तोमर : तोमर के हरेक चरन में बारह मात्रा होवऽ हे। चरन के अन्त में एगो गुरु बरन (ऽ) आउ एगो लघु बरन (1) होवऽ हे।

उदाहरन : हरिअरि बिछल हर ठाउँ।
देख भारत के गाउँ।।
गूँज हइ मंगल गीत।
जग्ग हइ मन में प्रीत।। *—शिवदानी भारती*

अभ्यास के प्रस्न

1. छन्द केकरा कहल जा हे? छन्द के अंग पर अप्पन बिचार व्यक्त करऽ।
2. छन्द के भेद कै गो होवऽ हे ? बरनन करऽ।
3. नीचे लिखल छन्द के उदाहरन के साथ बरनन करऽ–चौपाई, दोहा, रोला, सोरठा, कुण्डलिया।

अलंकार

पाठ्यक्रम में रक्खल गेल अलंकार के बारे में जाने के पहिले ई जानना जरूरी हे कि अलंकार केकरा कहल जा हे। 'अलंकार' सबद अलम्+कार दू सबद के जोड़े से बनल हे। 'अलम्' के माने हो हे गहना, जेवर, सजावट आउ सोभा जनक बस्तु आदि। 'कार' के अर्थ हो हे कर्त्ता, करेवाला आदि। मतलब ई भेल कि जेकरा मारफत भूसित इया अलंकृत कैल जाय, उहे अलंकार हे। एकरा बारे में संस्कृत आउ हिन्दी के जानकार लोग अप्पन-अप्पन ढंग से राय देलन। बाकि आगे चलके दण्डी के नीचे लिखल सूत्र अलंकारवादी लोग के मान्य बनल :

'काव्यशोभाकरान् धर्मान् अलंकारान् प्रचक्षते'। यानी काव्य के सोभा बढ़ावेवाला धरम के अलंकार कहल जा हे। दण्डी के ई मत के मानइत आचार्य वामन के ई घोसना भेल :

'काव्यं ग्राह्यमलंकरात्।'

मतलब ई भेल कि काव्य मात्र अलंकारे के चलते अपनावे योग्य हे। फिन ऊ 'सौन्दर्यमलंकारः' के सूत्र देके अलंकार के छेतर के पूरा बिकसित कर देलन।

नवमाँ सताब्दी के आसपास अग्निपुरानकार जयदेव आ के ई घोसना कैलन कि अलंकार के बिना काव्य बिधवा औरत जइसन हे :

'अलंकार रहिता विधवेव सरस्वती।' बिरोधी खेमा के आचार्य कुन्तक भी- घुमा-फिराके अलंकारे के समर्थन करइत कहलन : **'सालंकारस्य काव्यता।'**

आगे चलके तेरहवाँ सदी में 'चन्द्रालोक' के रचयिता जयदेव आचार्य मम्मट के **'अनलंकृती पुनः क्वापि'** के खंडन करइत कहलन कि जे लोग अलंकार–सून्य सबदार्थ में काव्यत्व के स्वीकार करऽ हथ ऊ लोग आग में सीतलता काहे न मानथ?

'अंगीकरोति यः काव्यं शब्दार्थावनलंकृती ।
असौ न मन्यते कस्मादनुष्णमनलंकृतां ।।'

अब दोसर वर्ग के बिदमानन के बिचार जानल जाय जे अलंकार के खाली काव्य के सोभा करेवाला धरम आउ बाहर से सँवारे–सजावेवाला (उपस्कारक) मानऽ हथ। आचार्य मम्मट कहलन कि काव्य में अलंकार के अनिवार्यता जरूरी न हे।

'अनलंकृती पुनः क्वापि।'

आचार्य विश्वनाथ के राय आएल :

'उत्कर्षहेतवः प्रोक्ता गुणालंकार रीतयः।'

कहे के माने ई कि ऊ गुन आउ रीति के साथ अलंकार के काव्य में रस माननलन। फिर पं० विश्वनाथ अलंकार के काव्य के अस्थिर धरम स्वीकार करइत ओकरा अंगद आदि अइसन सोभा के बहुत बढ़ावेवाला आउ रस के उपस्कारक कहलन।

हिन्दी में अलंकारवादी आचार्य केशवदासजी कविता में अलंकार के रहना एकदम जरूरी मानऽ हथ। कहऽ हथ :

'भूषण बिनु न बिराजई कविता वनिता मित्त।'

दूलह कवि कहलन—**'बिन भूषण नहिं भूषई, कविता वनिता यार।'**

दोसर तरफ देव, पद्माकर आउ लच्छिराम अलंकार के काव्य के सहज गुन न मान के, सोभातिसायी धरम माने के पच्छ में बुझा हथ :

'कविता कामिनी सुखद प्रद, सुबरन सरस सुजाति ।
अलंकार पहिरे अधिक, अद्भुत रूप लखाति ।।'

पद्माकर के राय हे—

'सगुन सुभूषन सुभ सरस, सुबरन सुपद सराग।
इमि कविता अरु कामिनी, लहै जु सो बड़भाग।।'

लछिराम तो आउ साफ कहऽ हथ :

'भूषणवत पद अर्थ में अलंकार अनुमान।'

निचोड़ रूप में कहल जा सकऽ हे कि अलंकार काव्य के बाहरी धरम हे, भीतरी धरम न हे। ऊ बानी के बिसेस सोभा हे। ओकरा से काव्य के खूबसूरति बढ़ जा हे। खेयाल एही रहे कि अलंकार सब के परयोग जबरदस्ती न होय।

अलंकार के ***तीन भेद*** हो हे—सबदालंकार, अर्थालंकार आउ उभयालंकार। नाम के अनुरूप सबदालंकार सब्दाश्रित, अर्थालंकार अर्थाश्रित आउ उभयालंकार सबदारथाश्रित हो हे।

ऊपर लिखल पीठिका के आलोक में अब सिलेबस में निरधारित कैल गेल अलंकार सब पर एक नजर डालल जाय। पाठ्यक्रम में निरधारित अलंकार हे : अनुप्रास, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, यमक, श्लेस, वक्रोक्ति, संदेह, भ्रान्तिमान, विरोधाभास।

अनुप्रास

लच्छन : (क) **'व्यंजन सम बरु स्वर असम, अनुप्रासऽलंकार।**
छेक, वृत्ति, श्रुति, लाट अरु, अंत्य पाँच विस्तार।।'

—लाला भगवान दीन

(ख) **'अच्छर सम बरु स्वर असम अनुप्रासऽलंकार।'**

—पं० विश्वनाथ प्रसाद मिश्र

जहाँ ब्यंजन अर्थात् अच्छर सबद के समानता देखावल जाय, चाहे उनकर स्वर मिले इया न मिले, उहाँ अनुप्रास अलंकार होवऽ हे। 'अनुप्रास' सबद 'अनु+प्रास' से बनल हे। 'अनु' के अर्थ हो हे बार-बार आउ 'प्रास' के रखना। मतलब ई कि जहाँ बार-बार ओही बरन (वर्ण) रक्खल जाय, उहाँ अनुप्रास अलंकार हो हे।

उदाहरन : (क) **पीपर के पत्ता में छिपके, चह-चह चिरईं के चहक रहल।** (वृत्य०)

(ख) **चह-चह चिरई के सोर भेल।** (वृत्य०)

(ग) **धो रहल हे जोति-जल से, कालिमा के दाग साथी!!** (छेकानुप्रास)

(घ) **बँसुरिया, बाज, बाज रे, बाज।** (वृत्यनुप्रास)—*सुभाषचन्द्र 'किंकर'*

देल गेल उदाहरन में क्रमसः प, च, ज, आउ ब, ब्यंजन के आविरति होय से अनुप्रास अलंकार हे।

अनुप्रास के ***पाँच भेद*** हो हे : छेकानुप्रास, वृत्यनुप्रास, श्रुत्यनुप्रास, लाटानुप्रास आउ अंत्यानुप्रास।

छेकानुप्रास

लच्छन : जहाँ एक बरन के इया अनेक बरन के समानता केवल एक बाजी होय उहाँ छेकानुप्रास होवऽ हे।

'छेक' के माने हो हे चतुर। चतुर लोग एकर परयोग करऽ हलन। ई लेल नाम पड़ल छेकानुप्रास।

उदाहरन : (1) **'ठनका ठनकै बाजे तबला ।**
बाँध घुँघरुआ नाचे चपला ।।' —*जयराम सिंह*

ई उदाहरण में 'ठनका ठनकै' में 'ठ, न, क' ब्यंजन के एक्के बाजी स्वरूप आउ क्रम से आविरति होय से 'छेकानुप्रास' हे।

(2) **बहुत साफ-सुत्थर हे ई, ई उंचगर-निचगर** —*स्वर्ण किरण*

(3) **चतुरा सखि स्याम के प्रेम में लीन रहथ**—*चतुरानन्द मिश्र 'चतुरा'*

(4) **जय गउ माता जगजन जोती।** (वृत्य+छेक)
माथ सिन्धु सुर निकसल मोती।। — *रामप्रवेश 'रश्मि'*

(5) **बाल बेलि सूखल सुखद, यहि रूखे रूख धाम।**

वृत्यानुप्रास

लच्छन: जहाँ एक इया अनेक ब्यंजन के समानता कईएक बाजी होय उहाँ वृत्यनुप्रास अलंकार हो हे।

(1) **'पीत पट पेन्हि-पेन्हि पठंगा लगावऽ हें।'** —*जयनाथ कवि*

इहाँ प ब्यंजन के समानता इया आविरति कई बाजी होय से वृत्यनुप्रास हे।

(2) **ई फूलवन के गंध कि मौसम महक रहल ।**
मादक मधु से मत्त मदिर मन बहक रहल ।।'—*सुरेश विमल*

अरे रामा पिया पेठावे न पतिया कि जिया कुहुँकावे ए हरि।
अरे रामा ठनका ठनक ठनकावे ठिठुर मन काँपे ए हरि।।

—*घमण्डी राम*

इहाँ प, र, क, ठ बार-बार आवे के कारन अनुप्रास अलंकार हे।

नोट : अनुप्रास के सब भेद के जानना जरूरी न हे।

उपमा

'जहँ सादृस तें होत है, सोभा को परकास।'

इया

'यहि विधि सब समता मिलै, उपमा सोई जानि।'

दू अलग-अलग चीज के बीच समानता बतलाना उपमा हे। 'उपमा' सबद उप + मा से बनल हे। 'उप' के माने हो हे नजदीक से आउ 'मा' के तउलना, देखना। ई अलंकार में दू भिन्न चीज के नजदीक में रख के देखल जा हे आउ ओकरा में समानता बतावल जाहे। ई लेल नाम उपमा पड़ल।

उपमा अलंकार के ***चार गो*** अंग हो हे :

उपमेय, उपमान, सादृस्यवाचक सबद आउ साधारन धर्म।

उपमेय : जेकर बरनन कैल जाय—मुँह आदि।

उपमान : जेकरा से समानता बतावल जाय—चाँद आदि।

सादृस्यवाचक सबद : जउन सबद के आस्रय से समानता बतावल जाय–सो, से, सी, अइसन, इव, सन, सम, समान, ज्यों, जइसे, इमि, जिमि आदि।

साधारन धर्म : जउन हेतु समता देल जाय।

उदाहरन : (1) **हथिनी अइसन चाल तुरत सबके मन मोहऽ हे।** –स्वर्णकिरण

(2) **चान-सूरुज सम जोति जिन्हकर, चमक रहल हे ग्यान।**–*दशई सिंह*

(3) **दिल दरक उठल ककड़ी अइसन।**
विस्वास गलल ओला अइसन। —*रामनरेश प्रसाद वर्मा*

ई उदाहरन में 'दिल' उपमेय, 'ककड़ी' उपमान, 'दरक उठल' साधारन धर्म आउ 'अइसन' वाचक पद रहे से 'उपमा' अलंकार हे।

रूपक

'उपमेयरु उपमान मिलि एक रूप ह्वै जाहिं।
यह रूपक जो रूप है, समुझि लेहु मन माहिं।।'

लच्छन : जहाँ उपमेय के उपमान-रूप कहल जाय उहाँ रूपक अलंकार होवऽ हे। 'रूपक' सबद 'रूप+क' से बनल हे, जेकर अर्थ होहे रूप धारन करना। ई अलंकार में उपमेय उपमान के रूप धारन कर ले हे। ई लेल 'रूपक' नाम पड़ल।

उदाहरन : (1) **पूजऽ जी, मेहनत–महादेव के पूजऽ तों।**
बूझऽ जी, एकरे महातम के बूझऽ तों।।

— *चक्रधर प्रसार सिंह 'मृदुल'*

ई उदाहरन में 'मेहनत' में 'महादेव' के निसेध रहित आरोप कैल जाय से 'रूपक' अलंकार हे।

(2) **आत्म शक्ति के जोत अगर गलती से आयल।**
पाप-बैल के खुर से ऊ ज्यों गेल कचारल।।–*स्वर्ण किरण*

(3) **प्रभु के प्रेम-पयोधि न बूड़ल, जेकर हीया पसान।**–*दशई सिंह*

(4) **चिक्कन चित्त सनेह बस, चटक इयारी यार।**
राजस-धूरी लगइते, मइले रुखर विचार।।

(5) **गुंज पुंज भंवरा करे, घंट बजा मधुदान।**
झुमते मन्द चलल हवा, हाथी चाल समान।।

–*'मगही बिहारी सतसई' से।*

नोट : रूपक के दू भेद हो हे–अभेद आउ तद्रूप।

उत्प्रेक्षा

आन बात को आन में जहँ संभावन होय।

लच्छन : जहाँ उपमेय के उपमान रूप में संभावन कैल जाय उहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार हो हे इया प्रस्तुत के अप्रस्तुत रूप में संभावना उत्प्रेक्षा हो हे।

'उत्प्रेक्षा' सबद 'उत्+प्र+ईक्षा' से बनल हे, जेकर माने हो हे प्रधानता से बलपूर्वक देखना। एकरा में बलपूर्वक उपमेय में उपमान के संभावना कैल जा हे।

उत्प्रेक्षा के ***तीन मुख्य*** भेद हो हे—वस्तूत्प्रेक्षा, हेतूत्प्रेक्षा, फलोत्प्रेक्षा।

'उत्प्रेक्षा' संभावना वस्तू हेतू फल लेखि।'

उदाहरन : (1) किला रूप लगऽ हे बाहर से देखे में
दीप रहल हे कउन रोशनी अनु-अनु, कन-कन में?

उरूवेला गाँव के सेनानी कस्बा बाहर से देखे में मानो किला रूप लगऽ हे। इहाँ उपमेय में उपमान के संभावना के कारन उत्प्रेक्षा अलंकार हे।

(2) **'रैनि के कमल लेखा मुँदल नयनमा ।
मुँहमा मलिन जनु भोरवा के चनमा ।।'**—*श्रीकान्त शास्त्री*

ई उदाहरन में उपमेय 'मुँदल नयनमा' में उपमान 'रैनि के कमल' आउ उपमेय 'मुँहमा मलिन' में उपमान 'भोरवा' के चनमा' के बल के साथ आरोप करे से उत्प्रेक्षालंकार हे।

(3) **'बन-बन सगर फुलायल हे, फैलल राज बसंत।
योगिन ला हे मनो रितु, पिंजरा तीर दिगंत।।'**

(4) **'नील अंचरवा में लुकल, मुँह छवि साफ लखाय।
जमुना जल बीचे मनो, चाँद झलक रह जाय।।'**

यमक

लच्छन : (क) वहै सब्द फिरि-फिरि परै, अर्थ औरई और।
(ख) जमक, सब्द को फिरि श्रवन, अर्थ जुदा सो जानि।

जहाँ काव्य में उहे सबद बार-बार सुनाई पड़े, बाकि अर्थ अलग-अलग हो जाय, ओकरा यमक अलंकार कहल जा हे।

'यमक, सबद के माने हो हे 'दू'। एकरा में एक सबद के परयोग कम से कम दू बाजी इया बार-बार भी हो हे, बाकि अर्थ बदलइत जा हे।

उदाहरन : (1) **'मर हम भी गेली मरहम न मिलल ।
हम दम भी देली, पर दम न मिलल।।'**

हम दरद से मर भी गेली, पर मरहम न मिलल। हम सहारा भी देली, बाकि ऊ बेद में रहलन। ई लेल 'यमक' अलंकार हे। एक्के सबद के परयोग दू बाजी भेल हे आउ दू अर्थ में।

(2) **जब आँख लगऽ हे तब आँख लगबे न करे।**

(3) **रे ताज भले तू ताज बनल हें मुरदा लऽ।**
काँटा बनके तूँ बइठल हें हमरा जी के।।

—योगेश्वर प्रसाद सिंह 'योगेश'

जे पहुँची तू भेजलऽ हे ऊ पहुँचल भी तऽ का पहुँचल ।
जे पहुँची हम पेन्हली हे ऊ पहुँची तक न पहुँचल हे ।।

श्लेष

(क) एक शब्द में होत जहँ, बहु अर्थन को ज्ञान।
(ख) दोय तीन अरु भाँति बहु, आवत जामे अर्थ।

लच्छन : काव्य में अइसन सबद के परयोग होय जेकर दू, तीन अर्थ रहे, श्लेष कहलावऽ हे। 'श्लेष' सबद के अर्थ हो हे मिलल, सटल, चिपकल आदि। ई अलंकार के खूबी हे कि एक्के सबद में कईएक अर्थ मिलल, सटल, चिपकल रहऽ हे।

उदाहरन : (1) एके श्रुति के सेबइत, तरकी तर रह गेल।
नाक बसल नकबेसरी, मुक्तन के संग भेल।।

—जनकनन्दन प्रसाद सिन्हा 'जनक'

ई उदाहरन में 'श्रुति' सबद में दू अर्थ हे—कान आउ वेद। इहे तरह से 'तरकी' के माने भेल (1) करनफूल आउ (2) तर रह गेल अर्थात् न तरल। नाक = (1) नाक = (2) सरग। बेसरी= (1) नाक के गहना नकबेसर (2) जे बराबरी के न होय। मुक्तन = (1) मोती आउ = (2) मुक्त लोग।

बिहारी के अनूदित दोहा के दू अर्थ हो जाय से श्लेष अलंकार हे।

(2) **चिक्कन चित सनेह बस, चटक इयारी यार ।**
राजस धूरी लगइते, मइले रुखर विचार ।।–ओही

ई उदाहरन में 'राजस धूरी' आउ 'सनेह' सबद में दू-दू अर्थ होय से श्लेष अलंकार हे।

(3) **पाके गुन गुड्डी नियन, लट्टू हथ भगवान।**
निरगुन फिरथ भागथ गुने, माधव! भगत सुजान।।

(4) कोठी में धान तऽ कोठी में सान हे।
कोठी = (1) अनाज रक्खेवाला खोभार (2) महलाद

वक्रोक्ति

(क) **होय स्लेष सों काकु सौं कल्पित औरे अर्थ।**
ताहि कहत वक्रोक्ति हैं, सिगरे सुकवि समर्थ।।

(ख) वक्रोक्ति स्वर स्लेष सों अर्थ-फेर जो होय।

लच्छन : जहाँ श्लेष इया काकु से कहेवाला के कथन के सूनेवाला दोसरा अर्थ निकाल ले उहाँ वक्रोक्ति अलंकार हो हे।

वक्रोक्ति सबद 'वक्र+उक्ति' से बनल हे जेकर माने हो हे टेढ़ कथन।

एकर दू *भेद* हो हे—श्लेष 'वक्रोक्ति' आउ काकु वक्रोक्ति।

उदाहरन : श्लेष से वक्रोक्ति–

एक कबूतर देख हाँथ में पूछल कहाँ अपर हे?
ऊ कहलक अपर कइसन? ऊ उड़ हे गेल सपर हे।

इहाँ 'अपर' सबद के दू अर्थ–(1) दोसरा (2) बिना डैना के निकाले से श्लेष से वक्रोक्ति हे।

काकु से वक्रोक्ति— **हम सुकुमार नाथ बन जोगू।**
तोरा उचित तप हमरा भोगू।।

इहाँ सीता राम से काकु मतलब कंठ ध्वनि के सहायता से कहित हथ कि अपने के तप आउ हमरा भोग उचित न हे। ई लेल काकु से वक्रोक्ति हे।

संदेह

निश्चय होत नहीं है जहाँ, कहि संदेह अलंकृत तहाँ।

लच्छन : समानता के कारन जब उपमेय में उपमान के संसय के बखान कैल जाय तब 'संदेह' अलंकार हो हे। एकरा में अंत-अंत तक संदेह बनल रहऽ हे।

उदाहरन : (1) धरती के आंचर आग लगल,
चिनगी ले चलल उनचास पवन।
झंझा झट उठल झकोर सगर,
आसा-तिनका हो गेल हवन।।

–रामनरेश प्रसाद वर्मा

ई उदाहरन में गरमी से धिपल धरती में 'आग लगल आँचर' के संदेह होय से 'संदेह' अलंकार हे।

(2) नारी बीच सारी हे कि सारी बीच नारी हे।

(3) ई काया हे इया सेस ओकरे छाया,
छनभर लछुमन के समझ में न आया।।

(4) विरह हे इया ई वरदान।

(5) चंद्रकला इया चंचला इया चंपा के माल।

भ्रान्तिमान

भ्रान्ति और की और मैं निश्चय जब अनुमान।

लच्छन : एक वस्तु में दोसर वस्तु के निस्चयात्मक ग्यान भ्रान्तिमान मानल जा हे । एकरा में संदेह अलंकार जइसन ई हे कि ऊ हे के स्थिति न रहे।

उदाहरन : (1) नया बटोही बाबरा, भाग घरे घुर गेल।
फुलल पलास बन आग हे, डरल जरे के खेल।।

— जनकनन्दन प्रसाद सिन्हा 'जनक'

समय हे बसंत रितु के। नायक जंगल से गुजर रहल हे। ऊ पलास के लाल-लाल फूल के देख के समझइत हे कि जंगल में आग लगल हे। भाग के घर लौट गेल। पलास बन में आग लगे के निस्चयात्मक ग्यान होवे से 'भ्रान्तिमान' अलंकार हे।

(2) तोरा संग फिरत चकोर हे बदन सुधानिधि जान।

(3) पाँव महावर देबेला, नाउन बइठल आए।
फिर-फिर जान के महावरी, एँड़ी मलइत जाए।

विरोधाभास

'भासै जबै विरोध सो तबै विरोधाभास।'

लच्छन : जब दू बस्तु में सचमुच बिरोध न रह के ओकर खाली आभास रहे तब विरोधाभास अलंकार हो हे। 'विरोधाभास सबद विरोध + आभास' से बनल हे, जेकर माने हो हे विरोध के झलक। सचमुच विरोध न।

उदाहरन : (1) **लख पावई तनिको न गति, प्रेमी मन के मीत।**
जेतना डूबई स्याम रंग, होबय उज्जर ओतने चित।।

ई उदाहरन में विरोध के आभास ई कहे से हो हे कि करिया रंग में जेतना चित्त डूबऽ हे ओतना उजला रंग के हो जा हे। उल्टी बात हे। कहना ई हे कि काला रंग के किसुनजी के भक्ति में मन जेतना डूबऽ हे ऊ ओतने साफ हो जा हे। यानी अग्यान के अंधकार दूर होके ओकरा भिर ग्यान के प्रकास फैल जा हे। बात तो ठीक हे। ऊपर से विरोध के आभास हो रहल हे। ई लेल विरोधाभास अलंकार हे।

अभ्यास के प्रस्न

1. अलंकार केकरा कहल जा हे। एकर भेद बतावऽ।
2. नीच लिखल अलंकार के उदाहरन सहित समझावऽ :
   अनुप्रास, उपमा, रूपक, श्लेष, उत्प्रेक्षा, यमक, वक्रोक्ति, संदेह, भ्रान्तिमान, विरोधाभास।

●

पत्र-लेखन (Letter Writing)

पत्र इया चिट्ठी ऊ माध्यम हे जेकरा से अप्पन भाव आउ बिचार दूसरे तक पहुँचावल जा हे। पत्र-लेखन के परम्परा बहुत पुरातन हे। पुराना जमाना में आवे जाए के असुबिधा हल। कागज के बारे में भी जानकारी न हल। तब भी लोग बिसेस प्रकार के पत्ता (जैसे-भोजपत्तर आदि) पर कोई नुकीला चीज से अप्पन भाव आउ बिचार अंकित करके भेजऽ हलन। तब डाकघर न हल, न डाक बाँटेवाला अदमी हल। अक्सर लोग कबूतर, हंस, घोड़ा चाहे कोई बिस्वासी अदमी के जरिए अप्पन सनेस भेजऽ हलन। बाद में बिग्यान के प्रगति होवे पर एक तरफ कागज के बिकास भेल; कलम, पेंसिल आउ सियाही आदि के भी जानकारी भेल आउ दूसर तरफ रेल, जहाज आदि के भी आगमन होल। एकरा से पत्र-लेखन में भी सुबिधा भेल आउ पत्र-भेजे के काम भी आसान हो गेल। बाद में तो पूरा डाक बिभागे हो गेल, जहाँ से नियमित रूप से पत्र भेजे के काम चले लगल। अब तो एतना जादे जांतरिक साधन मौजूद हे कि कुछे छन में अदमी अप्पन सनेस संसार के कोई भी कोना में भेजे में समर्थ हे।

पत्र-लेखन : एक कला

पत्र-लेखन एगो कला हे, एकरे चलते एकरा साहित्य के एगो बिसिस्ट अंग मानल गेल हे। कुछ साहित्यकार पत्र-सैली में अप्पन साहित्य के सिरजन करऽ हथ। कुछ महान समाज-सुधारक, बिचारक, चिन्तक, साहित्यकार के पत्र में एतना बेसकीमती बिचार जमा हो जा हे कि कई लोग बड़ी चाव से उनकर पत्र के संकलन आउ प्रकासन करऽ हथ।

पत्र के प्रकार :

पत्र के कई गो 'प्रकार' हो हे, ओकरा में मुख्य हे :

(क) समाजिक (ख) बेवसायिक (ग) कार्यालयीय।

सब्भे 'प्रकार' के पत्र के अक्सर तीन अंग हो हे :

आरंभ, मध्य आउ अंत।

पत्र के आरंभ में भेजताहर के पता, तारीख, सम्बोधन आदि रहऽ हे। मध्य में भेजताहर के बिचार आउ मन्तब्य रहऽ हे। अन्त में भेजताहर के नाम रहऽ हे। अइसे तो सब्भे प्रकार के पत्र में ई तीनों अंग मिलऽ हे, तइयो हर 'प्रकार' के अप्पन अलग-अलग परारूप रहऽ हे।

पत्र-लेखन में धेयान देवे के बात :

1. 'पत्र' के लेखन में एगो क्रमबद्धता होवे के चाही।
2. पत्र के फिजूल बिस्तार आउ बेअर्थ के बात से बचे के चाही।
3. पत्र में अप्पन बिचार साफ ढंग से रखे के चाही।
4. भासा सरल, सुबोध आउ प्रभावपूर्न होवे के चाही।
5. पत्र-लेखन में एतना सावधानी जरूर रखे के चाही कि पत्र पावेवाला, पत्र-भेजताहर से प्रभावित हो जाए, ओकरा पत्र भेजेवाला के आत्मीयता, सज्जनता, बिनम्रता, सालीनता आउ साफ मानसिकता के परिचय मिले।
6. पत्र-लेखन में सिस्टाचार के रच्छा जरूरी हे।
7. पत्र पावेवाला के नाम आउ पता लिफाफा इया पोस्टकार्ड पर स्पस्ट रूप से अंकित करे के चाही।

पत्र के रूपरेखा :

पहिले कहल जा चुकल हे कि पत्र तीन 'प्रकार' के हो हे-समाजिक, बेवसायिक आउ कार्यालयीय।

समाजिक पत्र में अदमी अप्पन बेक्तिगत आउ समाजिक सम्बन्ध के अधार पर अप्पन बिचार परगट करऽ हे। एकरा में 'निजता' के बोधक हो हे। अप्पन आउ समाजिक संदर्भ लेके अदमी अप्पन आत्मीय लोग, परिजन, मित्र आउ अन्य समाजिक संदर्भ से जुड़ल अदमी से पत्राचार करऽ हे। एकरा में आत्मीय जन के पत्र, निमंत्रन पत्र, बधाई पत्र, परिचय पत्र, सोकपत्र, आवेदन पत्र, लोकाचार से सम्बद्ध पत्र आदि सामिल रहऽ हे।

बेवसायिक पत्र में बेवसाय से सम्बंधित बात रहऽ हे। एकरा में लेन-देन, लहना-तगादा, खरीद-बिक्री आदि के बेवसायिक प्रसंग रहऽ हे। ई जरूरी न हे कि

पत्र पावेवाला आउ पत्र भेजेवाला दुन्नो बेपारी रहऽ हे। अन्य लोग भी जरूरतबस अइसन पत्र लिख सकऽ हथ।

कार्यालयीय पत्र में कार्यालय से संबंधित पत्राचार हो हे। एकरा **अन्तर्गत सरकारी या गैर सरकारी संस्था से जुड़ल कार्य-बेवपार के बेयोरा** आवऽ हे। ई पत्र भिन्न-भिन्न प्रकार के होवऽ हे जइसे:-

1. सरकारी पत्र (Official letter)
2. अधिसूचना (Notification)
3. परिपत्र (Circular letter)
4. ज्ञापन (Memorandum)
5. कार्यालय-आदेस (Office Order)
6. प्रेस-विज्ञप्ति (Press note)
7. अर्द्धसरकारी पत्र (Demi official letter)
8. अनुस्मारक (Reminder letter)

1. समाजिक पत्र- समाजिक पत्र में जथाजोग्य सम्बोधन आउ अभिवादन के बाद कुसल-छेम पूछल जा हे। एकरा बाद पत्र में मन्तव्य लिखल जा हे। अन्त में अभिनिवेदन रहऽ हे। नीचे लिखल तालिका से एकर बिबरन समझल जा सकऽ हे।

(क) गुरुजन ला

सम्बन्ध	सम्बोधन	अभिवादन	अभिनिवेदन
पिता, चाचा	पूज्य, पूज्यवर पिताजी,	सादर चरन स्पर्स	कृपाकांक्षी
मामा, भैया	चाचाजी, भैयाजी,	सादर परनाम	स्नेहाकांच्छी
	मामाजी आदि	सादर नमस्ते	प्रिय पुत्र
		आदि	प्रिय अनुज
गुरु	श्रद्धेय गुरुवर	” ”	प्रिय सिस्य
माता	पूजनीया माताजी	” ”	आदि
पति	प्रानप्रिय, प्रानेस्वर आदि	” ”	तोहर प्रिया
आदि			

(ख) बराबर वाला ला

सम्बन्ध	सम्बोधन	अभिवादन	अभिनिवेदन
मित्र	प्रिय बन्धु, बन्धुवर आदि	सस्नेह नमस्कार सप्रेम नमस्ते	स्नेहाकांच्छी सुभेच्छु
परिचित अदमी	प्रिय बन्धु, महोदय/महासय महानुभाव आदि	सादर नमस्ते	भवदीय

(ग) छोटा ला

सम्बन्ध	सम्बोधन	अभिवादन	अभिनिवेदन
सिस्य	प्रियवर, प्रिय	सस्नेह	सुभाकांच्छी
पुत्र, अनुज	चिरंजीवी	असीरबाद खुस रहऽ आसीस आदि	सुभचिन्तक
पत्नी	प्रानेस्वरी, प्रिया	सस्नेह	तोहरे अप्पन

समाजिक पत्र के कुछ नमूना

पिता के नाम पत्र

राजेन्द्रनगर, पटना
तारीख 15.10.91

पूज्य पिता जी,

सादर परनाम।

अपने के पत्र पा के बहुत आनन्द भेल। हमहूँ कुसल से ही। अपने के असीरबाद से हम्मर पढ़ाई अच्छा से चल रहल हे। हम्मर लगन आउ मेहनत देख के हम्मर आचार्य लोग हमरा से खूब खुस रहऽ हथ। हम समय एकदम बरबाद न करी। पढ़े घड़ी पढ़ऽ ही, खेले घड़ी खेलऽ ही। तड़के उठ के दैनिक करम पूरा करके आसन बेयाम जरूर करऽ ही। एकरा से हम्मर सरीर खूब बुलन्द हे। हम्मर मित्र लोग भी अच्छा हथ। खाली समय में बइठ के हमनी कविता रचऽ ही। एक दिन क्लास में कविता-पाठ भी कैली हल। हम्मर आचार्य खूब प्रसन्न भेलन हल। ई बार उम्मीद हे कि हम अपन क्लास में प्रथम आयम। तब हमरा छात्रावास में जगह मिल जायत। अभी

फुआ के घर में ही। ऊ हम्मर पूरा धेयान रखऽ हथ। हमहूँ अप्पन आचरन आउर काम से उनका खूब खुस रखऽ ही। हमरा ला तनिको चिन्ता न करिहऽ। अभी रुपया के जरूरत न हे, जब अइहऽ तो ले ले अइहऽ।

माय के सादर परनाम। छोटा भाई-बहिन के असीस। चिट्ठी के जबाब जल्दी दीहऽ।

अपने के प्यारा पुत्र

अनुपम

पिता के पत्र पुत्र के नाम

सीवान

तारीख 18.18.91

चिरंजीवी बेटा अनुपम,

खुस रहऽ।

तोहर चिट्ठी पा के हमनी बहुत आनन्दित भेली। तोहर माय के आँख से खुसी के आँसू निकल आयल। माय-बाप के तो एही आकांच्छा रहऽ हे कि हम्मर सन्तान खूब फूले-फले। तूँ अच्छा रस्ता पर हऽ, अच्छा से पढ़इत-लिखइत हऽ, एकरा से बढ़के हमरा ला आउ कउन आनन्द हे ? आज हमरा लगइत हे कि हम्मर सिच्छा तोरा काम आयल। स्वास्थ्य अदमी के सबसे बड़ा पूँजी हे। नियमित जीवन बिता के आउ आसन बेयाम करके सरीर के खूब मजबूत बनइहऽ। पढ़ाई में तो तोरा लगन हइए हे। अच्छा परीच्छाफल के हमनी असरा लगैले ही। हम जल्दीए रुपया लेके पहुँचम।

फुआ के हम्मर असीरबाद कहिहऽ। तोहर माय तोरा असीरबाद कहइत हे। चिट्ठी के जवाब जल्दीए दीहऽ।

तोहर सुभचिन्तक पिता

अनुज प्रसाद

बेटी के पत्र माय के नाम

गया

तारीख 19.4.91

हम्मर पूजनीय माय,

सादर परनाम।

हम सकुसल ही। तोहनी सब के कुसलता के कामना करऽ ही। इधर तोहर चिट्ठी न मिलल, एकरा से बड़ा चिन्ता हो रहल हे। उधर तोहर तबीयत खराब

हलवऽ, अब कैसन हऽ ? माय, तूँ हम्मर परेरना-स्रोत हऽ। तोहर जिन्दगी हम्मर बच्चन ला बहुमूल्य हे। अप्पन सरीर पर ध्यान दीहऽ। हम अप्पन छात्रावास में अच्छा से ही। पढ़ाई अच्छा से चल रहल हे। एक महीना बाद हमनी के ट्रिप दार्जिलिंग जायत। हुआँ जाए के तैयारी जोर-सोर से चल रहल हे। अप्पन जतरा के अनुभव हम दूसर पत्र में लिखम। बाबूजी से कहिहऽ कि ई बार सौ रुपया जादा भेजथ। ट्रिप में खर्चा करे ला हे।

बाबूजी आउ भइया के परनाम कहिहऽ। घर के छोटा भाई-बहिन के असीरबाद। जबाब के असरा रहत।

तोहर प्यारी बेटी

सविता

मित्र के नाम पत्र

राजगीर

तारीख 16.1.91

प्रिय मित्र, सुरेन्द्र,

नमस्ते।

हम सकुसल ही। आसा हे तोहनी सब भी अच्छा होयबऽ। ई चिट्ठी तोरा इयाद दियावे ला लिखइत ही। तूँ पर साल गरमी में कहलऽ हल कि अबकी जाड़ा में राजगीर आयम। जाड़ा आ गेलवऽ हे। सातो कुंड में गरम पानी के झरना चलइत हे। देस-बिदेस से आ आ के लोग झरना के आनन्द लेइत हथ। 'रोपवे' पर चढ़ के लोग पहाड़ पर पहुँचइत हथ आउ भगवान बुद्ध के सुबरन-प्रतिमा के दरसन करइत हथ। ई घड़ी राजगीर में टूरिस्ट लोग मेला लगैले हथ। हिआँ के दृस्य बड़ा मनमोहक हे। तूँ अप्पन साथी लोग के साथ दू दिन ला भी जरूर आवऽ। हम्मर बिद्यालय के साथी लोग भी तोहर असरा जोहइत हथ। हमनी सब मिल के कुण्ड स्नान के आनन्द लेम। ऊँचा-ऊँचा पहाड़ पर चढ़ के पुराना इतिहास के दोहरायम।

अप्पन परिवार में सबके हम्मर नमस्ते कहिहऽ। पत्र के जवाब दे के सूचित करऽ कि कब आवइत हऽ !

तोहर प्रिय मित्र

अरुण

बधाई-पत्र

पटना सिटी

तारीख 20.2.91

प्रिय अमित,

कल के अखबार में आई० ए० एस० के परीच्छाफल में तोहर नाम सर्बप्रथम देख के हिरदय आनन्द से पुलकित हो गेल। ई सफलता ला हम्मर हार्दिक बधाई स्वीकार करऽ।

हमरा पूरा बिस्वास हे कि तूँ ऊ पद पर सेवा करइत परिवार आउ समाज के नाम उजागर करबऽ।

भगवान तोरा सदा उन्नति के रस्ता दिखावथ।

तोहर मित्र

मोहन

परिचय-पत्र

बेगूसराय

तारीख 19.9.91

प्रिय बन्धु बर्मा जी,

सप्रेम नमस्कार।

हम हिआँ कुसल रहइत अपने के कुसलता के कामना करऽ ही। पत्र-वाहक श्री अनिल कुमार हम्मर मित्र के छोटा भाई हथ। ई हाले में इतिहास बिसय में पटना विश्वविद्यालय से एम० ए० परीच्छा पास कैलन हे। ई दिल्ली के कोंचिग संस्थान में पढ़ के प्रतियोगिता परीच्छा में बइठे ला चाहऽ हथ। इनका दिल्ली में ठहरे के बेवस्था न हे। तोहर उपकार होयत कि इनका ला अवास के हुआँ कोई बेवस्था कर देबऽ।

ई हमरा ऊपर तोहर बेक्तिगत उपकार होयत।

सुभाकांच्छी,

वेणी माधव

निमंत्रण-पत्र

नालन्दा

दिनांक 2.5.91

प्रियवर राकेश जी,

अपने के ई जान के खुसी होयत कि हम्मर बड़ी बेटी मोहनी के सुभ बिआह दिनांक 15.5.91 ई. के राजगीर निवासी श्री सोहन प्रसाद जी के सुपुत्र चिरंजीवी कामता प्रसाद के साथ सम्पन्न होवे जा रहल हे। ई सुभ अवसर पर अपने के सपरिवार निमंत्रित करइत ही। आसा हे, पधार के हमरा अनुगृहीत करबऽ।

कार्यक्रम

1. मंडप : दिनांक 13.5.91 संध्या 7 बजे।
2. बरात आगमन : दिनांक 15.5.91 संध्या 6 बजे।
3. सुभ बिबाह : दिनांक 15.5.91 रात्रि 10 बजे।

बिनीत,

राधेश्याम

सोक-पत्र

मुजफ्फरपुर

दिनांक 20.8.91

प्रिय मदन जी,

अपने के पूज्य पिताजी के आकस्मिक निधन के समाचार से हमरा असीम व्यथा भेल। उनकर जैसन पुरुष श्रेष्ठ के खो के हमनी आज अकिंचन बन गेली हे। जब हमनी के एतना दुःख हे, तब तोहनी के दुःख के का सीमा ! बाकि जीवन आउर मृत्यु पर केकर अख्तियार हे ? भगवान् दिवंगत आत्मा के शान्ति देथ आउर दुखित परिवार के ई दुःख सहे के शक्ति ! हमरा जोग्य कोई सेवा होए, तो लिखिहऽ। हम सदा अपने के साथ ही।

अपने के

राजाराम

आवेदन-पत्र

(प्राचार्य के नाम : निःसुल्क सिच्छा ला)

सेवा में,

श्रीमान् प्राचार्य,

बी० एन० कौलेजियट बिद्यालय, पटना

महोदय,

सेवा में निवेदन हे कि हम ई बिद्यालय के एगो निर्धन छात्र ही। हम्मर पिता एगो प्राइबेट स्कूल में सिच्छक हथ। हुआँ से उनका एतना कम आय हे कि परिवार के खर्च पूरा न पड़ऽ हे। हमनी बच्चन के पढ़ाई के खर्च बहन करे में ऊ असमर्थ हथ। हमरा पढ़े के बहुत लालसा हे। हम मेहनत करके अप्पन कच्छा में अच्छा स्थान पावऽ ही।

अपने से अनुरोध हे कि हमरा निःसुल्क सिच्छा प्राप्त करे के अवसर प्रदान करके अनुगृहीत करीं। एकरा ला हम सदा अभारी रहब।

अपने के आग्याकारी छात्र

मोहन

बेवसायिक पत्र

प्रकासक के नाम पत्र

प्रेसक

रामचन्द्र प्रसाद

पुस्तक भंडार, स्टेशन रोड, गया।

पत्रांक-314/5, तारीख : 8 अप्रील, 1991

सेवा में

संचालक,

किरण प्रकाशन, पटना-16

महोदय,

अपने के प्रकासन के सूची मिलल। किरपा करके अप्पन प्रकासन के नीचे लिखल पुस्तक के 10-10 प्रति हमरा पता से भेज देउ :

1. मगही व्याकरन-कोस
2. मगही लोक-साहित्य
3. मगही भासा आउ साहित्य
4. मगही निबन्ध सौरभ

भवदीय

रामचन्द्र प्रसाद

बकाया रासि के भुगतान ला पत्र

प्रेसक,

मोहन कुमार

हंस प्रकाशन, इलाहाबाद (यू० पी०)

पत्रांक-316/6 तारीख 14.5.91

सेवा में,

देव कुमार,

पुस्तक भंडार,

राँची।

महोदय,

पत्रांक 175/4 दिनांक 6.2.91 के अनुसार हम अपने के तीन हजार पाँच सौ रुपया के पुस्तक भेजली हल बाकि अभी तक ऊ रासि के भुगतान अपने न कैली हे।

निवेदन हे कि ऊपर लिखल बकाया रासि के भुगतान जल्दी करे के किरपा करू।

भवदीय

मोहन कुमार

कार्यालयीय पत्र
कार्यालय-आवेस

पत्रांक... ... ...

बिहार सरकार

स्वास्थ्य विभाग

तारीख 14 जून, 1991

सरकार आउ स्वास्थ्य बिभाग के करमचारी संघ के समझौता के अधार पर ई निरनय लेल गेल कि संघ के दस माँग में से सात माँग मान लेवल गेल। एकरा अनुसार 1 अप्रील, 1991 से कारवाई कैल जायत।

ह०

स्वास्थ्य सचिव

बिहार सरकार

पत्र प्रेसित

1. सब्भे स्वास्थ्य पदाधिकारी
2. महासचिव, स्वास्थ्य संघ

छात्रबृत्ति ला आवेदन-पत्र

दिनांक 8 मार्च, 1991

सेवा में,

श्रीमान् प्रधानाचार्य,
गुरुदयाल सिंह महाबिद्यालय, मुँगेर।

महोदय,

सबिनय निवेदन हे कि हम अपने के महाबिद्यालय के तीसरा बरिस बिग्यान के छात्र ही। हम्मर आर्थिक स्थिति बहुत खराब हे। घर में एगो बिधवा माय के अलावा आउ कोई कमाय वाला न हे। अइसन दसा में हम्मर पढ़ाई चालू रखना कठिन हो रहल हे। हम्मर परीच्छाफल ई बात के प्रमान हे कि हम बहुत लगन आउ मेहनत से पढ़ाई करइत ही।

ई लेल हम्मर स्थिति पर बिचार करइत हमरा तुरंत छात्रवृत्ति देवल जाए। एकरा ला हम सदा अभारी रहम।

अपने के अग्याकारी सिस्य

अतुल कुमार

क्रमांक-15

तीसरा बरिस बिग्यान

आकस्मिक अवकास ला आवेदन-पत्र

तारीख 8 मार्च, 1991

सेवा में,

श्रीमान् प्रधानाचार्य,
डी० ए० भी० महाबिद्यालय
रातू, राँची

महोदय,

बिनम्र निवेदन हे कि अचानक हम बुखार से पीड़ित हो गेली हे। ई कारन से दू दिन हम महाबिद्यालय आवे में असमर्थ रहम। हमरा दिनांक 1 आउ 2 अप्रिल, 91 के आकस्मिक अवकास प्रदान करके अनुगृहीत करू।

अपने के बिस्वासपात्र
रामनुज प्रसाद
हिन्दी बिभाग।

कार्यालय-आदेस

क्रमांक....

तारीख : 9.4.91

प्रेसक,

प्राचार्य,
गया कॉलेज, गया।

सेवा में,

बिभागाध्यच्छ,
गया कॉलेज, गया।

बिसय : सिच्छक लोगिन द्वारा समय पर क्लास न लेवे के बारे में।

महोदय,

ई खेद के बात हे कि सिच्छक लोग समय पर क्लास में न पहुँचऽ हथ। एकरा में बिद्यार्थी लोग क्लास में सोर करके, बगलवाला क्लास के पढ़ाई में बाधा पहुँचावऽ हथ., अनुसासनहीनता के फैलाव होवऽ हे से अलग !

अपने से अनुरोध हे कि जंउन सिच्छक अइसन उत्तरदायित्वबिहीन कार्य करऽ हथ आउ बिद्यार्थी लोगिन में अनुसासनहीनता फैलावऽ हथ, उनकर नाम तुरंत अंकित कर लेवल जाए आउ हमरा सूचित कैल जाए, जेकरा से उनका पर कारवाई कैल जा सके।

हस्ताच्छर

प्राचार्य, गया कॉलेज

प्रेसित :-

1. सब्मे बिभागाध्यच्छ।
2. सब्मे सिच्छक।

अभ्यास के प्रस्न

1. अप्पन पिताजी के पास एगो पत्र लिखऽ जेकरा में अप्पन परीच्छा के तैयारी के बरनन करऽ।
2. अप्पन मित्र के पास एगो पत्र लिखऽ जेकरा में एगो ऐतिहासिक स्थल के बरनन करऽ।
3. एगो बेवसायिक पत्र प्रकासक के नाम से लिखऽ जेकरा में तू अप्पन पढ़ाई ला कुछ किताब भेजे ला मांग करऽ।

●

निबन्ध

"निबन्ध ऊ गद्य-रचना के संग्या हे, जेकरा में कोई बिसय इया प्रसंग से संबंधित बिचार आउ भाव के सुसम्बद्ध रूप से रोचक सैली में प्रस्तुत कैल जा हे।"

निबन्ध में नीचे लिखल बिसेसता पावल जा हे :

लेखक के बेक्तित्व के छाप :

निबन्ध के हर पंक्ति में लेखक के बेक्तित्व के छाप रहऽ हे। साहित्य के दूसरा बिद्‌या में लेखक के निजता बहुत दूर तक ओझल रहऽ हे। बाकि निबन्ध में ऊ अप्पन हिरदय खोल के रख दे हे। ओकर भावना, बिचार, सैली, बिनोदसीलता आदि सब कुछ से पाठक के सीधा साछात्कार हो हे।

सुसम्बद्ध बिचार :

निबन्ध में लेखक अप्पन बिचार क्रमबद्ध रूप में रखऽ हे। ऊ एगो मूल बिचार लेके, ओकरे से संबंधित बिचार के अलग-अलग अनुच्छेद में रखऽ हे। बीच में इधर-उधर के प्रसंग आवे पर ऊ मूल-सूत्र के न छोड़े। निबंध में ओकर बिचार एगो माला नियन क्रमबद्ध रूप में गुँथल रहऽ हे।

बिचार-संगठन :

निबंध में कोई बिसय लेके निबंधकार पूर्न बिचार प्रस्तुत करऽ हे। बाकि बिचार रखइत, ओकरा में एगो शृंखला संगठित होवे के चाही। एकर अभाव में निबन्ध में कसावट न आयत। निबन्ध में एक बिचार से दूसर के जुड़ल देखाई पड़ना चाही।

सैली के रोचकता :

निबन्ध के सैली रुचगर आउ सजीव होवे के चाही। निबन्धकार के बिसय अनेक हो हे-समाजिक, राजनैतिक, आध्यात्मिक, दारसनिक आदि। बाकि गूढ़-से-गूढ़ बिचार सैली के रोचकता से सजीव हो जा हे। पाठक धेयान मगन हो के अइसन निबन्ध पढ़ऽ हथ। निबन्ध में कथा तत्त्व के अभाव के कारन सुस्कता आवे के संभावना रहऽ हे। एकरा से निबन्धकार के दायित्व आउ बढ़ जा हे। ऊ अप्पन बिसय के ग्राह्य बनावे ला हास्य, ब्यंग्य, लाच्छनिकता आउ अलंकार आदि के भी परयोग करे में न चूके।

ई निबन्धकार के प्रतिभा पर हे कि अप्पन बात पाठक तक केतना सुरुचिपूर्न सैली में पहुँचावऽ हे।

निबन्ध आउ लेख में अन्तर

देखे में तो निबन्ध आउ लेख एक्के रंग लगऽ हे, बाकि दुन्नो में तात्विक अन्तर जरूर हो हे। लेख कोई बिसय पर बर्ननात्मक आउ बिचारात्मक आलेख मात्र हो हे, ओकरा में लेखक के निजीपन के अभाव रहऽ हे। लेख बिसयगत होवऽ हे, ओकर सैली के सौंदर्य ला लेखक जागरूक न रहे। ऊ बिद्वतापूर्न सैली में अप्पन बिवेचन प्रस्तुत करऽ हे। लेख के अंगरेजी में 'Article' कहल जा हे। ई बिसेस रूप से समाचार पत्र इया अन्य पत्र में प्रकासित होवऽ हे। निबन्ध में निबन्धकार के आत्माभिब्यक्ति के पच्छ प्रबल रहऽ हे। ऊ अप्पन बिसय के बहुत रुचगर सैली में पाठक के सामने रखऽ हे। सैली के सौंदर्य, निजता, स्वच्छन्दता, सजीवता आउ उन्मुक्तता पर अधिक केन्द्रित रहऽ हे। निबन्ध में बिचार के प्रतिपादन में भी अनुभूति के छाप सबल रहऽ हे।

निबन्ध के बर्गीकरन :

निबन्ध के बिसयबस्तु अति ब्यापक हो हे। अप्पन बिसय के प्रस्तुतीकरन में निबन्धकार के अलग-अलग दृस्टि अपनावे पड़ऽ हे। ई तरह निबन्ध में बहुत बिबिधता देखाई पड़ऽ हे। निबन्ध के तत्त्व के अधार पर हम ओकर नीचे लिखल में बर्गीकरन कर सकऽ ही :

1. बर्ननात्मक, 2. बिवर्नात्मक, 3. बिचारात्मक, 4. भावात्मक, 5. परिचयात्मक, 6. सूचनात्मक, 7. बेयक्तिक इया ललित।

1. बर्ननात्मक (Discriptive) **निबन्ध**-बर्ननात्मक निबन्ध में कोई बिसय के सिलसिलावार दृस्यात्मक बरनन हो हे। एकरा में कल्पना के भूमिका भी रहऽ हे। एकर लेखन में ब्यास-सैली अपनावल जा हे। बर्ननात्मक निबन्ध के अक्सर नीचे लिखल बिसय होवऽ हे :

बरसारितु, सरदरितु, बसंतरितु, होली, मेला, दुरगापूजा, दीपावली, गनतंत्रदिवस, हिमालय, कोई जातरा, आदि।

2. बिवर्नात्मक (Narrative) निबन्ध-ई प्रकार के निबन्ध में बिसय से जुड़ल तथ्य पर प्रकास डालइत, ओकरा पर भिन्न-भिन्न दृस्टिकोन से उद्देस्य के अनुसार बिचार कैल जा हे। एकरा में लेखक देखल-सुनल घटना इया बृतान्त के बिबरन देवऽ हे। बिवर्नात्मक निबन्ध में लेखक स्वानुभूति के अनुसार बिबरन प्रस्तुत करऽ हे। बिबिध

जातरा, समस्या, सिकार, जीवनी, साहसिक कार्य, इतिहास कथा आदि एकर **बिसय** बस्तु हो हे। **जइसे :**

तीरथजात्रा, गाँव के समस्या, पुस्तकालय, बाढ़, सूखा के संकट, रेडियो आदि।

3. बिचारात्मक (Reflective) निबन्ध-एकरा में बुद्धितत्त्व के प्रधानता रहऽ हे। लेखक के सुचिन्तित बिचार के साथ अमूर्त आउ सूच्छम भावना के मिस्रित रूप एकरा में देखाई पड़ऽ हे। ई प्रकार के निबन्ध में तर्क के प्रधानता रहऽ हे। बिचारात्मक निबन्ध के सबसे गंभीर रूप प्रस्तुत करऽ हे। एकरा में 'बिसय' पर पूरा तरह से बिचार करइत, ओकर सब्भे पच्छ पर चिन्तन करे पड़ऽ हे, साथे-साथ जुक्तिसंगत निस्कर्स पर आवे पड़ऽ हे। अक्सर समाजिक राजनैतिक, धार्मिक, दार्सनिक आदि बिसय एही कोटि में आवऽ हे। बिचारात्मक निबन्ध के कुछ बिसय नीचे लिखल जाइत हे :

आत्मनिर्भरता, स्वदेस प्रेम, जीवन के लच्छ्य, देसभक्ति, अप्पन महत्त्वाकांच्छा, आत्मचिन्तन, समाजकल्यान, अनुसासन, बिद्‌यार्थी के करतब, सर्बोदय, मित्रता, समाजसेवा, जातरा के आनन्द, बिस्वसान्ति, समय के मूल्य, सहसिच्छा, साहित्य के महत्त्व आदि।

4. भावात्मक (Emotional) निबन्ध-एकरा में भावतत्त्व के प्रधानता रहऽ हे। एकर सैली भी भावप्रधान होवऽ हे। निबन्धकार के एकरा में उद्देस्य रहऽ हे-पाठक में रस-संचार आउ भावोद्रेक करना। ई प्रकार के निबन्ध राग प्रधान हो हे। एकरा में कवित्वपूर्न उद्‌गार आउ लाच्छनिक सैली के प्रधान्य रहऽ हे। एकरा में नीचे लिखल बिसय पर निबन्ध लिखल जा हे :

कायरता में पराजय, प्रेमी के निस्ठा, हिरदय के समरपन, आत्मा के अवाज, मन के हारे हार हे, मनोरंजन के आनन्द आदि।

5. परिचयात्मक (Illustrative) निबन्ध-एकरा में घटना बिसेस इया प्रसंग बिसेस, इया बेयक्ति बिसेस आदि के परिचयात्मक स्वरूप प्रस्तुत कैल जा हे। ई परिचय परिपूर्न होवऽ हे। लेखक के अप्पन मूल्यांकन के एकरा में स्थान न मिलऽ हे। एकरा अन्तर्गत नीचे लिखल बिसय आवऽ हे :

अप्पन प्रिय साहित्यकार, हम्मर पड़ोसी, भारतीय मजदूर, रिक्सावाला, पाकिस्तान, प्रेमचन्द, महादेवी आदि।

6. सूचनात्मक (Informative) निबन्ध-एकरा में प्रमानिक सूचना देइत संबंधित बिसय पर क्रमबद्ध रूप में प्रकास डाले पड़ऽ हे। एकरा में बैग्यानिक बिसय इया बिबिध योजना आदि से संबंधित सूचना देवल जा हे। सूचना में गलती छम्य न हो हे। सूचनात्मक निबन्ध के कुछ बिसय नीचे लिखल हे :

बिग्यान: बरदान इया अभिसाप, चन्दरमा पर बिजय, पंचवर्सीय योजना, पंचसील, अन्तरिच्छ-जातरा आदि।

7. बेयक्तिक या ललित (Personal) निबन्ध-ई प्रकार के निबन्ध में लेखक अप्पन बेयक्तिक उद्‌गार के ललित सैली में उपस्थित करऽ हे। अइसन निबन्ध के बिसय हल्का-फुल्का होवऽ हे। निबंधकार एकरा में मन भर के हास्य-व्यंग्य के पुट दे सकऽ हे। अप्पन सोभाव-संस्कार के पूरा छाप ई प्रकार के निबन्ध में लेखक छोड़ऽ हे। बिसय के बिस्लेसन में एकरा में गंभीर चिन्तन के अपेच्छा न रहऽ हे। फिर भी बहुत-सा बेयक्तिक निबन्ध के बिबेचन-क्रम में गूढ़ार्थ प्रस्तुत हो जा हे। लेखक के निजता के एकरा में पूरा झलक मिलऽ हे। बेयक्तिक निबन्ध के दूसर संग्या ललित निबन्ध भी हे। एकरा में नीचे लिखल बिसय आवऽ हे :

बैलगाड़ी, रेलगाड़ी, जाड़ा के सबेरा, एक प्याला चाय, साइकिल, घर, खिलौना, घरौंदा, खड़ाऊँ, दूल्हा, दाढ़ी आदि।

निबन्ध-लेखन में बिचार आउ सैली

अइसे तो उपर्युक्त बर्गीकरन के अधार पर निबन्ध के बिसय अलग-अलग देखाई पड़ऽ हे, बाकि एगो बात महत्त्वपूर्न हे कि अक्सर हर प्रकार के निबन्ध में लेखक के निजता आउ बिचार के प्रस्तुतीकरन के कमोवेस गुंजाइस रहऽ हे। कुछ निबन्ध में बाह्य स्रोत से प्राप्त सूचना के प्रधानता रहऽ हे, कुछ में लेखक के निजी बिचार के प्रधानता रहऽ हे, बाकि स्रेष्ठ निबन्ध में दुन्नों के समन्वय के महत्त्व देल जा हे।

दूसर बात ई हे कि निबन्ध-लेखन में क्रमबद्धता के पूरा धेयान रखे के चाही। एक अवतरन के दूसर अवतरन से सिरींखलाबद्ध रहे के चाहीं। एकरा धेयान में रखे से प्रतिपाद्य बिसय में बिखराव आ जा हे, जेकरा निबन्ध ला अच्छा न मानल जा हे।

तीसर मुख्य बात ई हे कि निबन्ध-लेखन के सैली रुचगर होवे के चाही। ओकर हर अवतरन के एक-दूसरा से जुड़ल तो रहे ही के चाही, ओकरा कौतूहलबर्धक भी

होवे के चाही। पाठक के लगे कि आगे भी पढ़ी, का कहल गेल हे ? ऊ आगे पढ़े ला उत्सुक रहे, अइसन लेखन-सैली होवे के चाही। भासा प्रवाह, सरल, सुबोध आउ हिरदयग्राही होवे के चाहीं। बिसय के बिस्लेसन में रोचक उदाहरन, कथा संकेत आदि के भी समाबेस महत्त्वपूर्न होवऽ हे। जथास्थान हास्य-ब्यंग्य के पुट के भी अप्पन स्थान हे। आरंभ में बिसय-प्रवेस से लेके मध्य के बिकास तक बढ़इत-बढ़इत अंत के निस्कर्स ला पाठक उत्सुक हो उठे, अइसन लेखन-सैली में निबन्धकार के सफलता मानल जा हे।

हर साहित्य बिधा नियन निबन्ध में भी निबन्धकार आउ पाठक के मन के सूत्र एक-दूसरा से जुड़े के चाहीं। एकरे में निबन्ध-लेखन के सफलता हे।

अब हरेक वर्ग के निबन्ध के प्रतिनिधि रूप में एक-एक गो नमूना देल जाइत हे :

बर्ननात्मक निबन्ध

होली

होली रंग आउ उमंग के अनुपम परब हे। ई समय के बसंतरितु के जौवन मानल जा हे। ई घड़ी परकिरती भी अतिसुन्दर रूप धारन कर ले हे। न सरदी, न गरमी। हर पेंड़ के डाली पर नया-नया कोमल-कोमल कोंपल झाँके लगऽ हे। खेत में पियर-पियर सरसो लहलहाये लगऽ हे। आम के पेड़ मंजर से लदबद देखाई पड़े लगऽ हे। चारो तरफ बसंती बेयार बंहे लगऽ हे। ई परब हर बरिस फागुन मास में मनावल जा हे। फागुन मास फागुनी मस्ती से भरल रहऽ हे। जन-जन के मन नया जोस आउ उत्साह से भर जा हे। परकिरती के रंगीनी सबके मन-परान में उतर आवऽ हे, लगऽ हे कि एही रंगीनी रंग-गुलाल के रूप में होली के परब के रूप में परगट होवऽ हे।

होली अइसन मनभावन परब हे कि ओकर प्रतीच्छा लोग बड़ा उत्साह से करऽ हथ। गली-गली, गाँव-गाँव, नगर-नगर में कै दिन पहिले से ही होली के तइयारी आरंभ हो जा हे। ढोलक, झाँझ, करताल आउ मंजीरा के धुन के संग गली-गली में घुमइत टोली के मस्ती-भरल गीत चारो तरफ मस्ती ला दे हे। रंग आउ सुर में सब्भे डूब जा हथ, सराबोर हो जा हथ।

होली के तेयोहार दू दिन मनावल जा हे। पहिला दिन लड़िकन सब लकड़ी इकट्ठा करके 'अगजा' सजावऽ हथ। फागुन के पूरनिमा के सत में मंतर-पाठ के साथ अगजा जलावऽ हथ। ओकर बाद होली के हुड़दंग आरंभ हो जा हे, जे दूसर दिन दूपहर तक चलऽ हे। लोग गीला होली खेले में रंग आउ पिचकारी के साथ, कभी-कभी कीचड़-कचड़ा भी उड़ावे लगऽ हथ। होली खेलेवाला टोली अप्पन-अप्पन पड़ोस के घर में जा के रंग-पिचकारी के खेल खेलऽ हथ आउ ई अवसर पर अप्पन-अप्पन घर में बनल पूआ, पूड़ी, कचौड़ी, दहीबड़ा आउ सब्जी उत्साह से खा हथ।

होली के ई गीला खेल के 'धुरखेली' भी कहल जा हे। एकरा में पकड़-पकड़ के लोग एक-दूसरा से रंग-पिचकारी खेलऽ हथ। चारो तरफ हँसी के फब्बारा छूटे लगऽ हे। फाग के ई खेल में सब बर्जना टूट जा हे। छोटा-बड़ा, औरत-मरद सब एकरा में सामिल होवऽ हथ। बीच-बीच में सुनाई पड़ऽ हे- "बुरा न मानऽ होली हे।" ई घड़ी अमीर-गरीब, मालिक-मजदूर, जुवक-बिरिध, पुरुस-नारी सब्भे एकाकार हो जा हथ। सब्भे आपुस के भेद-भाव भूल के समन्वित मानवीय उमंग के साथ आउ उल्लास के साथ ई परब मनावऽ हथ। घर-घर में मिलन-मंदिर के दिरिस उपस्थित हो जा हे। तरह-तरह के पकवान, गड़ी-छुहारा आदि पंचमेवा से सबके सोआगत कैल जा हे। होली के दिन धरती जौवन के फुहार से सराबोर होल रहऽ हे। सारा सिरिस्टि गतिसील हो उठऽ हे। रात बीते पर रंग के ई धूम थम जा हे।

होली के सांस्कृतिक, ऐतिहासिक आउ धार्मिक पच्छ भी हे। कहल जा हे कि ई परब के संबंध भक्त पहलाद से हे। ऊ हिरन्यकस्यप के पुत्र हल जे भगवान के महान भक्त हल। पिता भगवान से दुस्मनी रखऽ हल। एक दिन पिता भक्त पहलाद के आदेस देलक- "अगर तूँ हम्मर पुत्र हे तो हमरा भगवान मान, न तो मिरतु के आलिंगन कर।" भक्त पहलाद भक्ति छोड़े पर राजी न होल। तब ओकरा मिरतुदंड मिलल।

पहलाद के बुआ के नाम 'होलिका' हल। ओकरा बरदान हल कि अग्गिन ओकरा जला न सकत। एकर लाभ उठा के ऊ भक्त पहलाद के गोदी में लेके अग्गिन में प्रवेस कर गेल। बाकि भगवान के किरिपा अइसन भेल कि होलिका जर गेल आउ पहलाद बच गेल। एही कथा के अधार पर 'होलिका-दहन' के रिवाज चलल आयल हे। साइत ई परब के नाम 'होली' भी एकरे अनुसार रखल गेल हे। समान्य जन एही पौरानिक कहानी के अधार पर होलिका दहन करऽ हथ आउ भक्त पहलाद के बिजय मनावे ला रंग खेलऽ हथ।

ई परब के संबंध किरसी से भी हे। लोग कहऽ हथ कि ई परब ऊ सुभ दिन के इयाद में मनावल जा हे, जब मानव पहिला बार अन्न उगा के ओकर बाली के आग में भून के, ओकरा सोंधा सवाद चखलक होत। होली के अर्थ हे-होरा (होली)-कच्चा अन्न। किसान अप्पन तइयारी रब्बी के फसल के होली के अवसर पर, पहले होली-जग्य के समर्पित करके, तब पकवान तइयारी करऽ हथ।

एगो कहानी ई भी हे कि एही दिन किसुन भगवान् पूतना राच्छसी के मारलन हल। दूसर कहानी हे कि ढुंढला नाम के एगो राच्छसी के पारबती जी बर देलन हल कि "तूँ सब बालक के खा सकऽ हे बाकि जउन बालक उधम करइत, नाचइत-गावइत मिलत, ओकरा तूँ न खा सकबे।" कहल जा हे कि एही कारन होली के दिन बालक हाथ-मुँह रंग के हुड़दंग करऽ हथ। ई तेयोहार के संबंध कृस्न-गोपी के कथा से भी जुड़ल हे। बिरिज के होली बहुत परसिध हे। एकरा देखे ला बहुत दूर-दूर से लोग आवऽ हथ।

ई प्रकार होली केवल एगो परब न हे, बलुक अनेक घटना आउ ओकर साथ जुड़ल बिस्वास के पुंज हे। एतने नऽ, होली महामिलन, एकता आउ स्मिता के परब हे। ई अवसर पर लोग पुराना मतभेद भुला के गले-गले मिलऽ हथ। कुछ लोग गलत ढंग से कीचड़ उछाल के आउ नसा करके एकर रूप बिकरित करऽ हथ। बाकि होली में जइसन सद्भावना के बिस्तार हो हे, ओकरा सामने बुराई नष्ट हो जा हे। सबसे बड़ा बात हे-आन्तरिक खुसी। साल भर के दु:ख-दरद , मनोमालिन्य आउ उदासी होली के मूर्ख-सम्मेलन में हँसी के फब्बारा में धुला जा हे। होली हँसी-खुसी के परब हे, समता, सद्भावना आउ परेम के तेयोहार हे। ई बसन्त के सुभागमन के सन्देस लेके आवऽ हे। ई आनन्द-राग छेड़े ला अदमी के बिबस कर दे हे।

बिबरनात्मक निबन्ध

पुस्तकालय

पुस्तकालय सबद दू सबद के जोग से बनल हे-पुस्तक+आलय, अर्थात् "पुस्तक के घर"। पुस्तकालय में क्रमबद्ध रूप से बिबिध बिसय के पुस्तक रखल जा हे। जुग-जुग के अनवरत साधना द्वारा मानव जउन ग्यान अरजित कैलक हे, ऊ पुस्तकालय के संकलित पुस्तक में भरल पड़ल मिलऽ हे। पुस्तकालय निजी भी हो हे

आउ सार्बजनिक भी। निजी पुस्तकालय में बेक्ति बिसेस के अप्पन पुस्तक-संगरह रहऽ हे, सार्बजनिक पुस्तकालय जन-साधारन ला होवऽ हे। निजी पुस्तकालय में अप्पन रुचि के पुस्तक-संगरह कैल जा हे, बाकि सार्बजनिक पुस्तकालय में सर्बसाधारन के रुचि के अनुकूल इतिहास, भूगोल, धर्म, अध्यात्म, दरसन, सिच्छा, बिग्यान, साहित्य आदि अक्सर सब्भे बिसय पर बरगीकिरीत रूप में पुस्तक रखल जा हे। सार्बजनिक पुस्तकालय अनेक प्रकार के होवऽ हे-सिच्छन-संस्थान से सम्बद्ध, लोकोपकारी ट्रस्ट्र, नगरपालिका, पंचायत, राज्य सरकार के बिबिध संस्थान से सम्बद्ध। आजकल चलता-फिरता पुस्तकालय बिबिध बाहन में घूमऽ हे। एकरा से घर बइठले पुस्तक मिल जा हे।

जन-साधारन ला पुस्तक ग्यानबर्द्धन आउ मनोरंजन के अनुपम साधन हे। कुछ पुस्तक बहुमूल्य होवऽ हे, बाकि ओकर उपयोग सर्बकालिक होवऽ हे, जइसे-बिस्वकोस, सबदकोस आदि। कोई भी समाज में हर अदमी के एतना सामर्थ्य न होवऽ हे कि पुस्तक खरीद के पढ़े। लेखक आउ अनुसंधानकर्त्ता के बिसय से सम्बद्ध पुस्तक के जेतना जरूरत होवऽ हे, ऊ सबके भी खरीदल न जा सकऽ हे। ई सब लोग ला पुस्तकालय बहुत उपयोगी हो हे।

महत्त्वाकांच्छी बिद्यार्थी लोग के बहुमूल्य सामग्री पुस्तकालय में ही मिलऽ हे। परीच्छा के बाद अवकास के समय बिद्यार्थी लोग मनचाहा मनोरंजक पुस्तक-जइसे कहानी, उपन्यास, नाटक आदि पुस्तकालय से लेके पढ़ऽ हथ। कहल जा हे कि बौद्धिक मनोरंजन के उत्तम साथी पुस्तकालय ही हे। पुस्तकालय अतिरिक्त समय के सदुपयोग हे, मन के मीत हे आउ जीवन के प्रेरना-स्रोत हे। अक्सर पुस्तकालय के साथ बाचनालय भी जुड़ल रहऽ हे, जहाँ बइठ के तरह-तरह के पत्र-पतरिका पढ़ल जा सकऽ हे। ओतना तरह के पत्र-पतरिका कोई खरीद भी तो न सकऽ हे। बाकि पुस्तकालय ऊ सब कुछ उपलब्ध करा सकऽ हे, जउन ब्यक्ति के सामर्थ्य के बाहर हे। हर उम्र आउ जोग्यता के लोग अप्पन उपयोग के सामग्री पुस्तकालय में पा सकऽ हथ।

न केवल आज, बलुक प्राचीनकाल से ही पुस्तकालय के महत्ता लोग जानइत हथ। भारत के प्रसिद्ध पुस्तकालय नालन्दा आउ तच्छसिला में हल, ओकर आज भी नाम चलइत हे। संसार के बड़ा-बड़ा देस-जइसे अमेरिका, ब्रिटेन आदि के पुस्तकालय

में लाखों, करोड़ों, अरबों ग्रन्थ संग्रहीत मिलऽ हे। ग्यान-पिपासु नर-नारी ओकरा से लाभ उठावऽ हथ। जन-साधारन मनोरंजन के साधन प्राप्त करऽ हथ।

कोई देस के सांस्कृतिक बैभव के पहचान हे-ओकर सुसमृद्ध पुस्तकालय। पुस्तकालय चाहे बेयक्तिक होए इया सार्बजनिक-ई बेक्तिगत उपयोग हम्मर नैतिक दायित्व हे। मानव-संस्कीरती के मान आउ रच्छा ला पुस्तकालय सदा महत्त्वपूर्न रहत।

बिचारात्मक निबंध

बिद्यार्थी आउ अनुसासन

'अनुसासन' के साब्दिक अर्थ होवऽ हे-'सासन के पीछे चलना।' गुरुजन आउ अप्पन पथ-प्रदर्सक के नियंतरन में रह के नियमबद्ध जीवन-यापन करना आउ उनकर आग्या के पालन करना ही अनुसासन कहला हे। अनुसासन बिद्यार्थी के जीवन-निरमान में अधारसिला हे। जइसे कोई बिसाल भवन ठोस नींव पर टिकल रहऽ हे, छोटा पौधा अनुकूल सिंचन आउ संरछन पा के बिसाल बिरिछ बन जा हे, ओइसहीं मानव के सुख-सान्ति के संसार बिद्यार्थी जीवन में सीखल अनुसासन पर आधारित रहऽ हे। बाल्यकाल में बच्चा जब बिद्यालय में परवेस करऽ हे, तो ऊ समय ऊ नया बिरिछ के कोमल टहनी नियर मुलायम होवऽ हे, ओकरा जइसन-दिसा देल जायत, ओइसने ऊ बनत। बिसाल बिरिछ के जुआयल साखा टूट भले जायत, मुड़ न सकऽ हे, ओइसहीं छात्र-जीवन के अबोध अवस्था में जउन बालक अनुसासन न सिखलक, ओकर भावी जीवन बेवस्थित हो ही न सकऽ हे।

मानव जीवन के प्रारंभिक अवस्था में सच्चरित्रता आउ सदाचार के सीख बहुत जरूरी होवऽ हे। एकर सिलान्यास बिद्यार्थी जीवने में होवऽ हे। माता-पिता आउ गुरुजन के दबाव से बालक करतब-बोध पावऽ हे, उनकर आग्या पालन करके अनुसासित बनऽ हे। ई अनुसासन के परसिच्छन पा के मनुस्य अप्पन बेक्तिगत जीवन में सफलता पा सकऽ हे, नागरिक आउ रास्ट्रीय जीवन में भी सफलता पा सकऽ हे। अइसे तो अनुसासन जीवन के हर छेत्र में अपेच्छित हे, बाकि बिद्यार्थी जीवन ला तो ई सफलता के कुंजी हे।

दुरभाग्यबस आज के बिद्यार्थी अनुसासन तोड़े में ही अप्पन जोग्यता मानऽ हथ। घर, बजार, सभा-समाज, देस-दुनिया कहीं भी बिद्यार्थी के नाम से लोग भय खा

हथ। आज बिद्यार्थी-जीवन अनुसासनहीनता के पर्याय हो गेल हे। बिद्यामंदिर के कोई मर्जादा न हे, सिच्छक-वर्ग के मान न हे, गुरुजन के उपेच्छा होवऽ हे, अप्पन माँग पूरा करावे ला कालेज में तोड़-फोड़ होवऽ हे, परीच्छा के बहिस्कार होवऽ हे, नारी के सम्मान पर अघात पहुँचावल जा हे आउ केतना कहल जाए-का-का न होवऽ हे ? ई सब कारनामा के जिम्मेदार बिद्यार्थी-वर्ग के मानल जा हे। अब डकैती आउ लूट में भी बिद्यार्थी-वर्ग के नाम आ रहल हे।

कहाँ गेल ऊ जमाना, जब माता-पिता के आग्या मान के बालक बनवास गरहन करऽ हलन; एकर कारन घर के प्राथमिक सिच्छा के अभाव हे। माता-पिता बच्चा के सुरू से आरामतलबी आउ सोख बना दे हथ, बिद्यालय में पराचीन गुरु-सिस्य सम्बन्ध न हो सके, काहे कि हुआँ भी चरित्र-निरमान के जगह सिच्छा में बेवसायीकरन के फेरा हे। कुछ फीस के बदला में बिद्यार्थी के पढ़ा देवल जा हे। ई तरह घर से लेके बिद्यालय तक आउ बिद्यालय से लेके महाबिद्यालय तक अनुसासनहीनता के बातावरन हे। बिद्यार्थी सब जगह अइसने माहौल पावऽ हथ, जहाँ उनका रोके-टोकेवाला उनका से डेरा हथ। मनमनता करे के उनका पूरा आजादी हे। बिद्यालय से लेके महाबिद्यालय के पढ़ाई पूरा करइत-करइत ऊ अनुसासनहीनता में एतना पक जा हथ कि उनका बुझाना-समझाना कठिन हो जा हे।

जदि बिद्यार्थी के अनुसासित बना के आदर्स नागरिक बनाना हे, तो अइसन सुभारंभ घर से ही करे पड़त। घर बच्चा ला प्राथमिक पाठसाला हे। माता-पिता अप्पन सदाचरन आउ सीख से बालक में आरंभ से ही उत्तम संस्कार आउ श्रेस्ठ आचरन भरथ। फिर बालक के अइसन बिद्यालय में देथ, जहाँ अनुसासन पर पूरा धेयान देवल जा हे, जहाँ नैतिक आउ चारित्रिक-सिच्छा के स्थान हे, जहाँ सिच्छन-संस्थान के कुप्रबन्ध न हे आउ बिद्यार्थी के एतने दैनिक कार्यभार देल जा हे कि उनका अटर-पटर काम में धेयान देवे के अवकासे न मिलऽ हे। कहे कि मतलब ई हे कि घर से लेके, बिद्यामंदिर के पढ़ाई पूरा करे तक बिद्यार्थी के कार्य-पद्धति पर पूरा नियंत्रन होवे के चाही।

हमनी के सिच्छा-पद्धति में भी परिवर्तन के अपेच्छा हे। सब्भे बिद्यार्थी उच्च सिच्छा के जोग्य न होवऽ हथ। माध्यमिक सिच्छा के छात्र ला, बेवसायिक सिच्छा के बेवस्था होवे के चाही। पढ़ाई समाप्त करके अनेक बिद्यार्थी भटकइत रहऽ हथ,

उनका काम न मिलऽ हे। निरासा में ऊ लोग अनुसासनहीनता के फैलावऽ हथ। ई लेल सरकार आउ सासन के भी जिम्मेदारी हे कि ऊ देस में उद्योग-धंधा के एतने बिस्तार करे कि कोई खाली न बइठे। बिद्यार्थी-काल में ही कुछ छात्र राजनीतिक दलबन्दी में उलझ जा हथ। अइसन राजनीतिक तत्त्व बिद्यार्थी लोग के भड़का के नगर आउ कॉलेज में उपद्रव करा दे हथ। भोला-भाला बिद्यार्थी ई कुचक्र में भावी जीवन के लाभ के लालच में उलझ जा हथ। अगर प्रसासन के तरफ से भावी रोजी-रोजगार के आस्वासन रहे, तो कोई बिद्यार्थी अनुसासनहीनता में उलझ के अप्पन जीवन बरबाद न करतन। सिच्छक लोग के भी दायित्व हे कि सिच्छा के बेवसायीकरन से निकल के बिद्याथी के ठीक-ठीक मार्ग-दरसन करथ। उनका में नैतिक आउ चारित्रिक गुन भरथ।

एतना निस्वित हे कि देस के बिद्यार्थी में बिना अनुसासन भरले देस के कल्यान न हे। अनुसासनहीन बेयक्ति न घर के फायदा दे सकऽ हे, न बेयक्तिक जीवन में सफलता पा सकऽ हे आउ न रास्ट्र के सुजोग्य नागरिक बन सकऽ हे। बिद्यार्थी में अनुसासन भरे ला घर, सिछन-संस्थान आउ परसासन-ई तीनो में सहजोग जरूरी हे। जदि ठीक-ठीक रूप में ई तीनों में सहजोग हो जाए आउर सब्भे मिल के राष्ट्र के भावी नागरिक के निरमान में लग जाथ, तो निस्चय ही देस के कलेयान हो जायत।

भावात्मक निबन्ध

मन के हारे हार हे मन के जीते जीत

मानव जीवन में मन के सक्ति सर्बोपरि हे। ऊ अइसन परेरना-स्रोत हे, जे मनुस्य के कठिन से कठिन संकट में जूझे के सक्ति दे हे। कहल जा हे-भयंकर तूफान बड़ा-बड़ा बिरिछ के तो धरासायी कर दे हे, बाकि परबत ओकरा से हिल न सके, ऊ अपराजित नियर खड़ा रहऽ हे, ओइसहीं सरीर से बलिस्ठ आउ मन से दुरबल आदमी दुःख के आँधी में टूट जा हे। एगो अइसनो आदमी होवऽ हे, जेकर तन जर्जर हे, बाकि ओकर मनोबल ऊँचा हे, तो ऊ सब दुःख आउ कठिनाई झेल जा हे।

ई मानसिक बल के अँगरेजी में will power कहल जा हे। ई इच्छासक्ति या मन अइसन दैबी सक्ति हे, जे मानव के पराजय के छन में, असफलता के घड़ी में मुस्कुराये ला कहऽ हे आउ सब बाधा लाँघ के आगे बढ़े ला कहे हे। ई मनसा लेके आदमी

हँसइत-हँसइत लच्छ पावे के प्रयास करऽ हे आउ अन्त में ओकरा पा भी ले हे! कहल गेल हे- where there is a will, there is a way. अर्थात् जहाँ चाह हे, हुआँ राह हे। ई चाहत मन के बल से पैदा हो हे। अग्यानी तीरथ-तीरथ में भगवान के खोजऽ हथ, बाकि ग्यानी अप्पन मन में प्रभु दरसन कर ले हथ। मन के कोई सीमा, कहल जा सके, ऊ असीम हे, ओकर प्रेरना असीम हे, ओकर सन्देस असीम हे आउ ओकर सक्ति असीम हे।

मानव-सक्ति तीन स्रोत से आवऽ हे-सरीर, मन आउ आत्मा। सरीर के सक्ति संसार के सब मनुस्य में थोड़ा-बहुत अन्तर के साथ लगभग बराबर रहऽ हे। बाकि मानसिक सक्ति हर अदमी में अलग-अलग होवऽ हे। सरीर एगो मसीन हे, ओकरा में खराबी आते रहऽ हे। ओकरा पर अवस्था आउ समय के बहुत असर पडऽ हे। कभी अदमी के कंचन-काया दुनिया के मोहित करऽ हे, अदमी अपने सारीरिक रूप पर गरब करऽ हे, दरपन में अपने मुँह निहार के आनन्दित हो जा हे, बाकि भौतिक तत्त्व के प्रभाव से ओही कंचन-काया सूख जा हे, जर्जर हो जा हे आउ रोग ओकरा हर तरह से असक्त बना दे हे। थकल तन लेके आदमी सोचे लगऽ हे कि-अब न चलत, अब ई चिराग बुझे चाहऽ हे। बाकि ओही घड़ी मन अदमी के बगल में खड़ा होके ओकरा गिरइत तन के थाम ले हे, मन कहऽ हे :

"हारिए न हिम्मत, बिसारिए न राम नाम,
जाहि बिधि राखे राम, ताहि बिधि रहिए॥"

ई बिचार के आवइते मनुस्य के मुरझाल मुख पर मुस्कुराहट फिर जा हे। जर्जर तन में सक्ति के संचार होवे लगऽ हे। गिरल अदमी उठ के खड़ा हो जा हे।

संसार के महापुरुस लोग के जीवन देखल जाए। ऊ भी हाड़ चाम के बनल हलन। उनका पर भी सांसारिक दुःख ब्यापऽ हल बाकि उनकर मनोबल एतने ऊँचा हल कि बड़ा-बड़ा साम्राज्य के सक्ति हिला दे हलन। चानक्य होथ इया चन्द्रगुप्त, गुरुगोविन्द सिंह होवथ इया गुरुनानक, शिवाजी होथ इया महात्मा गाँधी- उनका सामने अनेक कठिनाई हल, बड़ा-बड़ा सक्ति से चुनौती हल। बाकि अप्पन मनोबल से ऊ लोग कल्पनातीत काम कर देलन। उनकर असाधारन मानसिक सक्ति उनकर नाम के देस के इतिहास में स्वर्नाच्छर में अंकित कर देलक।

मन बड़ा हठीला भी हो हे, कभी-कभी बालक नियन मचल भी जा हे, अदमी के भटका भी दे हे आउ कुपथगामी भी बना दे हे । बाकि बिबेक के अंकुस लगैला पर ऊ संभल भी जा हे। कभी-कभी हाथ से सूत्र छूठे भी लगे हे, तब अदमी पर निरासा हावी होवे लगऽ हे, ऊ सोचे लगऽ हे कि अब न बनत । फिर अपने अन्तर से मन के आवाज होवऽ हे- ''हिम्मत न हारऽ, बढ़इत चलऽ, बिजय के पाठ समझऽ''-तब अदमी के मरल चेतना सुगबुगाय लगऽ हे। सुबिचार, उद्योग आउ सुबिबेक से ऊ उठ के नया जोस के साथ आगे बढ़े लगऽ हे।

अदमी के इच्छासक्ति जेतने बलवती होयत, ओकर मानसिक बल भी ओतने प्रबल होयत। बलवती इच्छासक्ति अदमी के मन में दृढ़ संकल्प भर दे हे। जिनका में अइसन महान इच्छासक्ति होवऽ हे, उनके सामने संसार नतमस्तक हो जा हे। महात्मा गाँधी सरीर से बलिस्ठ न हलन, बाकि उनकर प्रबल इच्छासक्ति उनका अइसन दैबी सक्ति देलक हल कि ओकरा सामने अंगरेज के सक्तिसाली साम्राज्य के नींव भी डोल गेल हल । कोई बेवधान, कोई बिघिन उनका हरा न सकल। अप्पन दृढ़ संकल्प सक्ति लेके रास्ट्र के अइसन पथ-परदसन करलन कि अंगरेज के भारत छोड़े पड़ल। अदमी तो सब बराबर होवऽ हे। बाकि ओकरे में साधारन आउ महान् बेक्ति के फरकावे पड़ऽ हे। साधारन अदमी बिपत्ति देख के बेयाकुल हो उठऽ हे आउ ओकरा आगे घुटना टेक दे हे, हार मान ले हे। महान आउ असाधारन अदमी बिपरीत परिस्थिति पर अप्पन दृढ़ संकल्प सक्ति से बिजय पा ले हे। अइसन अदमी मानवता के आदर्स बन जा हे। दुनिया उनका से परेरना गरहन करऽ हे।

आसा मन के परेरनास्रोत हे। निरासा से हिम्मत टूट जा हे। बाकि आसावान बेक्ति भयंकर झंझावात में भी धरासायी न होय। आसा के सहारे आदमी भारी बहादुरी के काम कर गुजरऽ हे। आसा कर्म के प्रेरकसक्ति हे। ई संसार में सुख आउ दुःख दुन्नो से अदमी के निपटे पड़ऽ हे, लाभ-हानि सहचर हो हे, उत्कर्ष-अपकर्ष दुन्नो के झेले पड़े हे। बाकि श्रेष्ठ अदमी ओही हे, जे सुख, लाभ आउ उत्कर्स में गर्बीला न होय आउ दुःख, हानि आउ अपकर्स में हिम्मत न हारे। बुद्धिमान अदमी ओही हे जे सृस्टि के ई सत्य के स्वीकार करइत, आसा के पल्ला न छोड़े। कहल गेल हे-''बिरिछ कटे के बाद फिर बढ़े लगऽ हे, छीन भेल चन्दरमा फिन पूरा होवे लगऽ हे, एही तरह बिचार करके बुद्धिमान अदमी, कभी बिपत्ति से दुःखी न होय।'' आउ भी कहल गेल

हे–"चक्रवत् परिवर्तन्ते सुखानि च दुःखानि च।" अर्थात् ई परिवरतनसील संसार में सुख आउ दुःख चक्र नियन घूमइत रहऽ हे।

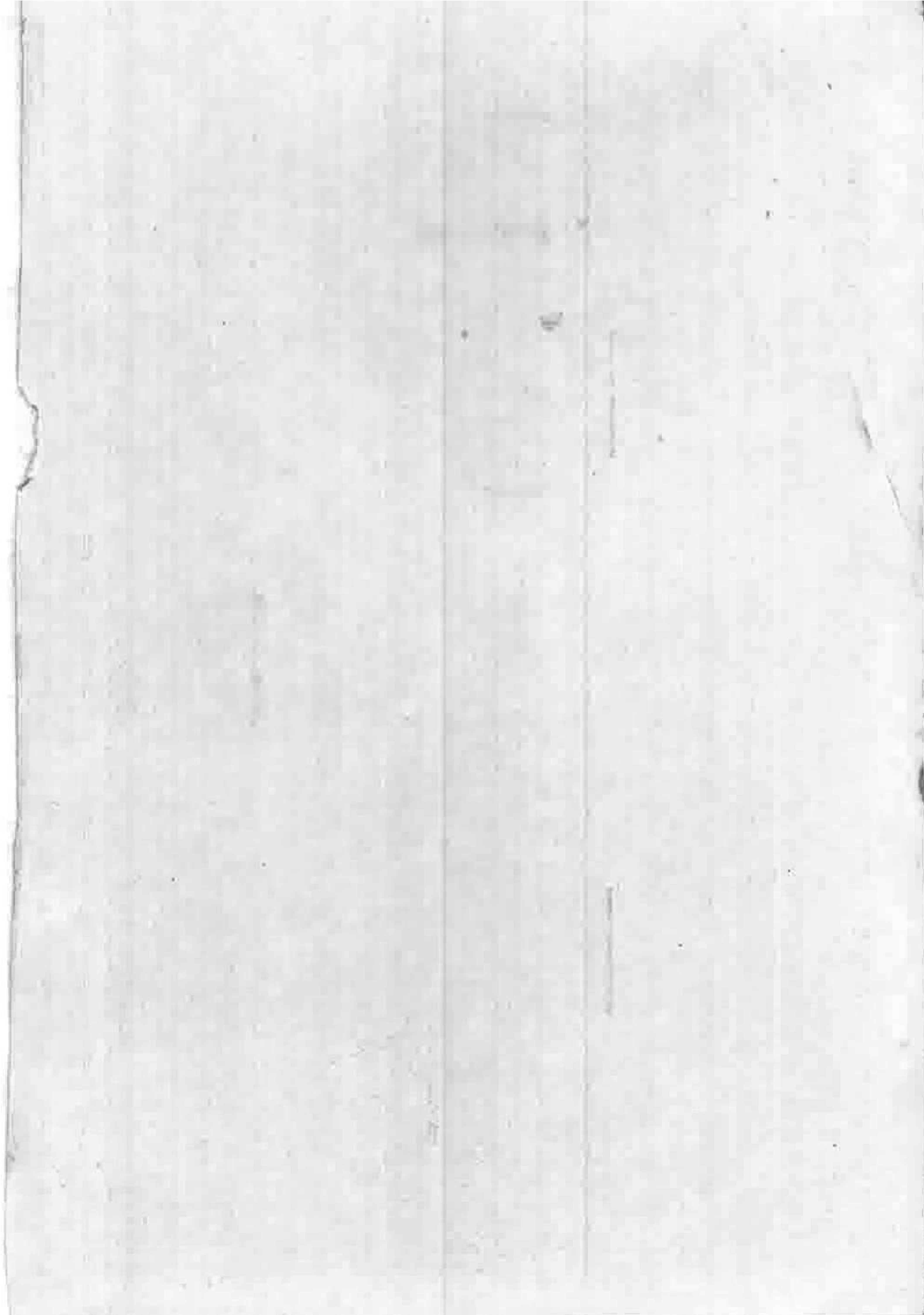
दुःख में जउन अदमी आसा के सूत्र पकड़ले रहे हे, ओकरा में जूझे के हिम्मत बनल रहे हे। हिम्मत बनल रहे से अदमी कर्म से पीछे न हटे हे । कर्म से न पिछड़त तो दुःख आउ पराजय के काल अपन समय पूरा के समाप्त हो जायत। फिर तो मंगलमय प्रभाव जीवन में उदय अवस्य होयत ।

कहे कि अभिप्राय ई हे कि मानव जीवन में सफलता ला मानसिक सक्ति आवस्यक हे। दृढ़ इच्छासक्ति आउ प्रबल संकल्प सक्ति मानसिक बल के बृद्धि करे हे। कठिन से कठिन परिस्थिति में आदमी के हिम्मत बना के रखे के चाही। आसा अदमी में जीवन-जुद्ध के प्रेरना भरे हे। जौन असफलता आउ बिसम परिस्थिति के छन में आसा, कर्मठता, संघर्ससक्ति के सहारे आगे बढ़इत जायत, ओकरा बिजय अवस्य मिलत। ई सबके मूल में हे-अदमी के मनोबल। ओही ओकर जीवन में सफलता के कुंजी हे। मन के जीत से अदमी लोकोत्तर सक्ति प्राप्त कर ले हे।



संदर्भ गंन्थ

1. मगही भाषा के बेआकरन, राजेन्द्र कुमार यौधेय
2. मगही व्याकरण आउ रचना, डॉ० सम्पति अर्याणी
3. मगही व्याकरण कोश, डॉ० सम्पति अर्याणी
4. मगही व्याकरण, राजेश्वरी प्रसाद सिन्हा 'अंशुल'
5. मगही, वर्त्तनी, डॉ० सरयू प्रसाद
6. मगही भाषा, डॉ० युगेश्वर
7. मगही के मानक रूप, डॉ० राम प्रसाद सिंह
8. मगही काव्यांग विवेचन, प्रो० लक्ष्मीचन्द्र प्रियदर्शी
   प्रकाशक: भारती प्रकाशन नालन्दा-नवादा (बिहार)
9. मगही कहाउत संग्रह, डॉ० उमाशंकर भट्टाचार्य, मागध शुभंकर प्रेस गया, जून 1919
10. मगही लोक साहित्य, डॉ० सम्पत्ति अर्याणी
11. मगही कहावत सागर, प्रो० रामनाथ शर्मा, इन्द्रायण, अमहरा (पटना) 801118
12. मगही कहावतों का विश्लेषणात्मक अध्ययन, डॉ० जगदीश प्रसाद
13. मगही कहावतों का समाज शास्त्रीय अनुशीलन, डॉ० रामानुग्रह शर्मा
14. मगही मुहावरा आउ बुझौवल, जयनाथ पति
15. लोकमानस और लोकतत्व, डॉ० रामप्रसाद सिंह
16. मगही साहित्य का इतिहास, सं० डॉ० रामप्रसाद सिंह
17. मगही साहित्य का इतिहास, डॉ० सत्येन्द्र कुमार सिंह
18. हिन्दी साहित्य का बृहत् इतिहास-भाग-16, सं० राहुल सांकृत्यायन आउ डॉ० कृष्ण देव उपाध्याय ।





बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, बुद्ध मार्ग, पटना
BIHAR STATE TEXTBOOK PUBLISHING CORPORATION LTD., BUDH MARG, PATNA
मुद्रक:- अग्रवाल इंटरप्राईजेज, मीठापुर, पटना-1